

विदेह VIDEHA

विदेह-सदेह १-३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1-37 Detailed Study

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड १२ / २२ · Volume 12 of 22

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह-सदेह १६ — विस्तृत अध्ययन	१०० प्रश्न
२. विदेह-सदेह १७ — विस्तृत अध्ययन	१०७८ प्रश्न
३. विदेह-सदेह १८ — विस्तृत अध्ययन	१०८३ प्रश्न
४. विदेह-सदेह १९ — विस्तृत अध्ययन	२३२ प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह-सदेह १६ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड 5290 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: व्यायाम आवश्यक

१. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
 - (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
 - (B) केवल क्रमांक-सूची
 - (C) बाहरी सजावट
 - (D) असम्बद्ध सूचना
२. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
 - (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
 - (B) कागजक आकार
 - (C) सिरिफ तिथि
 - (D) प्रचारात्मक वाक्य
३. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक'कें बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
 - (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
 - (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
 - (C) स्रोत-बाह्य घटना
 - (D) यादृच्छिक अनुमान
४. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
 - (A) शीर्षक स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। दिस संकेत करैत अछि
 - (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
 - (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
 - (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि
५. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
 - (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
 - (B) सूचीगणना मात्र
 - (C) असम्बद्ध हास्य
 - (D) बाहरी विज्ञापन
६. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक'क गलत पठन कोन होएत?
 - (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
 - (B) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
 - (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
 - (D) अर्थाधारित पठन करब
७. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
 - (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।
 - (B) निजी लाभक हिसाब
 - (C) सैनिक आदेश
 - (D) खेलक परिणाम
८. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
 - (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
 - (B) क्रमांकक गिनती पूछब
 - (C) कागजक आकार पूछब
 - (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक'मे बाल-कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) बाल-कथाक रूप स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०. 'देवीजी: व्यायाम आवश्यक' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5291 : विदेह-सदेह 16 — विद्यानन्द झा पञ्जीकार — पञ्जी प्रबंध (आगाँ): दम सँ १६म छठि

११. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): दम सँ १६म छठि'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): दम सँ १६म छठि'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१३. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): दम सँ १६म छठि'केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१४. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): दम सँ १६म छठि'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): दम सँ १६म छठि'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): दम सँ १६म छठि'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१८. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१९. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि'मे शोध-लेखक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-लेखक रूप मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

२०. 'पञ्जी प्रबंध (आगाँ): ६म सँ १६म छठि' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोठ छठि। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5292 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)

२१. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

२२. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

२३. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)'केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

२४. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

२५. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)' में पाठक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

२६. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

२७. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)' में सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

२८. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

२९. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)' में शोध-लेखक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-लेखक रूप राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

३०. 'लक्ष्मीधर (कृत्यकल्पतरु)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ राजा जनताक ट्रस्टी; कानून-व्यवस्था। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5293 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)

३१. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

३२. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)' में कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

३३. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)'कें भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

३४. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

३५. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

३६. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

३७. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

३८. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

३९. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)'मे भाषाक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) भाषाक रूप राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४०. 'रचना लेखन: ज्योतिरीश्वर शब्दावली (आगाँ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकें राजकीय-प्रशासनिक पद-सूची। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5294 : विदेह-सदेह 16 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)

४१. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
- (A) लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।
(B) केवल क्रमांक-सूची
(C) बाहरी सजावट
(D) असम्बद्ध सूचना
४२. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
- (A) लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।
(B) कागजक आकार
(C) सिरिफ तिथि
(D) प्रचारात्मक वाक्य
४३. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'कें भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
- (A) लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।
(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
(C) स्रोत-बाह्य घटना
(D) यादृच्छिक अनुमान
४४. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
- (A) शीर्षक लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। दिस संकेत करैत अछि
(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि
४५. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
- (A) लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।
(B) सूचीगणना मात्र
(C) असम्बद्ध हास्य
(D) बाहरी विज्ञापन
४६. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'क गलत पठन कोन होएत?
- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
(B) लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।
(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
(D) अर्थाधारित पठन करब
४७. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
- (A) लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।
(B) निजी लाभक हिसाब
(C) सैनिक आदेश
(D) खेलक परिणाम
४८. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
- (A) लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
(B) क्रमांकक गिनती पूछब
(C) कागजक आकार पूछब
(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४९. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'मे भाषाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) भाषाक रूप लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५०. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ लिखल-बाजलक मानकीकरण; विभक्ति-चिह्न। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5295 : विदेह-सदेह 16 — सम्पादकीय — Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)

५१. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

५२. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

५३. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'केँ ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

५४. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५५. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

५६. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

५७. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

५८. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५९. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)' मे ऐतिहासिकक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) ऐतिहासिकक रूप तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६०. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (मुस्लिम शासन-काल)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ तुगलक-कालीन मिथिला; ओइनवार वंश। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5296 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)

६१. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६२. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६३. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)' केँ अनुवाद रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६४. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगाँ)' क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६५. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगों)' मे पाठक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६६. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगों)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६७. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगों)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६८. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगों)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६९. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगों)' मे अनुवादक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) अनुवादक रूप नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७०. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद आगों)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ नन्दक प्रारम्भिक जीवन-संघर्षक अंग्रेजी रूप। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5297 : विदेह-सदेह 16 — सम्पादकीय — Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)

७१. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७२. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७३. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' के सूची रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७४. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७५. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७६. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७७. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७८. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७९. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' मे सूचीक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) सूचीक रूप मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८०. 'Year 2008-09 Festivals of Mithila (सम्पूर्ण कैलेंडर)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मकर संक्रान्तिसँ आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा धरि। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5298 : विदेह-सदेह 16 — अजय ठाकुर — Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)

८१. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?
- (A) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
(B) केवल क्रमांक-सूची
(C) बाहरी सजावट
(D) असम्बद्ध सूचना
८२. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
- (A) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
(B) कागजक आकार
(C) सिरिफ तिथि
(D) प्रचारात्मक वाक्य
८३. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)'कें ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
- (A) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
(C) स्रोत-बाह्य घटना
(D) यादृच्छिक अनुमान
८४. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
- (A) शीर्षक परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। दिस संकेत करैत अछि
(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि
८५. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
- (A) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
(B) सूचीगणना मात्र
(C) असम्बद्ध हास्य
(D) बाहरी विज्ञापन
८६. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)'क गलत पठन कोन होएत?
- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
(B) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
(D) अर्थाधारित पठन करब
८७. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
- (A) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।
(B) निजी लाभक हिसाब
(C) सैनिक आदेश
(D) खेलक परिणाम
८८. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
- (A) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
(B) क्रमांकक गिनती पूछब
(C) कागजक आकार पूछब
(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८९. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)' मे ऐतिहासिक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) ऐतिहासिक रूप परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनेत अछि

९०. 'Goa and Maithils (गोवा आ मैथिल)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5299 : विदेह-सदेह 16 — ज्योति झा चौधरी — The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)

९१. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९२. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९३. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' केँ अनुवाद रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९४. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९५. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९६. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९७. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' में सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९८. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९९. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' में अनुवादक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) अनुवादक रूप नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१००. 'The Comet (Sahasrabadhani अंग्रेजी अनुवाद समाप्ति)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय १ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। सँ जोड़ैत अछि।
२. (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
३. (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। धरि सीमित रहैत अछि।
४. (A) शीर्षक स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
५. (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। सँ बनैत अछि।
६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
७. (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
८. (A) स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
९. (A) बाल-कथाक रूप स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१०. (A) उत्तरकेँ स्वास्थ्य आ व्यायामक महत्त्व पर कथा। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
११. (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। सँ जोड़ैत अछि।
१२. (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१३. (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। धरि सीमित रहैत अछि।
१४. (A) शीर्षक मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१५. (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। सँ बनैत अछि।
१६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१७. (A) मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मातामह-प्रपितामह पक्षसँ सोलह गोट छठि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

८४. (A) शीर्षक परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
८५. (A) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। सँ बनैत अछि।
८६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
८७. (A) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
८८. (A) परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
८९. (A) ऐतिहासिकक रूप परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
९०. (A) उत्तरकेँ परशुराम द्वारा मिथिलासँ गोवा प्रवास। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
९१. (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। सँ जोड़ैत अछि।
९२. (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
९३. (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। धरि सीमित रहैत अछि।
९४. (A) शीर्षक नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
९५. (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। सँ बनैत अछि।
९६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
९७. (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
९८. (A) नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
९९. (A) अनुवादक रूप नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१००. (A) उत्तरकेँ नन्दक शिक्षा-दीक्षासँ विवाह धरि। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

अध्याय २ : विदेह-सदेह १७ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड २३ : विदेह-सदेह १७ — अरविन्द ठाकुर आ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

१. अरविन्द ठाकुरक जन्म कहिया भेल, समीक्षा अनुसार?
 - (A) १९५४
 - (B) १९६४
 - (C) १९४४
 - (D) कोनो नहि
२. अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष की कहल गेल?
 - (A) राजनैतिक-आर्थिक लघुकथा
 - (B) केवल हास्य
 - (C) केवल प्रेम-कथा
 - (D) कोनो नहि
३. 'अन्हारक विरोध मे' टाइटल-कथामे अलीमुद्दीन किएक लज्जित होइत छथि?
 - (A) अपन टोलमे हिन्दू यारक भाइकेँ मारल जेबापर
 - (B) केवल कारणहीन
 - (C) धन-हानिपर
 - (D) कोनो नहि
४. 'ढाँचा-१९९२' लघुकथा कोन शैलीमे लिखल गेल?
 - (A) पत्र-शैली
 - (B) नाट्य-शैली
 - (C) कविता-शैली
 - (D) कोनो नहि
५. 'मूस' लघुकथामे कोन देवताक वाहनक उल्लेख अछि?
 - (A) गणपति (गणेश)क वाहन
 - (B) शिवक वाहन
 - (C) विष्णुक वाहन
 - (D) कोनो नहि
६. 'प्रजातंत्र परिकथा' लघुकथामे एकटा डॉक्टरक हत्या किएक नहि छपलक?
 - (A) ओ गरीबक डॉक्टर छल, बड्ड मामूली फीस लैत छल
 - (B) ओ प्रसिद्ध छल
 - (C) कोनो कारण नहि
 - (D) कोनो नहि
७. 'अथ गिरगिट कथा' मे गिरगिट किएक 'लजा जाइत अछि'?
 - (A) जखन मनुक्ख रंग बदलैत अछि, गिरगिटसँ बेशी
 - (B) गिरगिट कहियो नहि लजाइत
 - (C) कोनो कारण नहि
 - (D) कोनो नहि
८. 'विष-पान' लघुकथा कोन प्रणालीक विश्लेषण करैत अछि?
 - (A) न्यायपालिकाक क्रिया-प्रक्रिया (कचहरी)
 - (B) शिक्षा प्रणाली
 - (C) स्वास्थ्य प्रणाली
 - (D) कोनो नहि

९. विदेह-सदेह १७ क सम्पादकीयमे काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क कोन कृतिपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार उल्लिखित अछि?

- (A) राधाविरह (महाकाव्य)
- (B) सहस्रबाढ़नि
- (C) भाग रौ
- (D) कोनो नहि

१०. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जीवन-काल की छल?

- (A) १९०६-१९८७
- (B) १९१०-१९९०
- (C) १९२०-२०००
- (D) कोनो नहि

खण्ड ४० : विदेह-सदेह १७ — अरविन्द ठाकुरक कथा-समीक्षा (विस्तार)

११. अरविन्द ठाकुरक प्रथम काव्य-संग्रहक नाम की?

- (A) परती टूटि रहल अछि
- (B) अन्हारक विरोध मे
- (C) कतेक डारिपर
- (D) कोनो नहि

१२. समीक्षित संग्रहक पहिल कथाक नाम की?

- (A) खिस्सा सियार यार
- (B) अन्हारक विरोध मे
- (C) ढाँचा १९९२
- (D) कोनो नहि

१३. 'पिआसल पानि' कथामे कुल कतेक पात्र छथि, समीक्षा अनुसार?

- (A) तीन गोटा
- (B) पाँच गोटा
- (C) दस गोटा
- (D) कोनो नहि

१४. 'नारायणपुरवाली' कथाक केन्द्रीय पात्रक संग की दुर्भाग्य घटैत अछि?

- (A) पतिक नपुंसकताक कारणे सामाजिक कलंक आ गिरहथी करबाक बाध्यता
- (B) धन-हानि
- (C) विदेश-यात्रा
- (D) कोनो नहि

१५. समीक्षक अनुसार 'मूस' आ 'अय्यासी' कथाक क्रम-व्यवस्थामे की सुझाव देल गेल?

- (A) 'अय्यासी'केँ 'मूस'सँ पहिने राखब बेसी उपयुक्त होइत
- (B) कोनो परिवर्तन आवश्यक नहि
- (C) क्रम ठीक अछि
- (D) कोनो नहि

१६. 'ढाँचा १९९२' कथाक विषय की?

- (A) राष्ट्र, उपराष्ट्रवादक पीड़ा आ साम्प्रदायिक उन्माद
- (B) केवल प्रेम
- (C) केवल हास्य
- (D) कोनो नहि

१७. समीक्षक अनुसार 'ढाँचा' आ 'अन्हारक विरोध मे' कथा दुनूमे की समानता अछि?

- (A) स्थिति प्रायः समान, मुदा समाधानक शैली भिन्न
- (B) कोनो समानता नहि
- (C) दुनू एके कथा
- (D) कोनो नहि

१८. स्व. प्रभाष कुमार चौधरीक रचनाक नाम की, जे समीक्षामे उल्लिखित अछि?

- (A) अप्पन लोक
- (B) परती टूटि रहल अछि
- (C) खिस्सा सियार यार
- (D) कोनो नहि

खण्ड 2724 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर: अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय

१९. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) सम्पादकीय/आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व

२३. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ सम्पादकीय/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415मे गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2725 : विदेह-सदेह 17 — ओम प्रकाश झा: काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल

२९. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मधुपक गजल-यात्रा

३३. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मधुपक गजल-यात्रा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416मे ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मधुपक गजल-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2726 : विदेह-सदेह 17 — ओम प्रकाश झा: बहुरूपिया रचनामे

३९. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बहुरूपिया रचनामे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण

४३. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417मे ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2727 : विदेह-सदेह 17 — आशीष चमन: अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर

४९. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश

५३. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष चमन, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418मे आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2728 : विदेह-सदेह 17 — डा. योगानन्द झा: अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि

५९. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख

६३. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419मे डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2729 : विदेह-सदेह 17 — जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल': अरविन्दजीक आजाद गजल

६९. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरविन्दजीक आजाद गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन

७३. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420मे जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2730 : विदेह-सदेह 17 — योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’: अन्हारक रखवार

७९. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अन्हारक रखवार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "अन्हारक रखवार" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार

८३. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "अन्हारक रखवार" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "अन्हारक रखवार"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "अन्हारक रखवार" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "अन्हारक रखवार"कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८७. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "अन्हारक रखवार" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "अन्हारक रखवार" प्रविष्टि गद्य, आलेख आ "अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2731 : विदेह-सदेह 17 — योगेन्द्र पाठक 'वियोगी': 'एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता

८९. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन

९३. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९७. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठत्रीक प्रासंगिकता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2732 : विदेह-सदेह 17 — योगेन्द्र पाठक 'वियोगी': जमाना जमानाक स्टाइल

९९. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “जमाना जमानाक स्टाइल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जमाना जमानाक स्टाइल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “जमाना जमानाक स्टाइल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “जमाना जमानाक स्टाइल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “जमाना जमानाक स्टाइल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण

१०३. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "जमाना जमानाक स्टाइल" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "जमाना जमानाक स्टाइल"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "जमाना जमानाक स्टाइल" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "जमाना जमानाक स्टाइल"कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०७. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "जमाना जमानाक स्टाइल" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "जमाना जमानाक स्टाइल" प्रविष्टि गद्य, आलेख आ "बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2733 : विदेह-सदेह 17 — योगेन्द्र पाठक 'वियोगी': उचित जगह

१०९. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "उचित जगह" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) उचित जगह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "उचित जगह"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "उचित जगह"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "उचित जगह" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन

११३. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "उचित जगह" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "उचित जगह"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "उचित जगह" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "उचित जगह"कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११७. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "उचित जगह" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “उचित जगह” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2734 : विदेह-सदेह 17 — चंद्र मोहन झा 'पडवा': अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज

११९. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका

१२३. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चंद्र मोहन झा 'पडवा', विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२७. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425मे चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “पत्रकारिता आ साहित्यक सन्दर्भमे हुनक भूमिका” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2735 : विदेह-सदेह 17 — डॉ. श्रीमोहन झा: मिशिलाक इतिहास

१२९. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मिशिलाक इतिहास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन

१३३. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. श्रीमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३७. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426मे डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2736 : विदेह-सदेह 17 — डा. शिवकुमार प्रसाद: बनमानुष

१३९. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बनमानुष
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) यथार्थवादी कथा

१४३. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) यथार्थवादी कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४७. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427मे डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2737 : विदेह-सदेह 17 — डा. शिवकुमार प्रसाद: जमीला

१४९. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जमीला
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्त्री-जीवन

१५३. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्त्री-जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५७. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428मे डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “स्त्री-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2738 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: अंबर (संस्मरण)

१५९. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अंबर (संस्मरण)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आत्मकथात्मक

१६३. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आत्मकथात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६७. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429मे प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2739 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: तेसर प्रण (संस्मरण)

१६९. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) तेसर प्रण (संस्मरण)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जीवन-दर्शन

१७३. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जीवन-दर्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७७. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430मे प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2740 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: अपन अपन धर्म (संस्मरण)

१७९. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अपन अपन धर्म (संस्मरण)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) धर्म-दर्शन

१८३. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) धर्म-दर्शन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८७. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431मे प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “धर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2741 : विदेह-सदेह 17 — नन्द विलास राय: दिव्या

१८९. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दिव्या
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

१९३. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९७. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432मे नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2742 : विदेह-सदेह 17 — नन्द विलास राय: सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट

१९९. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यंग्य

२०३. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०७. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433मे नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2743 : विदेह-सदेह 17 — अब्दुर रज्जाक: गामक चौबटिया पर

२०९. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गामक चौबटिया पर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण जीवन

२१३. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१७. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434मे अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2744 : विदेह-सदेह 17 — अब्दुर रज्जाक: सैदी परल अछि

२१९. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सैदी परल अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण परिवेश

२२३. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण परिवेश
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि”क विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२७. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435मे अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ग्रामीण परिवेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2745 : विदेह-सदेह 17 — विन्देश्वर ठाकुर: बेलहाबालीके जितिया

२२९. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकुरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बेलहाबालीके जितिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकुरक “बेलहाबालीके जितिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकुरक “बेलहाबालीके जितिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकुरक “बेलहाबालीके जितिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नेपाल

२३३. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नेपाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३७. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436मे विन्देश्वर ठाकूरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2746 : विदेह-सदेह 17 — विन्देश्वर ठाकूर: आसे आसमे जिन्गी

२३९. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आसे आसमे जिन्गी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी जीवनक आशा-निराशा

२४३. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी जीवनक आशा-निराशा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४७. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिन्गी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437मे विन्देश्वर ठाकुरक “आसे आसमे जिन्गी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी जीवनक आशा-निराशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2747 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल: डरक नदी

२४९. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डरक नदी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति

२५३. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५७. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438मे राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2748 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल: पंचैती (लघु पटकथा)

२५९. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पंचैती (लघु पटकथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पटकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण पंचायत व्यवस्था

२६३. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण पंचायत व्यवस्था
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पटकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पटकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६७. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439मे राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टि गद्य, पटकथा आ “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2749 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल: लाज (एकांकी)

२६९. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लाज (एकांकी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एकांकी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नाट्य-विधा

२७३. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नाट्य-विधा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७७. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440मे राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, एकांकी आ “नाट्य-विधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2750 : विदेह-सदेह 17 — डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”: गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा

२७९. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा

२८३. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८७. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441मे डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2751 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल ‘रमण’: दियादी डाह

२८९. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दियादी डाह
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक सम्बन्ध

२९३. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल 'रमण'क "दियादी डाह" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल 'रमण'क "दियादी डाह"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल 'रमण', विधा गद्य, उप-विधा कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल 'रमण'क "दियादी डाह" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल 'रमण'क "दियादी डाह"कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९७. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: राजदेव मण्डल 'रमण'क "दियादी डाह" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442मे राजदेव मण्डल 'रमण'क "दियादी डाह" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "पारिवारिक सम्बन्ध" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2752 : विदेह-सदेह 17 — राजेन्द्र कुमार प्रधान: जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना

२९९. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक "जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास-समीक्षा

३०३. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास-समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०७. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “उपन्यास-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2753 : विदेह-सदेह 17 — राजेन्द्र कुमार प्रधान: २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना

३०९. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) शोध-आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मैथिली उपन्यास

३१३. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मैथिली उपन्यास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१७. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली उपन्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2754 : विदेह-सदेह 17 — पंकज कुमार प्रभाकर: समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी

३१९. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उपन्यास-समीक्षा

३२३. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उपन्यास-समीक्षा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२४. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पंकज कुमार प्रभाकर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२७. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445मे पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्बाहक :: अद्विगनी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2755 : विदेह-सदेह 17 — पल्लवी: चोरविद्या

३२९. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चोरविद्या
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यंग्य

३३३. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यंग्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३४. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पल्लवी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३७. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446मे पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2756 : विदेह-सदेह 17 — पल्लवी: प्रेण्ड

३३९. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रेण्ड
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक सम्बन्ध

३४३. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक सम्बन्ध
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पल्लवी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनेत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४७. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447मे पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2757 : विदेह-सदेह 17 — पूनम मण्डल: रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल

३४९. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण

३५३. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५७. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448मे पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2758 : विदेह-सदेह 17 — मुन्नाजी: जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप

३५९. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि

३६३. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६७. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449मे मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2759 : विदेह-सदेह 17 — मुन्नाजी: परती टूटि गेले

३६९. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) परती टूटि गेले
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघुकथा/आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक विसंगति

३७३. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक विसंगति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले”क विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघुकथा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७७. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450मे मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/आलेख आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2760 : विदेह-सदेह 17 — मुन्नाजी: अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन

३७९. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) साक्षात्कार
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत

३८३. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८७. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451मे मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2761 : विदेह-सदेह 17 — चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर': अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

३८९. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पत्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक पत्राचार

३९३. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक पत्राचार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९४. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', विधा गद्य, उप-विधा पत्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क "अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र"क विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९७. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क "अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र" प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452मे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क "अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र" प्रविष्टि गद्य, पत्र आ "साहित्यिक पत्राचार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2762 : विदेह-सदेह 17 — नारायण जी: अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

३९९. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक "अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक "अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक "अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पत्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक "अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक पत्र

४०३. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक पत्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०४. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नारायण जी, विधा गद्य, उप-विधा पत्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०७. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453मे नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्यिक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2763 : विदेह-सदेह 17 — प्रमोद कुमार झा: अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र

४०९. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पत्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य-मित्रता

४१३. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य-मित्रता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१४. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रमोद कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा पत्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र”केँ विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१७. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकुरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454मे प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकुरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्य-मित्रता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2764 : विदेह-सदेह 17 — शैलेन्द्र आनन्द: हाली-हाली बहुधु कोसी

४१९. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हाली-हाली बहुधु कोसी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कोसी क्षेत्रक जन-जीवन

४२३. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कोसी क्षेत्रक जन-जीवन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२४. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक शैलेन्द्र आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२७. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455मे शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “कोसी क्षेत्रक जन-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2765 : विदेह-सदेह 17 — मिशिलेश कुमार राय: अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व

४२९. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण

४३३. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३४. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मिशिलेश कुमार राय, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३७. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३८. खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456मे मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2766 : विदेह-सदेह 17 — अजित आजाद: अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम

४३९. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार

४४३. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४४. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अजित आजाद, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४५. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम”कें विदेह-सदेह 17क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४७. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४८. खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457मे अजित आजादक “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2767 : विदेह-सदेह 17 — विजयनाथ झा: नव वर्षक एहि मधुर पहरमे

४४९. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नव वर्षक एहि मधुर पहरमे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५०. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५१. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नववर्ष-स्वागत

४५३. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नववर्ष-स्वागत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५४. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५५. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५७. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५८. खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458मे विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नववर्ष-स्वागत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2768 : विदेह-सदेह 17 — विजयनाथ झा: हमर नाम परिचय सादर सुरत हम

४५९. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हमर नाम परिचय सादर सुरत हम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६०. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) परिचयात्मक

४६३. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) परिचयात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६४. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६७. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६८. खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459मे विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिचयात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2769 : विदेह-सदेह 17 — विजयनाथ झा: चेतना केर नव सृजनमे

४६९. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चेतना केर नव सृजनमे
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७०. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) चेतना आ सृजन

४७३. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) चेतना आ सृजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७४. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७७. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७८. खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460मे विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चेतना आ सृजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2770 : विदेह-सदेह 17 — रमेश: महा-विस्फोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)

४७९. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्फोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) महा-विस्फोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८०. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) दीर्घ गद्य कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रयोगात्मक

४८३. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रयोगात्मक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८४. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा दीर्घ गद्य कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८५. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्पोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ दीर्घ गद्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८७. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: रमेशक “महा-विस्फोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८८. खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461मे रमेशक “महा-विस्फोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टि पद्य, दीर्घ गद्य कविता आ “प्रयोगात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2771 : विदेह-सदेह 17 — सुकोसुत शिशिर: मोन विकल

४८९. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मोन विकल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९०. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आत्म-विमर्श

४९३. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आत्म-विमर्श
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९४. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९५. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९७. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९८. खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462मे सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2772 : विदेह-सदेह 17 — सुकोसुत शिशिर: पडिकल जम

४९९. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पडिकल जम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५००. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम

५०३. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०४. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम”केँ विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०७. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०८. खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463मे सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2773 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ

५०९. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१०. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मिथिला-चेतना

५१३. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मिथिला-चेतना
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१४. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ”क विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१७. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१८. खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464मे प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2774 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: अकांड तांडव

५१९. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अकांड तांडव
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२०. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२१. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रलय-चित्रण

५२३. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रलय-चित्रण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२४. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२७. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२८. खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465मे प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रलय-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2775 : विदेह-सदेह 17 — प्रणव झा: बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)

५२९. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३०. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३१. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल-मनोरंजन

५३३. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल-मनोरंजन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३४. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३७. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३८. खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466मे प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2776 : विदेह-सदेह 17 — राजदेव मण्डल ‘रमण’: जुरमाना करेए...

५३९. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जुरमाना करेए...
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४०. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल 'रमण'क "जुरमाना करेए..." पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) व्यंग्य
५४३. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल 'रमण'क "जुरमाना करेए..." प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?
- (A) व्यंग्य
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
५४४. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल 'रमण'क "जुरमाना करेए..."क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) लेखक राजदेव मण्डल 'रमण', विधा पद्य, उप-विधा कविता
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
५४५. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल 'रमण'क "जुरमाना करेए..." रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
५४६. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल 'रमण'क "जुरमाना करेए..."कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
 (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।
५४७. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: राजदेव मण्डल 'रमण'क "जुरमाना करेए..." प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?
- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
 (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
५४८. खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467: एहि खण्डक सार की अछि?
- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
 (B) खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467मे राजदेव मण्डल 'रमण'क "जुरमाना करेए..." प्रविष्टि पद्य, कविता आ "व्यंग्य" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
 (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
 (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2777 : विदेह-सदेह 17 — किशन कारीगर: गजल सन किछु

५४९. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल सन किछु
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५०. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) शृंगार

५५३. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) शृंगार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५४. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५७. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५८. खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468मे किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2778 : विदेह-सदेह 17 — अशरफ राईन: गजल

५५९. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६०. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६१. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नेपाल

५६३. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नेपाल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६४. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अशरफ राईन, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६५. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६७. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६८. खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469मे अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2779 : विदेह-सदेह 17 — डॉ. उमा शंकर चौधरी: दू आखर

५६९. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दू आखर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७०. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७१. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघु कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) भाव-संक्षेप

५७३. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) भाव-संक्षेप
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७४. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. उमा शंकर चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा लघु कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७७. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७८. खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470मे डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टि पद्य, लघु कविता आ “भाव-संक्षेप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2780 : विदेह-सदेह 17 — चित्रा अंशु: अस्तित्वकें चिन्हू

५७९. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अस्तित्वकें चिन्हू
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८०. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नारी स्वर

५८३. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नारी स्वर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८४. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक चित्रा अंशु, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८७. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८८. खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471मे चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्हू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2781 : विदेह-सदेह 17 — बीणा प्रसाद: निर्मलीक गीत

५८९. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) निर्मलीक गीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९०. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोक-गीत

५९३. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोक-गीत
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९४. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बीणा प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९७. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९८. खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472मे बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोक-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2782 : विदेह-सदेह 17 — राम विलास साहू: किछु तानका (बहुते)

५९९. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु तानका (बहुते)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६००. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०१. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) तानका
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रकृति

६०३. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रकृति
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०४. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम विलास साहू, विधा पद्य, उप-विधा तानका
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०५. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)”कें विदेह-सदेह 17क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ तानकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०७. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 17क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०८. खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473मे राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, तानका आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 5300 : विदेह-सदेह 17 — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर — विदेह प्रवेशिका (अंक १७)

६०९. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६१०. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६११. ‘विदेह प्रवेशिका (अंक १७)’कें सम्पादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६१२. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १७)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६१३. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १७)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६१४. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १७)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६१५. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १७)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६१६. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १७)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६१७. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १७)'मे सम्पादकीयक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) सम्पादकीयक रूप कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६१८. 'विदेह प्रवेशिका (अंक १७)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5301 : विदेह-सदेह 17 — जितेन्द्र झा — मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)

६१९. 'मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६२०. 'मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?
- (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
 (B) कागजक आकार
 (C) सिरिफ तिथि
 (D) प्रचारात्मक वाक्य
६२१. 'मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)'कें रिपोर्टाज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?
- (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
 (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
 (C) स्रोत-बाह्य घटना
 (D) यादृच्छिक अनुमान
६२२. 'मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?
- (A) शीर्षक नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। दिस संकेत करैत अछि
 (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
 (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
 (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि
६२३. 'मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?
- (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
 (B) सूचीगणना मात्र
 (C) असम्बद्ध हास्य
 (D) बाहरी विज्ञापन
६२४. 'मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)'क गलत पठन कोन होएत?
- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
 (B) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
 (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
 (D) अर्थाधारित पठन करब
६२५. 'मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?
- (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।
 (B) निजी लाभक हिसाब
 (C) सैनिक आदेश
 (D) खेलक परिणाम
६२६. 'मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?
- (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
 (B) क्रमांकक गिनती पूछब
 (C) कागजक आकार पूछब
 (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब
६२७. 'मैथिली रिपोर्टाज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)'मे रिपोर्टाजक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?
- (A) रिपोर्टाजक रूप नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। कें स्पष्ट करैत अछि
 (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
 (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
 (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६२८. 'मैथिली रिपोर्ताज: कोशीक कोप (बाढ़ि-विशेष)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5302 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम

६२९. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६३०. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६३१. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम'केँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६३२. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६३३. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६३४. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६३५. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६३६. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६३७. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम'मे रिपोर्ताजिक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) रिपोर्ताजिक रूप लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६३८. 'ब्रिटिश लाइब्रेरी मे रामायणक परचम' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ लन्दनमे रामायण प्रदर्शनी; मिथिला चित्रकला। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5303 : विदेह-सदेह 17 — शम्भू कुमार सिंह — दूभि

६३९. 'दूभि'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६४०. 'दूभि'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६४१. 'दूभि'केँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६४२. 'दूभि'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६४३. 'दूभि'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६४४. 'दूभि'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६४५. 'दूभि'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६४६. 'दूभि' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६४७. 'दूभि'मे कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कथाक रूप ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६४८. 'दूभि' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ ग्रामीण शिक्षाक पतनक प्रतीकात्मक कथा। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5304 : विदेह-सदेह 17 — अनलकांत — तर्पण

६४९. 'तर्पण'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६५०. 'तर्पण'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६५१. 'तर्पण'केँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकट।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६५२. 'तर्पण'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकेत। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६५३. 'तर्पण'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकेत।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६५४. 'तर्पण'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकेत।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६५५. 'तर्पण'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकेत।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६५६. 'तर्पण' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकेत।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६५७. 'तर्पण'मे कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कथाक रूप पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकेत। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६५८. 'तर्पण' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ पैतृक सम्पत्ति आ पहिचानक संकेत। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5305 : विदेह-सदेह 17 — श्याम सुन्दर 'शशि' — मरदे कि बरदे

६५९. 'मरदे कि बरदे'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६६०. 'मरदे कि बरदे'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६६१. 'मरदे कि बरदे'क लघुकथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६६२. 'मरदे कि बरदे'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६६३. 'मरदे कि बरदे'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६६४. 'मरदे कि बरदे'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६६५. 'मरदे कि बरदे'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६६६. 'मरदे कि बरदे' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६६७. 'मरदे कि बरदे'मे लघुकथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) लघुकथाक रूप प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६६८. 'मरदे कि बरदे' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ प्रेम-विडम्बनाक व्यंग्यात्मक लघुकथा। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5306 : विदेह-सदेह 17 — कुमार मनोज कश्यप — थाकल बाट

६६९. 'थाकल बाट'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) रिश्ततखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६७०. 'थाकल बाट'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) रिश्ततखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६७१. 'थाकल बाट'केँ लघुकथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) रिश्ततखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६७२. 'थाकल बाट'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक रिश्ततखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६७३. 'थाकल बाट'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) रिश्ततखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६७४. 'थाकल बाट'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) रिश्ततखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६७५. 'थाकल बाट'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) रिश्ततखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६७६. 'थाकल बाट' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) रिश्तखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६७७. 'थाकल बाट'मे लघुकथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) लघुकथाक रूप रिश्तखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६७८. 'थाकल बाट' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ रिश्तखोरी आ नोकरशाहीक पर्दाफाश। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5307 : विदेह-सदेह 17 — प्रेमशंकर सिंह — बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)

६७९. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६८०. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६८१. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)'केँ साहित्येतिहास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६८२. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६८३. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६८४. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६८५. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६८६. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६८७. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)'मे साहित्येतिहासक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) साहित्येतिहासक रूप निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६८८. 'बीसम शताब्दी: स्वर्णिम युग (समाप्त)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ निबन्ध-अनुवाद-इतिहास; महिला-लेखन। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5308 : विदेह-सदेह 17 — कैलाश कुमार मिश्र — यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)

६८९. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

६९०. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

६९१. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)'केँ यात्रा-वृत्तान्त रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

६९२. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६९३. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

६९४. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

६९५. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

६९६. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६९७. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)'मे यात्रा-वृत्तान्तक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) यात्रा-वृत्तान्तक रूप असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६९८. 'यायावरी: नॉर्थ कछार हिल्स (पहिल खेप)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ असमक अल्पज्ञात जनजातीय क्षेत्रक विवरण। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5309 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (आगाँ)

६९९. 'सहस्रबाढ़नि (आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७००. 'सहस्रबाढ़नि (आगों)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७०१. 'सहस्रबाढ़नि (आगों)'कें उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७०२. 'सहस्रबाढ़नि (आगों)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७०३. 'सहस्रबाढ़नि (आगों)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७०४. 'सहस्रबाढ़नि (आगों)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७०५. 'सहस्रबाढ़नि (आगों)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७०६. 'सहस्रबाढ़नि (आगों)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७०७. 'सहस्रबाढ़नि (आगों)'मे उपन्यासक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) उपन्यासक रूप तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७०८. 'सहस्रबाढ़नि (आगों)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकें तांत्रिकक धोखाधड़ी; नन्दक मोहभंग। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5310 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — दैनिकी (चारिम दिन)

७०९. 'दैनिकी (चारिम दिन)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७१०. 'दैनिकी (चारिम दिन)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७११. 'दैनिकी (चारिम दिन)'कें यात्रा-वृत्तान्त रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७१२. 'दैनिकी (चारिम दिन)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७१३. 'दैनिकी (चारिम दिन)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७१४. 'दैनिकी (चारिम दिन)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७१५. 'दैनिकी (चारिम दिन)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७१६. 'दैनिकी (चारिम दिन)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७१७. 'दैनिकी (चारिम दिन)'मे यात्रा-वृत्तान्तक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) यात्रा-वृत्तान्तक रूप बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७१८. 'दैनिकी (चारिम दिन)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ बेलुर मठ, दक्षिणेश्वर, बॉटेनिकल गार्डन। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5311 : विदेह-सदेह 17 — सम्पादकीय — हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)

७१९. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७२०. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७२१. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)'केँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७२२. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७२३. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७२४. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७२५. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७२६. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७२७. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)'मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-निबन्धक रूप कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७२८. 'हरिमोहन झा समग्र (आगाँ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5312 : विदेह-सदेह 17 — जितमोहन झा — कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार

७२९. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७३०. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७३१. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार'केँ सामाजिक लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७३२. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७३३. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७३४. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७३५. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७३६. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७३७. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार'मे सामाजिक लेखक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) सामाजिक लेखक रूप लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७३८. 'कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृतिक संग खिलवार' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5313 : विदेह-सदेह 17 — सुशांत झा — बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?

७३९. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७४०. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७४१. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?' केँ कोसी गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७४२. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?' के शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७४३. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७४४. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?' के गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७४५. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७४६. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७४७. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?' मे कोसी गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कोसी गद्यक रूप बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७४८. 'बिहार में प्रलय, लेकिन की छैक निदान?' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5314 : विदेह-सदेह 17 — बी.के. कर्ण — संकट गुणक आ मैथिल

७४९. 'संकट गुणक आ मैथिल'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७५०. 'संकट गुणक आ मैथिल'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७५१. 'संकट गुणक आ मैथिल'केँ कोसी गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७५२. 'संकट गुणक आ मैथिल'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७५३. 'संकट गुणक आ मैथिल'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७५४. 'संकट गुणक आ मैथिल'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७५५. 'संकट गुणक आ मैथिल'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७५६. 'संकट गुणक आ मैथिल' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७५७. 'संकट गुणक आ मैथिल'मे कोसी गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कोसी गद्यक रूप मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७५८. 'संकट गुणक आ मैथिल' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5315 : विदेह-सदेह 17 — शक्ति शेखर — कखन बदलब हम

७५९. 'कखन बदलब हम'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७६०. 'कखन बदलब हम'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७६१. 'कखन बदलब हम'केँ कोसी गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७६२. 'कखन बदलब हम'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७६३. 'कखन बदलब हम'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७६४. 'कखन बदलब हम'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७६५. 'कखन बदलब हम'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७६६. 'कखन बदलब हम' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७६७. 'कखन बदलब हम'मे कोसी गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कोसी गद्यक रूप बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७६८. 'कखन बदलब हम' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ बाढ़ि-घोटाला आ राजनीतिक स्वार्थ पर क्षोभ। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5316 : विदेह-सदेह 17 — ओमप्रकाश झा — मिथिले तक नहि छथि मैथिल

७६९. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७७०. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७७१. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल'केँ कोसी गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७७२. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७७३. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७७४. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७७५. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७७६. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७७७. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल'मे कोसी गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कोसी गद्यक रूप गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७७८. 'मिथिले तक नहि छथि मैथिल' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ गोवा-सम्मेलनक अनुभव; मैथिल एकता। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5317 : विदेह-सदेह 17 — मित्रनाथ झा — विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन

७७९. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७८०. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७८१. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन'कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७८२. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७८३. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७८४. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७८५. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७८६. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७८७. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन'मे पद्यक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७८८. 'विदेह-वैभव / भग्न चिन्तन' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मिथिलाक ज्ञान-गरिमाक गौरव-गान। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5318 : विदेह-सदेह 17 — शम्भू कुमार सिंह — आह्वान

७८९. 'आह्वान'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७९०. 'आह्वान'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७९१. 'आह्वान'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७९२. 'आह्वान'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७९३. 'आह्वान'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७९४. 'आह्वान'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७९५. 'आह्वान'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७९६. 'आह्वान' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७९७. 'आह्वान'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७९८. 'आह्वान' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ राष्ट्रीय एकता आ आतंकवाद-विरोधी कविता। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5319 : विदेह-सदेह 17 — विनीत उत्पल — अंगप्रदेश / परीक्षा

७९९. 'अंगप्रदेश / परीक्षा'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८००. 'अंगप्रदेश / परीक्षा'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८०१. 'अंगप्रदेश / परीक्षा'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८०२. 'अंगप्रदेश / परीक्षा'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८०३. 'अंगप्रदेश / परीक्षा'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८०४. 'अंगप्रदेश / परीक्षा'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८०५. 'अंगप्रदेश / परीक्षा'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८०६. 'अंगप्रदेश / परीक्षा' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८०७. 'अंगप्रदेश / परीक्षा'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८०८. 'अंगप्रदेश / परीक्षा' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ अंग-क्षेत्रक अवनति; मधुश्रावणी-प्रथा। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5320 : विदेह-सदेह 17 — रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)

८०९. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८१०. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८११. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८१२. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८१३. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८१४. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८१५. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८१६. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८१७. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८१८. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (भजनावली)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ राम-शिवक स्तुति; चैत-विरहक लोक-राग। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5321 : विदेह-सदेह 17 — गंगेश गुंजन — राधा (दोसर खेप आगाँ)

८१९. 'राधा (दोसर खेप आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८२०. 'राधा (दोसर खेप आगाँ)' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८२१. 'राधा (दोसर खेप आगाँ)' केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८२२. 'राधा (दोसर खेप आगाँ)' क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८२३. 'राधा (दोसर खेप आगाँ)' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८२४. 'राधा (दोसर खेप आगाँ)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८२५. 'राधा (दोसर खेप आगाँ)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८२६. 'राधा (दोसर खेप आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८२७. 'राधा (दोसर खेप आगाँ)' मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८२८. 'राधा (दोसर खेप आगौं)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ आत्मा-परमात्मा सम्बन्धक भक्तिकालीन शैली। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5322 : विदेह-सदेह 17 — बैकुण्ठ झा — दुनियाँ

८२९. 'दुनियाँ'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८३०. 'दुनियाँ'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८३१. 'दुनियाँ'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८३२. 'दुनियाँ'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८३३. 'दुनियाँ'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८३४. 'दुनियाँ'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८३५. 'दुनियाँ'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८३६. 'दुनियाँ' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८३७. 'दुनियाँ'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८३८. 'दुनियाँ' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कृतघ्न समाजक तीखा आलोचना। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5323 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — कल्पनालोक

८३९. 'कल्पनालोक'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८४०. 'कल्पनालोक'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८४१. 'कल्पनालोक'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८४२. 'कल्पनालोक'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८४३. 'कल्पनालोक'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८४४. 'कल्पनालोक'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८४५. 'कल्पनालोक'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८४६. 'कल्पनालोक' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८४७. 'कल्पनालोक'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८४८. 'कल्पनालोक' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ आदर्श-विश्वक कल्पना; पलायनवादी चिन्तन। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5324 : विदेह-सदेह 17 — प्रकाश झा — हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक

८४९. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८५०. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८५१. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८५२. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८५३. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८५४. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८५५. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८५६. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८५७. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८५८. 'हमर मिथिलाक दर्शन (प्रकाश); हाल बचपनसँ पचपन तक' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मिथिलाक सांस्कृतिक-भौगोलिक परिचय। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5325 : विदेह-सदेह 17 — जितमोहन झा — मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)

८५९. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८६०. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८६१. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८६२. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८६३. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८६४. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८६५. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८६६. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८६७. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८६८. 'मात पिता गुरु प्रभु चरणमे (भक्तिगीत)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ पारिवारिक-गुरु-ऋणक स्वीकारोक्ति। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5326 : विदेह-सदेह 17 — शैलेन्द्र मोहन झा — हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहँ गे

८६९. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहँ गे'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८७०. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहँ गे'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८७१. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहँ गे'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८७२. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहँ गे'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८७३. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहँ गे'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८७४. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहँ गे'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८७५. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकिहँ गे'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८७६. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकहैं गे' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८७७. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकहैं गे'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८७८. 'हम त छी परदेशमे / गे छौड़ी कनि तकहैं गे' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ प्रवासी-पतिक विरह-व्यथा; लोकगीत शैली। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5327 : विदेह-सदेह 17 — लोक-संकलित — कोसी लोकगीत (तीन गोट)

८७९. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८८०. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८८१. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)'केँ लोकगीत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८८२. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८८३. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८८४. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८८५. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८८६. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८८७. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)' मे लोकगीतक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) लोकगीतक रूप कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८८८. 'कोसी लोकगीत (तीन गोट)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कोसी नदीक सांस्कृतिक-लोक बिम्ब। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5328 : विदेह-सदेह 17 — रामकृष्ण झा 'किसुन' — कोशीक बाढ़ि

८८९. 'कोशीक बाढ़ि' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८९०. 'कोशीक बाढ़ि' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८९१. 'कोशीक बाढ़ि' केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८९२. 'कोशीक बाढ़ि'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८९३. 'कोशीक बाढ़ि'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८९४. 'कोशीक बाढ़ि'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८९५. 'कोशीक बाढ़ि'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८९६. 'कोशीक बाढ़ि' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८९७. 'कोशीक बाढ़ि'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८९८. 'कोशीक बाढ़ि' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ बाढ़िक समतावादी-विनाशक राजनीतिक रूपक। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5329 : विदेह-सदेह 17 — विनीत उत्पल — गाम (डूबि गेल)

८९९. 'गाम (डूबि गेल)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९००. 'गाम (डूबि गेल)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९०१. 'गाम (डूबि गेल)'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९०२. 'गाम (डूबि गेल)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९०३. 'गाम (डूबि गेल)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९०४. 'गाम (डूबि गेल)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९०५. 'गाम (डूबि गेल)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९०६. 'गाम (डूबि गेल)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) जन्मभूमि-प्रवासक वेदना।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९०७. 'गाम (डूबि गेल)'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९०८. 'गाम (डूबि गेल)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ जन्मभूमि-प्रवासक वेदना। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5330 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)

९०९. 'महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९१०. 'महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९११. 'महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)'केँ पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९१२. 'महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९१३. 'महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९१४. 'महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९१५. 'महाभारत: शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९१६. 'महाभारतः शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९१७. 'महाभारतः शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)'मे पद्य-कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्य-कथाक रूप दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९१८. 'महाभारतः शल्य-पर्व सँ स्वर्गारोहण पर्व (समाप्त)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ दुर्योधन-गदायुद्ध; महाप्रस्थान; स्वर्गारोहण। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5331 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — बुद्ध चरित (प्रारम्भ)

९१९. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९२०. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९२१. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)'केँ पद्य-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९२२. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९२३. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९२४. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९२५. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९२६. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९२७. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)'मे पद्य-कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्य-कथाक रूप इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९२८. 'बुद्ध चरित (प्रारम्भ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ इक्ष्वाकु वंशक शुद्धोधन-मायादेवी प्रसंग। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5332 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)

९२९. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९३०. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९३१. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'केँ शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९३२. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९३३. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९३४. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९३५. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९३६. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९३७. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)'मे शिक्षाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शिक्षाक रूप न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९३८. 'संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च (आगाँ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ न्यायाधीश-मुद्रा-टॉसक संवाद। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5333 : विदेह-सदेह 17 — तूलिका — मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)

९३९. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९४०. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)' में कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९४१. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)' में कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९४२. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)' में शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९४३. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)' में पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९४४. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)' में क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९४५. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)' में सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९४६. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)' में पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९४७. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)' में कलाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कलाक रूप विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१४८. 'मिथिला कला: राधा-कृष्ण (कोबर शैली)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ विवाह-कोबर घरक पारम्परिक चित्रांकन। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5334 : विदेह-सदेह 17 — रामाश्रय झा 'रामरंग' — श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)

१४९. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१५०. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१५१. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)'केँ संगीत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१५२. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५३. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१५४. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१५५. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९५६. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९५७. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)'मे संगीतक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) संगीतक रूप मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९५८. 'श्री गणेश/मिथिला/शंकर वन्दना (बिलावल-भूपाली)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मैथिली बन्दिशक स्वरलिपि। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5335 : विदेह-सदेह 17 — प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' — मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)

९५९. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९६०. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९६१. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)'केँ शोध-निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९६२. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९६३. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९६४. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९६५. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९६६. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९६७. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)'मे शोध-निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-निबन्धक रूप तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९६८. 'मिथिलांचलक शाक्त क्षेत्र (चामुण्डा-चण्डी-कंकाली)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ तांत्रिक साधना-स्थलक मूर्ति-विज्ञान। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5336 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर / नूतन झा — हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी

९६९. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९७०. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९७१. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी'केँ निबन्ध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९७२. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९७३. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९७४. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९७५. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९७६. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९७७. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी'मे निबन्धक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) निबन्धक रूप तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९७८. 'हरितालिका/चौरचन्द्र/अनन्त चतुर्दशी' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ तीज-व्रत; चन्द्रमा-श्राप; अनन्त-तागक कथा। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5337 : विदेह-सदेह 17 — जितमोहन झा — महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या

९७९. 'महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९८०. 'महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९८१. 'महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या'कें सामाजिक लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९८२. 'महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९८३. 'महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९८४. 'महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९८५. 'महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९८६. 'महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९८७. 'महिला-स्तंभ: कन्या भ्रूण हत्या'मे सामाजिक लेखक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) सामाजिक लेखक रूप हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९८८. 'महिला-स्तंभः कन्या भ्रूण हत्या' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ हरियाणाक सांख्यिकी सन्दर्भ सहित। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5338 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — जट-जटिन

९८९. 'जट-जटिन'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९९०. 'जट-जटिन'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९९१. 'जट-जटिन'केँ बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९९२. 'जट-जटिन'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९९३. 'जट-जटिन'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९९४. 'जट-जटिन'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९९५. 'जट-जटिन'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१९६. 'जट-जटिन' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१९७. 'जट-जटिन'मे बाल-कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) बाल-कथाक रूप राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१९८. 'जट-जटिन' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ राजा शिवसिंह-कालीन लोक-नाट्यक परिचय। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5339 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: शिक्षक दिवस

१९९. 'देवीजी: शिक्षक दिवस'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०००. 'देवीजी: शिक्षक दिवस'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१००१. 'देवीजी: शिक्षक दिवस'केँ बाल-कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१००२. 'देवीजी: शिक्षक दिवस'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१००३. 'देवीजी: शिक्षक दिवस'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१००४. 'देवीजी: शिक्षक दिवस'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१००५. 'देवीजी: शिक्षक दिवस'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१००६. 'देवीजी: शिक्षक दिवस' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१००७. 'देवीजी: शिक्षक दिवस'मे बाल-कथाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) बाल-कथाक रूप गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१००८. 'देवीजी: शिक्षक दिवस' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ गुरु-शिष्य परम्परा आ सम्मानक कथा। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5340 : विदेह-सदेह 17 — विद्यानन्द झा पञ्जीकार — पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता

१००९. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०१०. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०११. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता'केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०१२. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०१३. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०१४. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०१५. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०१६. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०१७. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता'मे शोध-लेखक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-लेखक रूप गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०१८. 'पञ्जी प्रबंध: शाखा-पुस्तकक विशेषता' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ गुणाकर झाक परम्परा; अंक-पद्धति। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5341 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)

१०१९. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०२०. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०२१. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)'केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०२२. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०२३. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०२४. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०२५. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०२६. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०२७. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)'मे शोध-लेखक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शोध-लेखक रूप राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०२८. 'लक्ष्मीधर (राजधर्म-कानून)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ राजाक ट्रस्टी-दायित्व; मैथिल स्मृतिकार। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5342 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली

१०२९. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०३०. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०३१. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली'केँ भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०३२. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०३३. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०३४. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०३५. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०३६. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०३७. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली'मे भाषाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) भाषाक रूप भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०३८. 'रचना लेखन: गोविन्ददास/बद्रीनाथ झा शब्दावली' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ भक्तिकालीन मैथिली काव्यकोश। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5343 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)

१०३९. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०४०. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०४१. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'केँ भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०४२. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०४३. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०४४. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०४५. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०४६. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०४७. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)'मे भाषाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) भाषाक रूप मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०४८. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली (आगाँ)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मानक मैथिली वर्तनी कोषक विस्तार। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5344 : विदेह-सदेह 17 — सम्पादकीय — Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)

१०४९. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०५०. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०५१. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)'केँ ऐतिहासिक रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०५२. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०५३. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०५४. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०५५. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०५६. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०५७. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)'मे ऐतिहासिकक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) ऐतिहासिकक रूप शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०५८. 'Videha Mithila Tirbhukti Tirhut (ओइनवार-ठाकुर वंश)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ शिवसिंह-विद्यापति-कालीन राजनीतिक घटनाक्रम। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5345 : विदेह-सदेह 17 — ज्योति झा चौधरी — The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day

१०५९. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०६०. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०६१. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day'केँ अनुवाद/कविता रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०६२. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०६३. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०६४. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०६५. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०६६. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०६७. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day'मे अनुवाद/कविताक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) अनुवाद/कविताक रूप बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०६८. 'The Comet (अन्तिम)/ The Dawn Of One Summer Day' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ बाँध-टूटबाक कथा; ग्रीष्म-प्रभातक अंग्रेजी कविता। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5346 : विदेह-सदेह 17 — गजेन्द्र ठाकुर — Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)

१०६९. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०७०. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०७१. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)'केँ शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०७२. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०७३. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०७४. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०७५. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०७६. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०७७. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)'मे शिक्षाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शिक्षाक रूप संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०७८. 'Videha Maithili Samskrit Education (शिष्टाचार-परिचय)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ संस्कृत-मैथिली-अंग्रेजी सम्भाषण तालिका। धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) १९५४ — समीक्षा अनुसार अरविन्द ठाकुरक जन्म सन् १९५४ ई.मे भेल।
२. (A) राजनैतिक-आर्थिक लघुकथा — समीक्षा अनुसार अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष हुनकर राजनैतिक-आर्थिक लघुकथा सभ छन्हि।
३. (A) अपन टोलमे हिन्दू यारक भाइकेँ मारल जेबापर — अलीमुद्दीन अपन टोलमे अपन हिन्दू यारक भाइकेँ मारल जेबापर लज्जित अछि।
४. (A) पत्र-शैली — 'ढाँचा-१९९२' पत्र-शैलीमे लिखल गेल लघुकथा थिक, जे गुजरात दंगापर लिखबाक प्रसंगसँ जुड़ल अछि।
५. (A) गणपति (गणेश)क वाहन — 'मूस' लघुकथामे मूस (मूसा) केँ गणपति बप्पाक पूजनीय वाहन कहल गेल अछि, जे महाराष्ट्रमे मारल नहि जाइत अछि।
६. (A) ओ गरीबक डॉक्टर छल, बड्ड मामूली फीस लैत छल — कथामे व्यंग्य अछि जे ओ डॉक्टर बड्ड मामूली फीस लैत छल, गरीबक डॉक्टर नामसँ ख्यात छल, तँ हुनकर हत्या मीडियामे महत्त्व नहि पाओलक।
७. (A) जखन मनुक्ख रंग बदलैत अछि, गिरगिटसँ बेशी — कथामे व्यंग्य अछि जे गिरगिट रंग बदलबा लेल प्रसिद्ध अछि, मुदा मनुक्खक रंग-परिवर्तन (राजनीतिक स्वार्थ) देखि गिरगिटो लजा जाइत अछि।
८. (A) न्यायपालिकाक क्रिया-प्रक्रिया (कचहरी) — 'विष-पान' कचहरीक विवरण आ न्यायपालिकाक क्रिया-प्रक्रिया (तारीख, मेडिकल एक्स-रे, मोकदमाक सुनबाइ) क विश्लेषण करैत अछि।
९. (A) राधाविरह (महाकाव्य) — काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (१९०६-१९८७) क महाकाव्य 'राधाविरह' पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छल।
१०. (A) १९०६-१९८७ — काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जीवन-काल १९०६ सँ १९८७ ई. धरि रहल।
११. (A) परती टूटि रहल अछि — अरविन्द ठाकुरक प्रथम काव्य-संग्रहक नाम 'परती टूटि रहल अछि' थिक, जे सन् १९९३ मे प्रकाशित भेल।
१२. (A) खिस्सा सियार यार — समीक्षित कथा-संग्रहक पहिल कथाक नाम 'खिस्सा सियार यार' थिक, जे बिहारक 'लालटेन युग'क पूर्वसन्ध्याकेँ इंगित करैत अछि।
१३. (A) तीन गोट — समीक्षा अनुसार 'पिआसल पानि' कथामे कुल तीन गोट पात्र छथि।
१४. (A) पतिक नपुंसकताक कारणे सामाजिक कलंक आ गिरहथी करबाक बाध्यता — समीक्षा अनुसार नारायणपुरवालीक पति नपुंसक सिद्ध होइत छथि, जे एक सामाजिक कलंक आ आर्थिक बाध्यताक स्थिति उत्पन्न करैत अछि।
१५. (A) 'अय्यासी'केँ 'मूस'सँ पहिने राखब बेसी उपयुक्त होइत — समीक्षक सुझाव दैत छथि जे 'अय्यासी'केँ 'मूस'सँ पहिने राखल जाय तँ दुनू कथाक अनिवार्यता आओर बेसी सुसंगत बनैत।

१६. (A) राष्ट्र, उपराष्ट्रवादक पीड़ा आ साम्प्रदायिक उन्माद — समीक्षा अनुसार ‘ढाँचा १९९२’ कथा राष्ट्र, उपराष्ट्रवादक पीड़ा आ उन्मादी भीड़क कुटिल नेतृत्वद्वारा संचालित होएबाक विषयपर अछि।
१७. (A) स्थिति प्रायः समान, मुदा समाधानक शैली भिन्न — समीक्षक अनुसार दुनू कथाक स्थिति प्रायः समान अछि, मुदा ओकर अन्वेषण आ समाधानक शैली एक-दोसरसँ भिन्न अछि।
१८. (A) अप्पन लोक — स्व. प्रभाष कुमार चौधरीक रचना ‘अप्पन लोक’ क उल्लेख समीक्षामे अछि।
१९. (A) अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय — सूचकांक पंक्ति 1415मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” रूपमे देल अछि।
२०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२१. (C) सम्पादकीय/आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय/आलेख” अछि।
२२. (D) अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व” अछि।
२३. (A) अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व” रूपमे देखाइत अछि।
२४. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६. (D) ई पाठ सम्पादकीय/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८. (B) खण्ड 2724, सूचकांक पंक्ति 1415मे गजेन्द्र ठाकुरक “अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर, संपादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९. (A) काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल — सूचकांक पंक्ति 1416मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” रूपमे देल अछि।
३०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
३२. (D) मधुपक गजल-यात्रा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुपक गजल-यात्रा” अछि।
३३. (A) मधुपक गजल-यात्रा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुपक गजल-यात्रा” रूपमे देखाइत अछि।
३४. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८. (B) खण्ड 2725, सूचकांक पंक्ति 1416मे ओम प्रकाश झाक “काशीकान्त मिश्र ‘मधुप’ आ मैथिली गजल” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “मधुपक गजल-यात्रा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९. (A) बहुरूपिया रचनामे — सूचकांक पंक्ति 1417मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “बहुरूपिया रचनामे” रूपमे देल अछि।
४०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
४२. (D) मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण” अछि।

४३. (A) मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
४४. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८. (B) खण्ड 2726, सूचकांक पंक्ति 1417मे ओम प्रकाश झाक “बहुरूपिया रचनामे” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “मधुपक बहुरंगी रचना-संसारक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४९. (A) अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर — सूचकांक पंक्ति 1418मे आशीष चमनक प्रविष्टि “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” रूपमे देल अछि।
५०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
५२. (D) अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश” अछि।
५३. (A) अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश” रूपमे देखाइत अछि।
५४. (B) लेखक आशीष चमन, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८. (B) खण्ड 2727, सूचकांक पंक्ति 1418मे आशीष चमनक “अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक विद्रोही चेतना पर प्रकाश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९. (A) अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि — सूचकांक पंक्ति 1419मे डा. योगानन्द झाक प्रविष्टि “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” रूपमे देल अछि।
६०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६१. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
६२. (D) अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख” अछि।
६३. (A) अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख” रूपमे देखाइत अछि।
६४. (B) लेखक डा. योगानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६६. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६८. (B) खण्ड 2728, सूचकांक पंक्ति 1419मे डा. योगानन्द झाक “अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अरविन्द ठाकुरक काव्य-दृष्टि पर विश्लेषणात्मक आलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६९. (A) अरविन्दजीक आजाद गजल — सूचकांक पंक्ति 1420मे जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “अरविन्दजीक आजाद गजल” रूपमे देल अछि।
७०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७१. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
७२. (D) आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन — टिप्पणीक पहिल संकेत “आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन” अछि।
७३. (A) आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन” रूपमे देखाइत अछि।
७४. (B) लेखक जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७६. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७८. (B) खण्ड 2729, सूचकांक पंक्ति 1420मे जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “आजाद गजल विधाक प्रसंगमे अरविन्द ठाकुरक मूल्यांकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७९. (A) अन्हारक रखवार — सूचकांक पंक्ति 1421मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क प्रविष्टि “अन्हारक रखवार” रूपमे देल अछि।
८०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
८२. (D) अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार” अछि।
८३. (A) अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार” रूपमे देखाइत अछि।
८४. (B) लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८८. (B) खण्ड 2730, सूचकांक पंक्ति 1421मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क “अन्हारक रखवार” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकुरक रक्षक-स्वभाव आ सामाजिक सरोकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८९. (A) एकैसम शताब्दी मे घसल अठन्नीक प्रासंगिकता — सूचकांक पंक्ति 1422मे योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’क प्रविष्टि “एकैसम शताब्दी मे घसल अठन्नीक प्रासंगिकता” रूपमे देल अछि।
९०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
९१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
९२. (D) 'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन — टिप्पणीक पहिल संकेत “'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन” अछि।
९३. (A) 'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।
९४. (B) लेखक योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८. (B) खण्ड 2731, सूचकांक पंक्ति 1422मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “एकैसम शताब्दी मे घसल अठन्नीक प्रासंगिकता” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “घसल अठन्नी'क सामयिक प्रासंगिकताक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९. (A) जमाना जमानाक स्टाइल — सूचकांक पंक्ति 1423मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क प्रविष्टि “जमाना जमानाक स्टाइल” रूपमे देल अछि।
१००. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
१०२. (D) बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण” अछि।
१०३. (A) बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।
१०४. (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०८. (B) खण्ड 2732, सूचकांक पंक्ति 1423मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “जमाना जमानाक स्टाइल” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “बदलैत समयमे गजल-शिल्प आ रचना-शैलीक विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०९. (A) उचित जगह — सूचकांक पंक्ति 1424मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क प्रविष्टि “उचित जगह” रूपमे देल अछि।
११०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१११. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
११२. (D) साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन” अछि।
११३. (A) साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन” रूपमे देखाइत अछि।
११४. (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११८. (B) खण्ड 2733, सूचकांक पंक्ति 1424मे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “उचित जगह” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “साहित्यकारक उचित स्थान-निर्धारण पर चिन्तन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११९. (A) अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज — सूचकांक पंक्ति 1425मे चंद्र मोहन झा 'पडवा'क प्रविष्टि “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” रूपमे देल अछि।
१२०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।

१२२. (D) पत्रकारिता आ साहित्यिक सन्दर्भमे हुनक भूमिका — टिप्पणीक पहिल संकेत “पत्रकारिता आ साहित्यिक सन्दर्भमे हुनक भूमिका” अछि।
१२३. (A) पत्रकारिता आ साहित्यिक सन्दर्भमे हुनक भूमिका — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पत्रकारिता आ साहित्यिक सन्दर्भमे हुनक भूमिका” रूपमे देखाइत अछि।
१२४. (B) लेखक चंद्र मोहन झा 'पडवा', विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२८. (B) खण्ड 2734, सूचकांक पंक्ति 1425मे चंद्र मोहन झा 'पडवा'क “अरविन्द ठाकुर आ मिशिला आवाज” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “पत्रकारिता आ साहित्यिक सन्दर्भमे हुनक भूमिका” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२९. (A) मिशिलाक इतिहास — सूचकांक पंक्ति 1426मे डॉ. श्रीमोहन झाक प्रविष्टि “मिशिलाक इतिहास” रूपमे देल अछि।
१३०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३१. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।
१३२. (D) मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन” अछि।
१३३. (A) मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन” रूपमे देखाइत अछि।
१३४. (B) लेखक डॉ. श्रीमोहन झा, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३६. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३८. (B) खण्ड 2735, सूचकांक पंक्ति 1426मे डॉ. श्रीमोहन झाक “मिशिलाक इतिहास” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मिथिलाक ऐतिहासिक विवेचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३९. (A) बनमानुष — सूचकांक पंक्ति 1427मे डा. शिवकुमार प्रसादक प्रविष्टि “बनमानुष” रूपमे देल अछि।
१४०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४१. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१४२. (D) यथार्थवादी कथा — टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवादी कथा” अछि।
१४३. (A) यथार्थवादी कथा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवादी कथा” रूपमे देखाइत अछि।
१४४. (B) लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४८. (B) खण्ड 2736, सूचकांक पंक्ति 1427मे डा. शिवकुमार प्रसादक “बनमानुष” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “यथार्थवादी कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४९. (A) जमीला — सूचकांक पंक्ति 1428मे डा. शिवकुमार प्रसादक प्रविष्टि “जमीला” रूपमे देल अछि।
१५०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५१. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।

१५२. (D) स्त्री-जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्त्री-जीवन” अछि।

१५३. (A) स्त्री-जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्त्री-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

१५४. (B) लेखक डा. शिवकुमार प्रसाद, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१५५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१५७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५८. (B) खण्ड 2737, सूचकांक पंक्ति 1428मे डा. शिवकुमार प्रसादक “जमीला” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “स्त्री-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५९. (A) अंबर (संस्मरण) — सूचकांक पंक्ति 1429मे प्रणव झाक प्रविष्टि “अंबर (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

१६०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६१. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

१६२. (D) आत्मकथात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मकथात्मक” अछि।

१६३. (A) आत्मकथात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मकथात्मक” रूपमे देखाइत अछि।

१६४. (B) लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१६५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६६. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१६७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६८. (B) खण्ड 2738, सूचकांक पंक्ति 1429मे प्रणव झाक “अंबर (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “आत्मकथात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६९. (A) तेसर प्रण (संस्मरण) — सूचकांक पंक्ति 1430मे प्रणव झाक प्रविष्टि “तेसर प्रण (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

१७०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७१. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

१७२. (D) जीवन-दर्शन — टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवन-दर्शन” अछि।

१७३. (A) जीवन-दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवन-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

१७४. (B) लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१७५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७६. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१७७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७८. (B) खण्ड 2739, सूचकांक पंक्ति 1430मे प्रणव झाक “तेसर प्रण (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “जीवन-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७९. (A) अपन अपन धर्म (संस्मरण) — सूचकांक पंक्ति 1431मे प्रणव झाक प्रविष्टि “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।

१८०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१८१. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।

१८२. (D) धर्म-दर्शन — टिप्पणीक पहिल संकेत “धर्म-दर्शन” अछि।
१८३. (A) धर्म-दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “धर्म-दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।
१८४. (B) लेखक प्रणव झा, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८६. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८८. (B) खण्ड 2740, सूचकांक पंक्ति 1431मे प्रणव झाक “अपन अपन धर्म (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “धर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८९. (A) दिव्या — सूचकांक पंक्ति 1432मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “दिव्या” रूपमे देल अछि।
१९०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१९१. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
१९२. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
१९३. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
१९४. (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९८. (B) खण्ड 2741, सूचकांक पंक्ति 1432मे नन्द विलास रायक “दिव्या” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९९. (A) सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट — सूचकांक पंक्ति 1433मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” रूपमे देल अछि।
२००. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२०१. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२०२. (D) व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।
२०३. (A) व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
२०४. (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२०५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२०६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२०७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२०८. (B) खण्ड 2742, सूचकांक पंक्ति 1433मे नन्द विलास रायक “सभसँ बडका भीआइपी गेस्ट” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२०९. (A) गामक चौबटिया पर — सूचकांक पंक्ति 1434मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “गामक चौबटिया पर” रूपमे देल अछि।
२१०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२११. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२१२. (D) ग्रामीण जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन” अछि।

२१३. (A) ग्रामीण जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
२१४. (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२१५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२१६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२१७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२१८. (B) खण्ड 2743, सूचकांक पंक्ति 1434मे अब्दुर रज्जाकक “गामक चौबटिया पर” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ग्रामीण जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२१९. (A) सैदी परल अछि — सूचकांक पंक्ति 1435मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “सैदी परल अछि” रूपमे देल अछि।
२२०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२१. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२२२. (D) ग्रामीण परिवेश — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण परिवेश” अछि।
२२३. (A) ग्रामीण परिवेश — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण परिवेश” रूपमे देखाइत अछि।
२२४. (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२२६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२८. (B) खण्ड 2744, सूचकांक पंक्ति 1435मे अब्दुर रज्जाकक “सैदी परल अछि” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “ग्रामीण परिवेश” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२९. (A) बेलहाबालीके जितिया — सूचकांक पंक्ति 1436मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “बेलहाबालीके जितिया” रूपमे देल अछि।
२३०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३१. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२३२. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।
२३३. (A) नेपाल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।
२३४. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२३५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२३७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३८. (B) खण्ड 2745, सूचकांक पंक्ति 1436मे विन्देश्वर ठाकुरक “बेलहाबालीके जितिया” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३९. (A) आसे आसमे जिन्नी — सूचकांक पंक्ति 1437मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “आसे आसमे जिन्नी” रूपमे देल अछि।
२४०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२४१. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२४२. (D) प्रवासी जीवनक आशा-निराशा — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवनक आशा-निराशा” अछि।
२४३. (A) प्रवासी जीवनक आशा-निराशा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवनक आशा-निराशा” रूपमे देखाइत अछि।

२४४. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२४५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२४७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४८. (B) खण्ड 2746, सूचकांक पंक्ति 1437मे विन्देश्वर ठाकूरक “आसे आसमे जिनी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रवासी जीवनक आशा-निराशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४९. (A) डरक नदी — सूचकांक पंक्ति 1438मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “डरक नदी” रूपमे देल अछि।
२५०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५१. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२५२. (D) प्रकृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।
२५३. (A) प्रकृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।
२५४. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२५५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२५६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२५७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२५८. (B) खण्ड 2747, सूचकांक पंक्ति 1438मे राजदेव मण्डलक “डरक नदी” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२५९. (A) पंचैती (लघु पटकथा) — सूचकांक पंक्ति 1439मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “पंचैती (लघु पटकथा)” रूपमे देल अछि।
२६०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६१. (C) पटकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पटकथा” अछि।
२६२. (D) ग्रामीण पंचायत व्यवस्था — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था” अछि।
२६३. (A) ग्रामीण पंचायत व्यवस्था — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था” रूपमे देखाइत अछि।
२६४. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा पटकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२६५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२६६. (D) ई पाठ पटकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२६७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२६८. (B) खण्ड 2748, सूचकांक पंक्ति 1439मे राजदेव मण्डलक “पंचैती (लघु पटकथा)” प्रविष्टि गद्य, पटकथा आ “ग्रामीण पंचायत व्यवस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२६९. (A) लाज (एकांकी) — सूचकांक पंक्ति 1440मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “लाज (एकांकी)” रूपमे देल अछि।
२७०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७१. (C) एकांकी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “एकांकी” अछि।
२७२. (D) नाट्य-विधा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नाट्य-विधा” अछि।
२७३. (A) नाट्य-विधा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नाट्य-विधा” रूपमे देखाइत अछि।
२७४. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२७६. (D) ई पाठ एकांकीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपके स्पष्ट करैत अछि।
२७७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२७८. (B) खण्ड 2749, सूचकांक पंक्ति 1440मे राजदेव मण्डलक “लाज (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, एकांकी आ “नाट्य-विधा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७९. (A) गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा — सूचकांक पंक्ति 1441मे डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क प्रविष्टि “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” रूपमे देल अछि।
२८०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८१. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२८२. (D) ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा” अछि।
२८३. (A) ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
२८४. (B) लेखक डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८६. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८८. (B) खण्ड 2750, सूचकांक पंक्ति 1441मे डॉ. शिशधर कुमार “विदेह”क “गामक शकल सूरत — पोथी समीक्षा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “ग्रामीण जीवन-परक पोथीक समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८९. (A) दियादी डाह — सूचकांक पंक्ति 1442मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क प्रविष्टि “दियादी डाह” रूपमे देल अछि।
२९०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९१. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कथा” अछि।
२९२. (D) पारिवारिक सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक सम्बन्ध” अछि।
२९३. (A) पारिवारिक सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
२९४. (B) लेखक राजदेव मण्डल ‘रमण’, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९६. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९८. (B) खण्ड 2751, सूचकांक पंक्ति 1442मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क “दियादी डाह” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पारिवारिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९९. (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना — सूचकांक पंक्ति 1443मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” रूपमे देल अछि।
३००. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०१. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।
३०२. (D) उपन्यास-समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास-समीक्षा” अछि।
३०३. (A) उपन्यास-समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास-समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।

३०४. (B) लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०६. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३०७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०८. (B) खण्ड 2752, सूचकांक पंक्ति 1443मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमें समकालीन चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “उपन्यास-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०९. (A) २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना — सूचकांक पंक्ति 1444मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक प्रविष्टि “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” रूपमे देल अछि।
३१०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३११. (C) शोध-आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शोध-आलेख” अछि।
३१२. (D) मैथिली उपन्यास — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली उपन्यास” अछि।
३१३. (A) मैथिली उपन्यास — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली उपन्यास” रूपमे देखाइत अछि।
३१४. (B) लेखक राजेन्द्र कुमार प्रधान, विधा गद्य, उप-विधा शोध-आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१६. (D) ई पाठ शोध-आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१८. (B) खण्ड 2753, सूचकांक पंक्ति 1444मे राजेन्द्र कुमार प्रधानक “२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमें राजनीतिक चेतना” प्रविष्टि गद्य, शोध-आलेख आ “मैथिली उपन्यास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१९. (A) समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी — सूचकांक पंक्ति 1445मे पंकज कुमार प्रभाकरक प्रविष्टि “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी” रूपमे देल अछि।
३२०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२१. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३२२. (D) उपन्यास-समीक्षा — टिप्पणीक पहिल संकेत “उपन्यास-समीक्षा” अछि।
३२३. (A) उपन्यास-समीक्षा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उपन्यास-समीक्षा” रूपमे देखाइत अछि।
३२४. (B) लेखक पंकज कुमार प्रभाकर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२६. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२८. (B) खण्ड 2754, सूचकांक पंक्ति 1445मे पंकज कुमार प्रभाकरक “समकालीन चेतनाक सम्वाहक :: अद्विगनी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “उपन्यास-समीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२९. (A) चोरविद्या — सूचकांक पंक्ति 1446मे पल्लवीक प्रविष्टि “चोरविद्या” रूपमे देल अछि।
३३०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३१. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
३३२. (D) व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।
३३३. (A) व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
३३४. (B) लेखक पल्लवी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३३५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३६. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३३७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३८. (B) खण्ड 2755, सूचकांक पंक्ति 1446मे पल्लवीक “चोरविद्या” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३९. (A) प्रेण्ड — सूचकांक पंक्ति 1447मे पल्लवीक प्रविष्टि “प्रेण्ड” रूपमे देल अछि।
३४०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३४१. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।
३४२. (D) सामाजिक सम्बन्ध — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक सम्बन्ध” अछि।
३४३. (A) सामाजिक सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक सम्बन्ध” रूपमे देखाइत अछि।
३४४. (B) लेखक पल्लवी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३४५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३४६. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३४७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४८. (B) खण्ड 2756, सूचकांक पंक्ति 1447मे पल्लवीक “प्रेण्ड” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “सामाजिक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४९. (A) रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल — सूचकांक पंक्ति 1448मे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” रूपमे देल अछि।
३५०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५१. (C) रिपोर्टाज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्टाज” अछि।
३५२. (D) 'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण” अछि।
३५३. (A) 'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण” रूपमे देखाइत अछि।
३५४. (B) लेखक पूनम मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३५५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५६. (D) ई पाठ रिपोर्टाजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३५७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३५८. (B) खण्ड 2757, सूचकांक पंक्ति 1448मे पूनम मण्डलक “रिपोर्ट — सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “'सगर राति' आन्दोलनक आयोजन-विवरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५९. (A) जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप — सूचकांक पंक्ति 1449मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” रूपमे देल अछि।
३६०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
३६२. (D) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि — टिप्पणीक पहिल संकेत “काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि” अछि।
३६३. (A) काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि” रूपमे देखाइत अछि।
३६४. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३६५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३६७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६८. (B) खण्ड 2758, सूचकांक पंक्ति 1449मे मुन्नाजीक “जन-चेतनाक स्वर वाहक मधुप” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जनपक्षीय साहित्य-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६९. (A) परती टूटि गेले — सूचकांक पंक्ति 1450मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “परती टूटि गेले” रूपमे देल अछि।
३७०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७१. (C) लघुकथा/आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा/आलेख” अछि।
३७२. (D) सामाजिक विसंगति — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक विसंगति” अछि।
३७३. (A) सामाजिक विसंगति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।
३७४. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा/आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३७५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७६. (D) ई पाठ लघुकथा/आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३७७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७८. (B) खण्ड 2759, सूचकांक पंक्ति 1450मे मुन्नाजीक “परती टूटि गेले” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा/आलेख आ “सामाजिक विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७९. (A) अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन — सूचकांक पंक्ति 1451मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” रूपमे देल अछि।
३८०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८१. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।
३८२. (D) अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत” अछि।
३८३. (A) अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत” रूपमे देखाइत अछि।
३८४. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८६. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८८. (B) खण्ड 2760, सूचकांक पंक्ति 1451मे मुन्नाजीक “अरविन्द ठाकूरजी संग साक्षात्कार आन-लाहन” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अरविन्द ठाकूरक जीवन-दर्शन पर विस्तृत बातचीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-

प्रविष्टिके प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३८९. (A) अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र — सूचकांक पंक्ति 1452मे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रूपमे देल अछि।
३९०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९१. (C) पत्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र” अछि।
३९२. (D) साहित्यिक पत्राचार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक पत्राचार” अछि।
३९३. (A) साहित्यिक पत्राचार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक पत्राचार” रूपमे देखाइत अछि।
३९४. (B) लेखक चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’, विधा गद्य, उप-विधा पत्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९६. (D) ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९८. (B) खण्ड 2761, सूचकांक पंक्ति 1452मे चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्यिक पत्राचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिके प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०१. (A) अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र — सूचकांक पंक्ति 1453मे नारायण जीक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रूपमे देल अछि।
४००. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०१. (C) पत्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र” अछि।
४०२. (D) साहित्यिक पत्र — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक पत्र” अछि।
४०३. (A) साहित्यिक पत्र — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक पत्र” रूपमे देखाइत अछि।
४०४. (B) लेखक नारायण जी, विधा गद्य, उप-विधा पत्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४०५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०६. (D) ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४०७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४०८. (B) खण्ड 2762, सूचकांक पंक्ति 1453मे नारायण जीक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्यिक पत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिके प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०९. (A) अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र — सूचकांक पंक्ति 1454मे प्रमोद कुमार झाक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” रूपमे देल अछि।
४१०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिके “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४११. (C) पत्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र” अछि।
४१२. (D) साहित्य-मित्रता — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य-मित्रता” अछि।
४१३. (A) साहित्य-मित्रता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य-मित्रता” रूपमे देखाइत अछि।
४१४. (B) लेखक प्रमोद कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा पत्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४१५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१६. (D) ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४१७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४१८. (B) खण्ड 2763, सूचकांक पंक्ति 1454मे प्रमोद कुमार झाक “अरविन्द ठाकूरजीक नामसँ पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “साहित्य-मित्रता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१९. (A) हाली-हाली बहुधु कोसी — सूचकांक पंक्ति 1455मे शैलेन्द्र आनन्दक प्रविष्टि “हाली-हाली बहुधु कोसी” रूपमे देल अछि।
४२०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२१. (C) यात्रा-वृत्तान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त” अछि।
४२२. (D) कोसी क्षेत्रक जन-जीवन — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी क्षेत्रक जन-जीवन” अछि।
४२३. (A) कोसी क्षेत्रक जन-जीवन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कोसी क्षेत्रक जन-जीवन” रूपमे देखाइत अछि।
४२४. (B) लेखक शैलेन्द्र आनन्द, विधा गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२६. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्तक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२८. (B) खण्ड 2764, सूचकांक पंक्ति 1455मे शैलेन्द्र आनन्दक “हाली-हाली बहुधु कोसी” प्रविष्टि गद्य, यात्रा-वृत्तान्त आ “कोसी क्षेत्रक जन-जीवन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२९. (A) अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व — सूचकांक पंक्ति 1456मे मिशिलेश कुमार रायक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” रूपमे देल अछि।
४३०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
४३२. (D) अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण” अछि।
४३३. (A) अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
४३४. (B) लेखक मिशिलेश कुमार राय, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४३५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४३७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३८. (B) खण्ड 2765, सूचकांक पंक्ति 1456मे मिशिलेश कुमार रायक “अरविन्द ठाकूर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “अरविन्द ठाकूरक चरित्र-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३९. (A) अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम — सूचकांक पंक्ति 1457मे अजित आजादक प्रविष्टि “अरविन्द ठाकूर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” रूपमे देल अछि।
४४०. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४१. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
४४२. (D) आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार” अछि।
४४३. (A) आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार” रूपमे देखाइत अछि।
४४४. (B) लेखक अजित आजाद, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४४६. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४४७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४८. (B) खण्ड 2766, सूचकांक पंक्ति 1457मे अजित आजादक “अरविन्द ठाकुर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “आत्मीयता आ साहित्यिक ऋण-स्वीकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४९. (A) नव वर्षक एहि मधुर पहरमे — सूचकांक पंक्ति 1458मे विजयनाथ झाक प्रविष्टि “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” रूपमे देल अछि।
४५०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५१. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४५२. (D) नववर्ष-स्वागत — टिप्पणीक पहिल संकेत “नववर्ष-स्वागत” अछि।
४५३. (A) नववर्ष-स्वागत — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नववर्ष-स्वागत” रूपमे देखाइत अछि।
४५४. (B) लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४५५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४५६. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४५७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५८. (B) खण्ड 2767, सूचकांक पंक्ति 1458मे विजयनाथ झाक “नव वर्षक एहि मधुर पहरमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नववर्ष-स्वागत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५९. (A) हमर नाम परिचय सादर सुरत हम — सूचकांक पंक्ति 1459मे विजयनाथ झाक प्रविष्टि “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” रूपमे देल अछि।
४६०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४६१. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४६२. (D) परिचयात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “परिचयात्मक” अछि।
४६३. (A) परिचयात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिचयात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
४६४. (B) लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४६५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६६. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
४६७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६८. (B) खण्ड 2768, सूचकांक पंक्ति 1459मे विजयनाथ झाक “हमर नाम परिचय सादर सुरत हम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “परिचयात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४६९. (A) चेतना केर नव सृजनमे — सूचकांक पंक्ति 1460मे विजयनाथ झाक प्रविष्टि “चेतना केर नव सृजनमे” रूपमे देल अछि।
४७०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७१. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४७२. (D) चेतना आ सृजन — टिप्पणीक पहिल संकेत “चेतना आ सृजन” अछि।
४७३. (A) चेतना आ सृजन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “चेतना आ सृजन” रूपमे देखाइत अछि।
४७४. (B) लेखक विजयनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
४७५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४७६. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४७७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७८. (B) खण्ड 2769, सूचकांक पंक्ति 1460मे विजयनाथ झाक “चेतना केर नव सृजनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “चेतना आ सृजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४७९. (A) महा-विस्फोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता) — सूचकांक पंक्ति 1461मे रमेशक प्रविष्टि “महा-विस्फोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” रूपमे देल अछि।
४८०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४८१. (C) दीर्घ गद्य कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दीर्घ गद्य कविता” अछि।
४८२. (D) प्रयोगात्मक — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रयोगात्मक” अछि।
४८३. (A) प्रयोगात्मक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रयोगात्मक” रूपमे देखाइत अछि।
४८४. (B) लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा दीर्घ गद्य कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८६. (D) ई पाठ दीर्घ गद्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८८. (B) खण्ड 2770, सूचकांक पंक्ति 1461मे रमेशक “महा-विस्फोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य कविता)” प्रविष्टि पद्य, दीर्घ गद्य कविता आ “प्रयोगात्मक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८९. (A) मोन विकल — सूचकांक पंक्ति 1462मे सुकोसुत शिशिरक प्रविष्टि “मोन विकल” रूपमे देल अछि।
४९०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४९१. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४९२. (D) आत्म-विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “आत्म-विमर्श” अछि।
४९३. (A) आत्म-विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आत्म-विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।
४९४. (B) लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४९६. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४९८. (B) खण्ड 2771, सूचकांक पंक्ति 1462मे सुकोसुत शिशिरक “मोन विकल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आत्म-विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४९९. (A) पडिकल जम — सूचकांक पंक्ति 1463मे सुकोसुत शिशिरक प्रविष्टि “पडिकल जम” रूपमे देल अछि।
५००. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५०१. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५०२. (D) प्रेम — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम” अछि।
५०३. (A) प्रेम — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम” रूपमे देखाइत अछि।
५०४. (B) लेखक सुकोसुत शिशिर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५०५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५०६. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५०७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५०८. (B) खण्ड 2772, सूचकांक पंक्ति 1463मे सुकोसुत शिशिरक “पडिकल जम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रेम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५०९. (A) हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ — सूचकांक पंक्ति 1464मे प्रणव झाक प्रविष्टि “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” रूपमे देल अछि।
५१०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५११. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५१२. (D) मिथिला-चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिथिला-चेतना” अछि।
५१३. (A) मिथिला-चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिथिला-चेतना” रूपमे देखाइत अछि।
५१४. (B) लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५१५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५१६. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५१७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१८. (B) खण्ड 2773, सूचकांक पंक्ति 1464मे प्रणव झाक “हे ‘मिथिलानी’ आब जागु अहूँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मिथिला-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१९. (A) अकांड तांडव — सूचकांक पंक्ति 1465मे प्रणव झाक प्रविष्टि “अकांड तांडव” रूपमे देल अछि।
५२०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२१. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५२२. (D) प्रलय-चित्रण — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रलय-चित्रण” अछि।
५२३. (A) प्रलय-चित्रण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रलय-चित्रण” रूपमे देखाइत अछि।
५२४. (B) लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५२५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२६. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५२७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२८. (B) खण्ड 2774, सूचकांक पंक्ति 1465मे प्रणव झाक “अकांड तांडव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “प्रलय-चित्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२९. (A) बोर्ड परीक्षा (बाल कविता) — सूचकांक पंक्ति 1466मे प्रणव झाक प्रविष्टि “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।
५३०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५३१. (C) बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।
५३२. (D) बाल-मनोरंजन — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल-मनोरंजन” अछि।
५३३. (A) बाल-मनोरंजन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल-मनोरंजन” रूपमे देखाइत अछि।
५३४. (B) लेखक प्रणव झा, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५३५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३६. (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५३७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३८. (B) खण्ड 2775, सूचकांक पंक्ति 1466मे प्रणव झाक “बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल-मनोरंजन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३९. (A) जुरमाना करेए... — सूचकांक पंक्ति 1467मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क प्रविष्टि “जुरमाना करेए...” रूपमे देल अछि।
५४०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५४१. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५४२. (D) व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य” अछि।
५४३. (A) व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।
५४४. (B) लेखक राजदेव मण्डल ‘रमण’, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५४५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५४६. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५४७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५४८. (B) खण्ड 2776, सूचकांक पंक्ति 1467मे राजदेव मण्डल ‘रमण’क “जुरमाना करेए...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५४९. (A) गजल सन किछु — सूचकांक पंक्ति 1468मे किशन कारीगरक प्रविष्टि “गजल सन किछु” रूपमे देल अछि।
५५०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५५१. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
५५२. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।
५५३. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।
५५४. (B) लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५५५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५५६. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५५७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५५८. (B) खण्ड 2777, सूचकांक पंक्ति 1468मे किशन कारीगरक “गजल सन किछु” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५५९. (A) गजल — सूचकांक पंक्ति 1469मे अशरफ राईनक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।
५६०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५६१. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
५६२. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।
५६३. (A) नेपाल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाल” रूपमे देखाइत अछि।
५६४. (B) लेखक अशरफ राईन, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५६५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५६६. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५६७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५६८. (B) खण्ड 2778, सूचकांक पंक्ति 1469मे अशरफ राईनक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “नेपाल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५६९. (A) दू आखर — सूचकांक पंक्ति 1470मे डॉ. उमा शंकर चौधरीक प्रविष्टि “दू आखर” रूपमे देल अछि।
५७०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७१. (C) लघु कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कविता” अछि।
५७२. (D) भाव-संक्षेप — टिप्पणीक पहिल संकेत “भाव-संक्षेप” अछि।
५७३. (A) भाव-संक्षेप — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “भाव-संक्षेप” रूपमे देखाइत अछि।
५७४. (B) लेखक डॉ. उमा शंकर चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा लघु कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५७५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७६. (D) ई पाठ लघु कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५७७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७८. (B) खण्ड 2779, सूचकांक पंक्ति 1470मे डॉ. उमा शंकर चौधरीक “दू आखर” प्रविष्टि पद्य, लघु कविता आ “भाव-संक्षेप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७९. (A) अस्तित्वकें चिन्ह — सूचकांक पंक्ति 1471मे चित्रा अंशुक प्रविष्टि “अस्तित्वकें चिन्ह” रूपमे देल अछि।
५८०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८१. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
५८२. (D) नारी स्वर — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी स्वर” अछि।
५८३. (A) नारी स्वर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।
५८४. (B) लेखक चित्रा अंशु, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५८५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८६. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
५८७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८८. (B) खण्ड 2780, सूचकांक पंक्ति 1471मे चित्रा अंशुक “अस्तित्वकें चिन्ह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८९. (A) निर्मलीक गीत — सूचकांक पंक्ति 1472मे बीणा प्रसादक प्रविष्टि “निर्मलीक गीत” रूपमे देल अछि।
५९०. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९१. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।
५९२. (D) लोक-गीत — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोक-गीत” अछि।
५९३. (A) लोक-गीत — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोक-गीत” रूपमे देखाइत अछि।
५९४. (B) लेखक बीणा प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
५९५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९६. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५९७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९८. (B) खण्ड 2781, सूचकांक पंक्ति 1472मे बीणा प्रसादक “निर्मलीक गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “लोक-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९९. (A) किछु तानका (बहुते) — सूचकांक पंक्ति 1473मे राम विलास साहूक प्रविष्टि “किछु तानका (बहुते)” रूपमे देल अछि।
६००. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०१. (C) तानका — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “तानका” अछि।
६०२. (D) प्रकृति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रकृति” अछि।
६०३. (A) प्रकृति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रकृति” रूपमे देखाइत अछि।
६०४. (B) लेखक राम विलास साहू, विधा पद्य, उप-विधा तानका — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
६०५. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६०६. (D) ई पाठ तानकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
६०७. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०८. (B) खण्ड 2782, सूचकांक पंक्ति 1473मे राम विलास साहूक “किछु तानका (बहुते)” प्रविष्टि पद्य, तानका आ “प्रकृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 17क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६०९. (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। सँ जोड़ैत अछि।
६१०. (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
६११. (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। धरि सीमित रहैत अछि।
६१२. (A) शीर्षक कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
६१३. (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। सँ बनैत अछि।
६१४. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
६१५. (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।क आधार पर ग्रहणीय अछि।
६१६. (A) कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
६१७. (A) सम्पादकीयक रूप कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। कें स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
६१८. (A) उत्तरकें कोसी बाढ़िक विश्लेषण; बान्ध-प्रबन्धन पर सुझाव। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
६१९. (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कें नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। सँ जोड़ैत अछि।
६२०. (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
६२१. (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। धरि सीमित रहैत अछि।
६२२. (A) शीर्षक नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
६२३. (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। सँ बनैत अछि।
६२४. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
६२५. (A) नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नेपाल-बिहारक बाढ़ि-स्थिति; दोषारोपण।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

- 181

- 182

७२५. (A) कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

७२६. (A) कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

७२७. (A) शोध-निबन्धक रूप कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। कैं स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

७२८. (A) उत्तरकें कथा-एकांकी-पद्यक विस्तृत सूची। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

७२९. (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। सँ जोड़ैत अछि।

७३०. (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

७३१. (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। धरि सीमित रहैत अछि।

૭૩૨. (A) શીર્ષક લિંગ-ભેદ જનિત સામાજિક વિકૃતિક વિરોધ। દિસ સંકેત કરૈત અછિ — શીર્ષક આ કથ્યક સમ્બન્ધ સ્રોત-સૂત્ર સँ પુષ્ટ હોઇત અછિ।

७३३. (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। सँ बनैत अछि।

938. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

७३५. (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

७३६. (A) लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोधाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।

७३७. (A) सामाजिक लेखक रूप लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। कैं स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

७३८. (A) उत्तरकें लिंग-भेद जनित सामाजिक विकृतिक विरोध। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

७३९. (A) बाढि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ बाढि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। सँ जोड़ैत अछि।

७४०. (A) बाढि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

७४१. (A) बाढ़-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाढ़-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। धरि सीमित रहैत अछि।

૭૪૨. (A) શીર્ષક બાદિ-નિયન્ત્રણક દીર્ઘકાલિક પર્યાવરણીય ઉપાય। દિસ સંકેત કરૈત અછિ — શીર્ષક આ કથ્યક સમ્બન્ધ સ્રોત-સૂત્ર સં પુષ્ટ હોઇત અછિ।

७४३. (A) बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। सँ बनैत अछि।

७४४. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

७४५. (A) बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

७४६. (A) बाढ़-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय।क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।

७४७. (A) कोसी गद्यक रूप बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

७४८. (A) उत्तरकें बाढ़ि-नियन्त्रणक दीर्घकालिक पर्यावरणीय उपाय। धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

७४९. (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। सँ जोड़ैत अछि।

७५०. (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

७५१. (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। धरि सीमित रहैत अछि।

७५२. (A) शीर्षक मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पृष्ठ होइत अछि।

७५३. (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। सँ बनैत अछि।

७५४. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

७५५. (A) मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट। — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिल-पलायन आ भाषाक अस्तित्व-संकट।क आधार पर ग्रहणीय अछि।

[illegible]

- 190

- 191

- [illegible]

अध्याय ३ : विदेह-सदेह १८ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड १२ : विदेह-सदेह १८ — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क समीक्षा

१. विदेह-सदेह १८ में गजेन्द्र ठाकुर केकर पद्यक समीक्षा करैत छथि?
(A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'
(B) विभा रानी
(C) नचिकेता
(D) कोनो नहि
२. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' मूलतः कोन विधाक रचनाकार छथि?
(A) कवि
(B) नाटककार
(C) उपन्यासकार
(D) कोनो नहि
३. समीक्षामे 'अनिल'जीक गजलक बहरक प्रति की मूल्यांकन कएल गेल?
(A) झोंकमे लिखल गजल, लौलवश नहि
(B) अत्यन्त शास्त्रीय
(C) निरर्थक
(D) कोनो नहि
४. 'अनिल'जीक गजलक बहर कोन प्रकारक छल, समीक्षा अनुसार?
(A) अरबी बहर/सरल वार्णिक बहर
(B) फारसी बहर
(C) केवल मुक्त छन्द
(D) कोनो नहि
५. समीक्षामे सियाराम झा 'सरस' धीरेन्द्र प्रेमर्षिकें देल इण्टरव्यूमे की कहैत छथि?
(A) मंचस्थ रचनाक फेरमे अनिलजी गुणपर ध्यान देब बिसरि गेला
(B) अनिलजी सर्वश्रेष्ठ छथि
(C) कोनो टिप्पणी नहि
(D) कोनो नहि
६. समीक्षामे 'भगवानक अस्तित्व'क प्रश्न कोन सन्दर्भमे उठाओल गेल?
(A) उत्तर-उपनिवेशवादी रचनाकार लेल एक बुझौअलि
(B) केवल धार्मिक चर्चा
(C) कोनो नहि
(D) विज्ञान
७. समीक्षामे 'नारी चेतना'क स्वरपर की टिप्पणी अछि?
(A) कन्नारोहटक अभाव, बालिका-जन्मपर समाजक शोकक परिचायक
(B) पूर्ण सशक्त स्वर
(C) कोनो नहि
(D) निरर्थक
८. समीक्षा अनुसार पद्यक मूल गुण की होइत अछि?
(A) गेय हएब आ लयमे (नियमबद्ध) हएब
(B) केवल तुक
(C) केवल लम्बाई
(D) कोनो नहि

खण्ड ४१ : विदेह-सदेह १८ — आत्मकथात्मक स्मृति-लेखन (विस्तार)

९. एहि स्मृति-लेखमे माय कोना गीत-संस्कार पाओल छलीह?

- (A) नैहर (अपन मायक घर) सँ
- (B) ससुरालसँ
- (C) विद्यालयसँ
- (D) कोनो नहि

१०. एहि स्मृति-लेखमे पिता कोन पेशासँ जुड़ल छलाह?

- (A) प्रेसमे कम्पोजीटर
- (B) शिक्षक
- (C) डॉक्टर
- (D) कोनो नहि

११. लेखिकाक टोलमे भैयाजी कोन प्रकारक कथा-वाचक छलाह?

- (A) कीर्तनयुक्त कथा-वाचक (डबहारी)
- (B) केवल गायक
- (C) केवल नर्तक
- (D) कोनो नहि

१२. मामागाममे रवि दिनक साँझमे कोन ग्रन्थक कीर्तन-पाठ होइत छल?

- (A) रामचरितमानस
- (B) गीता
- (C) महाभारत
- (D) कोनो नहि

१३. 'मधुपजी'क कोन रचना लेखिकाकेँ हाई स्कूलक कालसँ प्रभावित केने छल?

- (A) एकटा प्रसिद्ध कविता (घसल अठन्नीसँ सम्बद्ध)
- (B) नाटक
- (C) उपन्यास
- (D) कोनो नहि

१४. रवीन्द्रजीक गाममे दुर्गापूजाक अवसरपर की होइत छल?

- (A) तीन-चारि राति नाटक
- (B) केवल पूजा
- (C) केवल भोज
- (D) कोनो नहि

१५. एहि स्मृति-लेखक समग्र विषय की?

- (A) व्यक्तिगत बाल्यकालक सांस्कृतिक-पारिवारिक स्मृति
- (B) केवल राजनीति
- (C) केवल विज्ञान
- (D) कोनो नहि

खण्ड ४४ : विदेह-सदेह १८ — आत्मकथात्मक स्मृति (विस्तार २)

१६. लेखिकाक परिवारक आर्थिक स्थिति कोन घटना सभक बाद कमजोर भेल?

- (A) दू टा कन्यादान आ माताक अस्पताल-खर्च
- (B) केवल व्यापार-हानि
- (C) केवल बाढ़ि
- (D) कोनो नहि

१७. लेखिका अपन उच्च शिक्षाक विषयमे केकरासँ सलाह लेलनि?

- (A) दीदी (नारायणपट्टीमे रहनिहार)
- (B) केवल पिता
- (C) केवल भाइ
- (D) कोनो नहि

१८. लेखिका कोन विषयमे आगाँ पढ़बाक विचार रखैत छलीह?

- (A) बी.एस.सी. (एग्रीकल्चर)
- (B) कला
- (C) वाणिज्य
- (D) कोनो नहि

१९. लेखिकाक प्री-साइंसमे कतेक प्रतिशत अंक छल, स्मृति-लेखक संवाद अनुसार?

- (A) ७७ प्रतिशत
- (B) ६० प्रतिशत
- (C) ५५ प्रतिशत
- (D) कोनो नहि

२०. लेखिका दरभंगा पोलिटेकनिकमे कोन विषयमे एडमिशन लेलनि?

- (A) सिविल इन्जीनियरिंग
- (B) इलेक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग
- (C) मेकानिकल
- (D) कोनो नहि

२१. लेखिका पोलिटेकनिक कोना जाइत-अबैत छलीह?

- (A) गामसँ बससँ
- (B) रेलगाड़ीसँ
- (C) साइकिलसँ
- (D) कोनो नहि

२२. लेखिकाक एडमिशन-इन्टरव्यूमे सीनियर विद्यार्थी लोकनि के प्रश्न पूछैत छलाह?

- (A) व्यक्तिगत आ अनौपचारिक प्रश्न
- (B) केवल शैक्षणिक प्रश्न
- (C) कोनो प्रश्न नहि
- (D) कोनो नहि

२३. एहि स्मृति-लेखक समग्र विषय की?

- (A) एक स्त्रीक शिक्षा-यात्रा आ पारिवारिक संघर्ष
- (B) केवल राजनीति
- (C) केवल धार्मिक कथा
- (D) कोनो नहि

खण्ड 2783 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकूर: सम्पादकीय

२४. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सम्पादकीय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) सम्पादकीय
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

२८. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474मे गजेन्द्र ठाकुरक “सम्पादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “‘विदेह’ पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2784 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’: आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)

३४. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आत्मकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।

३८. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)"कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आत्मकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "ऑखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)" प्रविष्टि गद्य, आत्मकथा आ "अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2785 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल': गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता

४४. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। "गीत-गुंगा" संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।

४८. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। "गीत-गुंगा" संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता"कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी आ “सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत "तोरा अंगनामे" सहित अनेक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2786 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': जगदानन्द झा 'मनु' जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक 'संशोधित गजल-गंगा'

५४. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जगदानन्द झा 'मनु' जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक 'संशोधित गजल-गंगा'” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जगदानन्द झा 'मनु' जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक 'संशोधित गजल-गंगा'
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जगदानन्द झा 'मनु' जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक 'संशोधित गजल-गंगा'”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जगदानन्द झा 'मनु' जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक 'संशोधित गजल-गंगा'”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आत्मालोचनात्मक लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जगदानन्द झा 'मनु' जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक 'संशोधित गजल-गंगा'” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।

५८. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “जगदानन्द झा 'मनु' जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक 'संशोधित गजल-गंगा'” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'गजल-गुंगा' केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आत्मालोचनात्मक लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आत्मालोचनात्मक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” प्रविष्टि गद्य, आत्मालोचनात्मक लेख आ “‘गजल-गंगा’ केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2787 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’

६४. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "मैथिली गजलक संसारमे 'अनचिन्हार आखर'"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "मैथिली गजलक संसारमे 'अनचिन्हार आखर'" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।

६८. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "मैथिली गजलक संसारमे 'अनचिन्हार आखर'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर" वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "मैथिली गजलक संसारमे 'अनचिन्हार आखर'"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "मैथिली गजलक संसारमे 'अनचिन्हार आखर'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "मैथिली गजलक संसारमे 'अनचिन्हार आखर'"कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "मैथिली गजलक संसारमे 'अनचिन्हार आखर'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “आशीष अनचिन्हारक “अनचिन्हार आखर” वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2788 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’: रामक ‘अम्बरा’

७४. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रामक ‘अम्बरा’
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।

७८. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “रामक ‘अम्बरा’”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "रामक 'अम्बरा'" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगौं बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "रामक 'अम्बरा'"कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८२. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "रामक 'अम्बरा'" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "रामक 'अम्बरा'" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "राजदेव मण्डलक कविता संग्रह 'अम्बरा' केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2789 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल': प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल

८४. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सियाराम झा 'सरस' केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।

८८. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सियाराम झा 'सरस' केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल"केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९२. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "सियाराम झा 'सरस' केर गजल संकलन "नोड़े आग नोड़े पानि" केर आलोचनात्मक समीक्षा।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2790 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल': अरविन्दजीक आजाद गजल

१४. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अरविन्दजीक आजाद गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।

१८. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “अरविन्दजीक आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "अरविन्दजीक आजाद गजल"कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०२. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "अरविन्दजीक आजाद गजल" प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "अरविन्दजीक आजाद गजल" प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ "अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह "बहुरुपिया प्रदेशमे" केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2791 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल': कोरांटी (एकांकी)

१०४. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "कोरांटी (एकांकी)" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कोरांटी (एकांकी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "कोरांटी (एकांकी)"क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "कोरांटी (एकांकी)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एकांकी नाटक
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क "कोरांटी (एकांकी)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।

१०८. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “कोरांटी (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “कोरांटी (एकांकी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा एकांकी नाटक
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “कोरांटी (एकांकी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “कोरांटी (एकांकी)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ एकांकी नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११२. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “कोरांटी (एकांकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “कोरांटी (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, एकांकी नाटक आ “विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2792 : विदेह-सदेह 18 — विनीत उत्पल: नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)

११४. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।

११८. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२२. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483मे विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2793 : विदेह-सदेह 18 — कामिनी कामायनी: नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)

१२४. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य/गद्य/गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।

१२८. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्येह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य/गद्य/गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्येह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्येह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य/गद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथाक रूपमे गद्य/गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३२. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: कामिनी कामायनीक “नोम्येह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484मे कामिनी कामायनीक “नोम्येह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य/गद्य/गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा आ “यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2794 : विदेह-सदेह 18 — कामिनी कामायनी: गीत-गंगा (समीक्षा)

१३४. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गीत-गंगा (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।

१३८. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४२. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485मे कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2795 : विदेह-सदेह 18 — रतन झा: मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप

१४४. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना/समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।

१४८. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रतन झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५२. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486मे रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2796 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. विद्यानाथ झा: डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य

१५४. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) निबन्ध/स्वास्थ्य लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।

१५८. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. विद्यानाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/स्वास्थ्य लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ निबन्ध/स्वास्थ्य लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६२. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487मे डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/स्वास्थ्य लेख आ “स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2797 : विदेह-सदेह 18 — कामिनी: गीत-गंगा (समीक्षा)

१६४. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गीत-गंगा (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।

१६८. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कामिनी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७२. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488मे कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन 'गीत-गंगा' पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2798 : विदेह-सदेह 18 — जगदानन्द झा 'मनु': "गजल गंगा" (समीक्षा)

१७४. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) "गजल गंगा" (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गंगा" पर समीक्षा।

१७८. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन "गजल-गंगा" पर समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “"गजल गंगा" (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “'गजल गंगा' (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “'गजल गंगा' (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८२. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: जगदानन्द झा 'मनु'क “'गजल गंगा' (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489मे जगदानन्द झा 'मनु'क “'गजल गंगा' (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन 'गजल-गंगा' पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2799 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. अजीत मिश्र: मैथिल अडना : 'तोरा अंगनामे' (समीक्षा)

१८४. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : 'तोरा अंगनामे' (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिल अडना : 'तोरा अंगनामे' (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : 'तोरा अंगनामे' (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : 'तोरा अंगनामे' (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।

१८८. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अजीत मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९२. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490मे डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "तोरा अंगनामे" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2800 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)

१९४. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) धारक "अइ" पार (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।

१९८. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०२. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491मे आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2801 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: पद्मा नदीक गरीब ब्राह्मण (व्यंग्य)

२०४. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राह्मण (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पद्मा नदीक गरीब ब्राह्मण (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राह्मण (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राह्मण (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राह्मण (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

२०८. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१२. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492मे आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2802 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)

२१४. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।

२१८. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२२. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493मे आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2803 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)

२२४. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।

२२८. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३२. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494मे आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2804 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)

२३४. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।

२३८. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४२. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495मे आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2805 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)

२४४. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

२४८. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)”कँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५२. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496मे आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2806 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हारक: बाल गजल

२५४. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल (बाल)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक

२५८. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल (बाल)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल (बाल)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६२. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497मे आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल (बाल) आ “'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2807 : विदेह-सदेह 18 — परमानन्द प्रभाकरः कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा

२६४. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'गीत-गंगा' केर समीक्षा।

२६८. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'गीत-गंगा' केर समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक परमानन्द प्रभाकर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७२. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498मे परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2808 : विदेह-सदेह 18 — छत्रानन्द सिंह झा: ‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि

२७४. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।

२७८. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'गीत-गंगा' केर समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक छत्रानन्द सिंह झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८२. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499मे छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2809 : विदेह-सदेह 18 — केदार कानन: गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)

२८४. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।

२८८. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'गीत-गुंगा' केर समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९२. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500मे केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “‘गीत-गुंगा’ केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2810 : विदेह-सदेह 18 — केदार कानन: सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)

२९४. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रमानन्द रेणु पर संस्मरण।

२९८. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रमानन्द रेणु पर संस्मरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०२. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501मे केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रमानन्द रेणु पर संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2811 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. अमर नाथ ठाकूर: ‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)

३०४. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'गीत-गंगा' केर समीक्षा।

३०८. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'गीत-गंगा' केर समीक्षा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. अमर नाथ ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१२. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502मे डॉ. अमर नाथ ठाकूरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2812 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”: अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)

३१४. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्व पर प्रकाश डालैत आलेख।

३१८. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्व पर प्रकाश डालैत आलेख।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२२. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503मे डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्व पर प्रकाश डालैत आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2813 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. शशिधर कूमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारी: भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)

३२४. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कथा (विज्ञान)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कूमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल मनोविज्ञानकें ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।

३२८. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल मनोविज्ञानकें ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शशिधर कुमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बाल कथा (विज्ञान)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कथा (विज्ञान)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३२. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504मे डॉ. शशिधर कुमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल कथा (विज्ञान) आ “बाल मनोविज्ञानकें ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2814 : विदेह-सदेह 18 — सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा): जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा

३३४. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य/गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण/व्यंग्य कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अनिलजी पर संस्मरण।

३३८. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अनिलजी पर संस्मरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा), विधा गद्य/गद्य, उप-विधा संस्मरण/व्यंग्य कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा”क विदेह-सदेह 18क गद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरण/व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४२. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505मे सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, संस्मरण/व्यंग्य कथा आ “अनिलजी पर संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2815 : विदेह-सदेह 18 — बाल मुकुन्द पाठक: मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)

३४४. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।

३४८. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५२. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506मे बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2816 : विदेह-सदेह 18 — अरविन्द ठाकुर: ‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)

३५४. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकुरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'गीत-गंगा' पर समीक्षात्मक लेख।

३५८. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'गीत-गंगा' पर समीक्षात्मक लेख।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अरविन्द ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकूरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)”क विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६२. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: अरविन्द ठाकुरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507मे अरविन्द ठाकुरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “‘गीत-गंगा’ पर समीक्षात्मक लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2817 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: (विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)

३६४. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) (विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) साक्षात्कार
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।

३६८. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७२. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508मे मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2818 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: प्रेम विहनि कथा- सेल्फी, बखरा, करोट

३७४. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्फी, बखरा, करोट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रेम विहनि कथा- सेल्फी, बखरा, करोट
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्फी, बखरा, करोट”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।

३७८. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८२. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509मे मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य कथा आ “समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2819 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी

३८४. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समीक्षा/निबन्ध
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ज्योति चौधरीक रचना “देवीजी” केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।

३८८. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ज्योति चौधरीक रचना “देवीजी” केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/निबन्ध
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९२. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510मे मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/निबन्ध आ “ज्योति चौधरीक रचना “देवीजी” केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2820 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)

३९४. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) अनुवाद (लघुकथा)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।

३९८. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद (लघुकथा)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ अनुवाद (लघुकथा)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०२. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511मे मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद (लघुकथा) आ “उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा "मोहनदास" केर मैथिली अनुवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2821 : विदेह-सदेह 18 — राम लोचन ठाकूर: रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)

४०४. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।

४०८. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम लोचन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” के विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१२. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512मे राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2822 : विदेह-सदेह 18 — योगेन्द्र पाठक “वियोगी”: एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)

४१४. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) संस्मरण
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।

४१८. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक योगेन्द्र पाठक “वियोगी”, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२२. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513मे योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2823 : विदेह-सदेह 18 — नवो नारायण मिश्र: युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास

४२४. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलेख/रेखाचित्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्व पर लेख।

४२८. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्व पर लेख।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नवो नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/रेखाचित्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलेख/रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३२. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514मे नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टि गद्य, आलेख/रेखाचित्र आ “राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्व पर लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2824 : विदेह-सदेह 18 — ओम प्रकाश झा: विशोहक नोर (व्यंग्य)

४३४. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विशोहक नोर (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।

४३८. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठकर्तों की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४२. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515मे ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2825 : विदेह-सदेह 18 — ओम प्रकाश झा: मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)

४४४. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४५. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।

४४८. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५०. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५१. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५२. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516मे ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2826 : विदेह-सदेह 18 — अनिल झा: अनटोटल गप (व्यंग्य)

४५४. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अनटोटल गप (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५५. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।

४५८. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अनिल झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६०. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६२. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517मे अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2827 : विदेह-सदेह 18 — रवि भूषण पाठक: दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)

४६४. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।

४६८. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७०. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७२. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518मे रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2828 : विदेह-सदेह 18 — रवि भूषण पाठक: दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)

४७४. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघु कथा (व्यंग्य)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।

४७८. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा (व्यंग्य)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८०. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघु कथा (व्यंग्य)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८२. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519मे रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा (व्यंग्य) आ “नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2829 : विदेह-सदेह 18 — रवि भूषण पाठक: फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)

४८४. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८५. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।

४८८. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८९. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९०. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)”क विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९२. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520मे रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2830 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र

४९४. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९५. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) पत्र
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।

४९८. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा पत्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५००. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” रचना/लेखकका कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०२. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2831 : विदेह-सदेह 18 — राजदेव मण्डल: अवाक (लघुकथा)

५०४. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अवाक (लघुकथा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लघु कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।

५०८. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१०. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१२. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522मे राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2832 : विदेह-सदेह 18 — विन्देश्वर ठाकूर: राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा

५१४. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य/गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य/व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

५१८. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विन्देश्वर ठाकूर, विधा गद्य/गद्य, उप-विधा व्यंग्य/व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२०. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२१. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा”कें विदेह-सदेह 18क गद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२२. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523मे विन्देश्वर ठाकूरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, व्यंग्य/व्यंग्य आ “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2833 : विदेह-सदेह 18 — अब्दुर रज्जाक: किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा

५२४. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य/गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य/व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।

५२८. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य/गद्य, उप-विधा व्यंग्य/व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३०. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३१. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा”कें विदेह-सदेह 18क गद्य/गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३२. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524मे अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, व्यंग्य/व्यंग्य आ “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2834 : विदेह-सदेह 18 — अब्दुर रज्जाक: कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)

५३४. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) लेख
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।

५३८. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा लेख
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४०. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४२. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525मे अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2835 : विदेह-सदेह 18 — अब्दुर रज्जाक: दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्टाज)

५४४. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्टाज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्टाज)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४५. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्टाज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्टाज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।

५४८. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५०. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५२. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526मे अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2836 : विदेह-सदेह 18 — उमेश मण्डल: मुड़नक मुर (व्यंग्य)

५५४. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मुड़नक मुर (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।

५५८. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५९. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६०. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६१. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६२. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527मे उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2837 : विदेह-सदेह 18 — उमेश मण्डल: रिपोटा-- सगर राति दीप जरल

५६४. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रिपोटा-- सगर राति दीप जरल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६५. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्ताज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'सगर राति दीप जरल' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।

५६८. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'सगर राति दीप जरल' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६९. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७०. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७१. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल”केँ विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७२. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528मे उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “‘सगर राति दीप जरल’ साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2838 : विदेह-सदेह 18 — उमेश मण्डल: 88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)

५७४. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) 88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्ताज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।

५७८. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८०. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८२. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529मे उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्टाज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्टाज आ “मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2839 : विदेह-सदेह 18 — अखिलेश कुमार: बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्टाज)

५८४. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्टाज)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्टाज)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्टाज)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्टाज)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्टाज)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।

५८८. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्टाज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्टाज)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अखिलेश कुमार, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९०. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)”क विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९२. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530मे अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2840 : विदेह-सदेह 18 — राम विलास साहः ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)

५९४. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९७. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।

५९८. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९९. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६००. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०१. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०२. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531मे राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2841 : विदेह-सदेह 18 — राम विलास साहः चोर-सिपाही (व्यंग्य)

६०४. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) चोर-सिपाही (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०५. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०७. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।

६०८. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०९. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१०. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६११. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१२. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532मे राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2842 : विदेह-सदेह 18 — राम विलास साह: जाति (व्यंग्य)

६१४. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) जाति (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१५. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१६. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।

६१८. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१९. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२०. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२१. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२२. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533मे राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2843 : विदेह-सदेह 18 — लक्ष्मी दास: बापक धरम (व्यंग्य)

६२४. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बापक धरम (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२५. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२६. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।

६२८. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२९. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३०. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३१. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३२. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534मे लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2844 : विदेह-सदेह 18 — ललन कुमार कामत: बाबाक लोटा (व्यंग्य)

६३४. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाबाक लोटा (व्यंग्य)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३५. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) व्यंग्य
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३७. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।

६३८. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३९. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४०. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४१. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)”कें विदेह-सदेह 18क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४२. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535मे ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2845 : विदेह-सदेह 18 — मुन्नाजी: गजल, कविता ऐब की बेरिया

६४४. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल, कविता ऐब की बेरिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४५. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४७. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।

६४८. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४९. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५०. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५१. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया”क विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५२. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536मे मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2846 : विदेह-सदेह 18 — रमेश: ताजीवन हमर नहि (कविता)

६५४. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ताजीवन हमर नहि (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५५. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५६. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।

६५८. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५९. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६०. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६१. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)”कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६२. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537मे रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2847 : विदेह-सदेह 18 — नन्द विलास रायः नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार

६६४. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६५. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६६. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६७. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।

६६८. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६९. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७०. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७१. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार”कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७२. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७३. खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538मे नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2848 : विदेह-सदेह 18 — कामिनी कामायनी: अंकोरवट मन्दिर (कविता)

६७४. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अंकोरवट मन्दिर (कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७५. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७६. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७७. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।

६७८. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७९. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८०. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८१. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)”कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८२. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८३. खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539मे कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2849 : विदेह-सदेह 18 — किशन कारीगर: इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)

६८४. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८५. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८६. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८७. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।

६८८. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८९. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९०. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९१. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)”कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९२. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540मे किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2850 : विदेह-सदेह 18 — आशीष अनचिन्हार: बाल गजल

६९४. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बाल गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९५. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९६. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल (बाल)
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९७. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।

६९८. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९९. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल (बाल)
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७००. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०१. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल”कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल (बाल)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७०२. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०३. खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541मे आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल (बाल) आ “बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2851 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”: मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,

७०४. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०५. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०६. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बाल कविता/प्रकृति कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०७. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।

७०८. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०९. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता/प्रकृति कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१०. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७११. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,”कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बाल कविता/प्रकृति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१२. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१३. खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542मे डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता/प्रकृति कविता आ “बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2852 : विदेह-सदेह 18 — जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल': गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता

७१४. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१५. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१६. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१७. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्वयं रचना।

७१८. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्वयं रचना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१९. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२०. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२१. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता”कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२२. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२३. खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी आ “स्वयंक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2853 : विदेह-सदेह 18 — जगदानन्द झा 'मनु': गजल

७२४. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२५. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२६. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२७. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) स्वयंक रचना।

७२८. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) स्वयं रचना।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२९. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३०. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३१. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३२. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३३. खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544मे जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “स्वयं रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2854 : विदेह-सदेह 18 — दिलीप कुमार साह: अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...

७३४. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३५. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३६. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत/गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३७. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।

७३८. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३९. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक दिलीप कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४०. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” रचना/लेखकक कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४१. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...”कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीत/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४२. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४३. खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545मे दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल आ “प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2855 : विदेह-सदेह 18 — विनीता झा: रखबार राघव (भक्तिगीत)

७४४. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) रखबार राघव (भक्तिगीत)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४५. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४६. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) भक्तिगीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४७. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।

७४८. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४९. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५०. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५१. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ भक्तिगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५२. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५३. खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546मे विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत आ “राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2856 : विदेह-सदेह 18 — विकास झा: एले फागुन मास सखी हे (गीत)

७५४. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) एले फागुन मास सखी हे (गीत)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५५. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५६. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५७. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।

७५८. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५९. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विकास झा, विधा पद्य, उप-विधा गीत
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६०. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६१. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)”केँ विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६२. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६३. खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547मे विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2857 : विदेह-सदेह 18 — नीरज कर्ण: गजल

७६४. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६५. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६६. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६७. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जीवनक विडम्बनापर गजल।

७६८. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जीवनक विडम्बनापर गजल।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६९. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नीरज कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७०. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७१. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल”कें विदेह-सदेह 18क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७२. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 18क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७३. खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548मे नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवनक विडम्बनापर गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 5347 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकुर — संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)

७७४. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७७५. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७७६. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’कें संपादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७७७. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७७८. ‘संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७७९. 'संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७८०. 'संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७८१. 'संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७८२. 'संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)'मे संपादकीयक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) संपादकीयक रूप कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७८३. 'संपादकीय (बाढ़िपर विशेष)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5348 : विदेह-सदेह 18 — श्याम सुन्दर शशि — कतारसँ

७८४. 'कतारसँ'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७८५. 'कतारसँ'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७८६. 'कतारसँ'केँ रिपोर्टाज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७८७. 'कतारसँ'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७८८. 'कतारसँ'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७८९. 'कतारसँ'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

७९०. 'कतारसँ'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

७९१. 'कतारसँ' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७९२. 'कतारसँ'मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) रिपोर्ताजक रूप कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७९३. 'कतारसँ' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5349 : विदेह-सदेह 18 — जितेन्द्र झा — कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद

७९४. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

७९५. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

७९६. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद'केँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

७९७. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७९८. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

७९९. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८००. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८०१. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्टक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८०२. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद'मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) रिपोर्ताजक रूप दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८०३. 'कोशी सन बेददी कोइ ने / बिछियाक आर्तनाद' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5350 : विदेह-सदेह 18 — नवेन्दु कुमार झा — पटनासँ

८०४. 'पटनासँ'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८०५. 'पटनासँ'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८०६. 'पटनासँ'केँ रिपोर्टाज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८०७. 'पटनासँ'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८०८. 'पटनासँ'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८०९. 'पटनासँ'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८१०. 'पटनासँ'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८११. 'पटनासँ' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८१२. 'पटनासँ'मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) रिपोर्ताजक रूप बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८१३. 'पटनासँ' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5351 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. गंगेश गुंजन — गुंजनजीक विचार-टिप्पणी

८१४. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८१५. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८१६. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी'केँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८१७. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८१८. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८१९. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८२०. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८२१. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८२२. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी'मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) रिपोर्ताजक रूप मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८२३. 'गुंजनजीक विचार-टिप्पणी' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5352 : विदेह-सदेह 18 — बी.के. कर्ण — बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन

८२४. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८२५. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८२६. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन'केँ रिपोर्ताज रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८२७. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८२८. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८२९. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८३०. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८३१. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८३२. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन'मे रिपोर्ताजक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) रिपोर्ताजक रूप मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८३३. 'बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5353 : विदेह-सदेह 18 — शम्भू कुमार सिंह — जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)

८३४. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८३५. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८३६. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)'कै गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८३७. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८३८. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८३९. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८४०. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८४१. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८४२. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)'मे गद्यक रूप कथ्य कै कोना सहारा दैत अछि?

- (A) गद्यक रूप मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख कै स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकै मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८४३. 'जाग' जाग' महादेव ! (कथा-निबन्ध)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकें मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5354 : विदेह-सदेह 18 — कुमार मनोज कश्यप — हारल मनुक्ख (लघु-कथा)

८४४. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८४५. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८४६. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)'कें गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८४७. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८४८. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८४९. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८५०. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८५१. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८५२. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)'मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) गद्यक रूप एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८५३. 'हारल मनुक्ख (लघु-कथा)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5355 : विदेह-सदेह 18 — प्रो. प्रेमशंकर सिंह / गजेन्द्र ठाकुर — पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश

८५४. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८५५. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८५६. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश'केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८५७. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८५८. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८५९. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८६०. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८६१. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८६२. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश'मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) गद्यक रूप 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८६३. 'पुस्तक-समीक्षा: नो एण्ट्री: मा प्रविश' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ 'नचिकेता' कृत नाटकक विस्तृत समीक्षा धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5356 : विदेह-सदेह 18 — कमलानन्द झा / देवशंकर नवीन — उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)

८६४. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८६५. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८६६. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)'केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८६७. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८६८. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८६९. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८७०. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८७१. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८७२. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)'मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) गद्यक रूप देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८७३. 'उदाहरण (पुस्तक-समीक्षा)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5357 : विदेह-सदेह 18 — देवशंकर नवीन — शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी

८७४. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८७५. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८७६. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी'कें गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८७७. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८७८. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८७९. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८८०. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८८१. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८८२. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी'मे गद्यक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) गद्यक रूप राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८८३. 'शोध लेख- स्व. राजकमल चौधरी' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5358 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — यायावरी

८८४. 'यायावरी'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८८५. 'यायावरी'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८८६. 'यायावरी'केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८८७. 'यायावरी'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८८८. 'यायावरी'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८८९. 'यायावरी'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

८९०. 'यायावरी'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

८९१. 'यायावरी' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

८९२. 'यायावरी'मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) गद्यक रूप नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

८९३. 'यायावरी' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5359 : विदेह-सदेह 18 — स्व. राजकमल चौधरी — कोसी गद्य: अपराजिता

८९४. 'कोसी गद्य: अपराजिता'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

८९५. 'कोसी गद्य: अपराजिता'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

८९६. 'कोसी गद्य: अपराजिता'केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

८९७. 'कोसी गद्य: अपराजिता'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

८९८. 'कोसी गद्य: अपराजिता'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

८९९. 'कोसी गद्य: अपराजिता'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९००. 'कोसी गद्य: अपराजिता'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९०१. 'कोसी गद्य: अपराजिता' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९०२. 'कोसी गद्य: अपराजिता'मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) गद्यक रूप बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९०३. 'कोसी गद्य: अपराजिता' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5360 : विदेह-सदेह 18 — रामभरोस कापड़ि "भ्रमर" — कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध

९०४. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९०५. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९०६. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध'केँ गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९०७. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९०८. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९०९. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९१०. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९११. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९१२. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध'मे गद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) गद्यक रूप कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९१३. 'कोसी गद्य: कोसीक बाढ़ि पर निबन्ध' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5361 : विदेह-सदेह 18 — स्व. रामजी चौधरी — विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी

९१४. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९१५. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९१६. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी'कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९१७. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९१८. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९१९. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९२०. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९२१. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९२२. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी'मे पद्यक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१२३. 'विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5362 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. गंगेश गुंजन — बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)

१२४. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१२५. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१२६. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१२७. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१२८. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१२९. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१३०. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९३१. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजलक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९३२. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)' मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९३३. 'बाढ़िक त्रासदी-पर (गजल)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5363 : विदेह-सदेह 18 — डॉ. गंगेश गुंजन — राधा (चारिम खेप)

९३४. 'राधा (चारिम खेप)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९३५. 'राधा (चारिम खेप)' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९३६. 'राधा (चारिम खेप)' केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९३७. 'राधा (चारिम खेप)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९३८. 'राधा (चारिम खेप)' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९३९. 'राधा (चारिम खेप)'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९४०. 'राधा (चारिम खेप)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९४१. 'राधा (चारिम खेप)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्तिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९४२. 'राधा (चारिम खेप)'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९४३. 'राधा (चारिम खेप)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5364 : विदेह-सदेह 18 — ज्योति झा चौधरी — कोसीक प्रकोप

९४४. 'कोसीक प्रकोप'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९४५. 'कोसीक प्रकोप'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९४६. 'कोसीक प्रकोप'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९४७. 'कोसीक प्रकोप'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९४८. 'कोसीक प्रकोप'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९४९. 'कोसीक प्रकोप'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९५०. 'कोसीक प्रकोप'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९५१. 'कोसीक प्रकोप' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविताक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९५२. 'कोसीक प्रकोप'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९५३. 'कोसीक प्रकोप' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5365 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकुर — बुद्ध चरित (प्रथम खेप)

९५४. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१५५. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)' में कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१५६. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)' केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१५७. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)' क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५८. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१५९. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१६०. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१६१. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंशक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६२. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)' मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६३. 'बुद्ध चरित (प्रथम खेप)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ महाकाव्य 'बुद्ध चरित' केर प्रारम्भिक अंश धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5366 : विदेह-सदेह 18 — विनीत उत्पल — पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल

१६४. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१६५. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१६६. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१६७. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६८. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१६९. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१७०. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९७१. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्यक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९७२. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९७३. 'पार्टनर, अहांक मूल की / नहि टाइम अपना लेल' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मिथिलाक संस्कार आ नौकरीक यान्त्रिक जीवन पर व्यंग्य धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5367 : विदेह-सदेह 18 — अंकुर झा — सरकारी योजना

९७४. 'सरकारी योजना'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९७५. 'सरकारी योजना'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९७६. 'सरकारी योजना'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९७७. 'सरकारी योजना'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९७८. 'सरकारी योजना'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९७९. 'सरकारी योजना'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९८०. 'सरकारी योजना'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९८१. 'सरकारी योजना' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९८२. 'सरकारी योजना'मे पद्यक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) पद्यक रूप सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९८३. 'सरकारी योजना' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5368 : विदेह-सदेह 18 — ज्योति झा चौधरी / नूतन झा — मिथिला कला/ दुर्गा पूजा

९८४. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

९८५. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

९८६. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा'केँ कला/संस्कृति रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

९८७. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

९८८. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

९८९. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

९९०. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

९९१. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९९२. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा'मे कला/संस्कृतिक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) कला/संस्कृतिक रूप ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

९९३. 'मिथिला कला/ दुर्गा पूजा' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5369 : विदेह-सदेह 18 — नूतन झा — शरत्पूर्णिमा/कोजगरा

९९४. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१९५. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१९६. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा'कें संस्कृति रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१९७. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१९८. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१९९. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०००. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१००१. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१००२. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा'मे संस्कृतिक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) संस्कृतिक रूप मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१००३. 'शरत्पूर्णिमा/कोजगरा' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकें मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5370 : विदेह-सदेह 18 — जितमोहन झा — नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?

१००४. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१००५. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१००६. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?'कें महिला-स्तंभ रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१००७. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१००८. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१००९. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०१०. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०११. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०१२. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?'मे महिला-स्तंभक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) महिला-स्तंभक रूप समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०१३. 'नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक?' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5371 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकुर — भाट-भाटिन/ बत्तू

१०१४. 'भाट-भाटिन/ बत्तू'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) सचित्र बाल-कथा
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०१५. 'भाट-भाटिन/ बत्तू'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) सचित्र बाल-कथा
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०१६. 'भाट-भाटिन/ बत्तू'केँ बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) सचित्र बाल-कथा
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०१७. 'भाट-भाटिन/ बत्तू'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक सचित्र बाल-कथा दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०१८. 'भाट-भाटिन/ बत्तू'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) सचित्र बाल-कथा
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०१९. 'भाट-भाटिन/ बत्तू'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) सचित्र बाल-कथा
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०२०. 'भाट-भाटिन/ बत्तू'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) सचित्र बाल-कथा
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०२१. 'भाट-भाटिन/ बत्तू' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) सचित्र बाल-कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०२२. 'भाट-भाटिन/ बत्तू'मे बालानां कृतेक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) बालानां कृतेक रूप सचित्र बाल-कथा केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०२३. 'भाट-भाटिन/ बत्तू' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ सचित्र बाल-कथा धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5372 : विदेह-सदेह 18 — ज्योति झा चौधरी — देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक

१०२४. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०२५. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०२६. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक'केँ बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०२७. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०२८. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०२९. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०३०. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०३१. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०३२. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक'मे बालानां कृतेक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) बालानां कृतेक रूप शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०३३. 'देवीजी: वृक्षारोपण / श्लोक' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5373 : विदेह-सदेह 18 — - (सम्पादकीय) — मैथिलीक मानक लेखन-शैली

१०३४. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०३५. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०३६. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली'कें भाषा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०३७. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०३८. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०३९. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०४०. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०४१. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०४२. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली'मे भाषाक रूप कथ्य कें कोना सहारा दैत अछि?

- (A) भाषाक रूप मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति कें स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकें मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०४३. 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5374 : विदेह-सदेह 18 — - (सम्पादकीय) — Marriage dates / Festivals of Mithila

१०४४. 'Marriage dates / Festivals of Mithila'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०४५. 'Marriage dates / Festivals of Mithila'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०४६. 'Marriage dates / Festivals of Mithila'केँ सूची रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०४७. 'Marriage dates / Festivals of Mithila'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०४८. 'Marriage dates / Festivals of Mithila'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०४९. 'Marriage dates / Festivals of Mithila'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०५०. 'Marriage dates / Festivals of Mithila'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०५१. 'Marriage dates / Festivals of Mithila' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूचीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०५२. 'Marriage dates / Festivals of Mithila'मे सूचीक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) सूचीक रूप वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०५३. 'Marriage dates / Festivals of Mithila' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5375 : विदेह-सदेह 18 — ज्योति झा चौधरी — SahasraBarhani: The Comet (भाग १)

१०५४. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०५५. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०५६. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)'केँ अंग्रेजी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०५७. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०५८. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०५९. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०६०. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०६१. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०६२. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)' मे अंग्रेजीक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) अंग्रेजीक रूप गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०६३. 'SahasraBarhani: The Comet (भाग १)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यासक अंग्रेजी अनुवाद धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5376 : विदेह-सदेह 18 — - (सम्पादकीय) — VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT

१०६४. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT' क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०६५. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०६६. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT' केँ अंग्रेजी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०६७. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०६८. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०६९. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT'क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०७०. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०७१. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०७२. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT'मे अंग्रेजीक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) अंग्रेजीक रूप मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०७३. 'VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ मिथिलाक ऐतिहासिक शासक ओइनवार वंश पर अंग्रेजीमे लेख धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5377 : विदेह-सदेह 18 — गजेन्द्र ठाकुर — VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR

१०७४. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

- (A) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
- (B) केवल क्रमांक-सूची
- (C) बाहरी सजावट
- (D) असम्बद्ध सूचना

१०७५. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR' मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

- (A) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
- (B) कागजक आकार
- (C) सिरिफ तिथि
- (D) प्रचारात्मक वाक्य

१०७६. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR' केँ शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

- (A) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन
- (C) स्रोत-बाह्य घटना
- (D) यादृच्छिक अनुमान

१०७७. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR' क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

- (A) शीर्षक अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ दिस संकेत करैत अछि
- (B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि
- (C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि
- (D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१०७८. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR' मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

- (A) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
- (B) सूचीगणना मात्र
- (C) असम्बद्ध हास्य
- (D) बाहरी विज्ञापन

१०७९. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR' क गलत पठन कोन होएत?

- (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब
- (B) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
- (C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब
- (D) अर्थाधारित पठन करब

१०८०. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR' मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

- (A) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ
- (B) निजी लाभक हिसाब
- (C) सैनिक आदेश
- (D) खेलक परिणाम

१०८१. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

- (A) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब
- (B) क्रमांकक गिनती पूछब
- (C) कागजक आकार पूछब
- (D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१०८२. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR' मे शिक्षाक रूप कथ्य केँ कोना सहारा दैत अछि?

- (A) शिक्षाक रूप अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ केँ स्पष्ट करैत अछि
- (B) रूप कथ्यकेँ मिटा दैत अछि
- (C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०८३. 'VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

- (A) उत्तरकेँ अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ धरि सीमित राखब
- (B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब
- (C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब
- (D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय ३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — विदेह-सदेह १८ मे गजेन्द्र ठाकुर जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क पद्यक विस्तृत समीक्षा करैत छथि।
२. (A) कवि — गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि जे अनिलजी मूलतः कवि छथि, ओना गद्य समालोचनापर सेहो हुनकर लिखना लिखाएल अछि।
३. (A) झोंकमे लिखल गजल, लौलवश नहि — समीक्षामे कहल गेल जे अनिलजीक रदीफ-काफियाक प्रयोग 'लौलवश लिखल गजल नहि वरन् झोंकमे लिखल गजल' अछि।
४. (A) अरबी बहर/सरल वार्णिक बहर — समीक्षा अनुसार जखन अनिलजीक गजल-संग्रह आएल तँ ओकर सभटा गजल अरबी बहर/सरल वार्णिक बहरमे छल।
५. (A) मंचस्थ रचनाक फेरमे अनिलजी गुणपर ध्यान देब बिसरि गेला — सियाराम झा 'सरस' कहैत छथि जे मंचस्थ रचनाक फेरमे (वाहवाही पाबए लेल) अनिलजी कखनो रचनाक गुणपर ध्यान देब बिसरि गेला।
६. (A) उत्तर-उपनिवेशवादी रचनाकार लेल एक बुझौअलि — समीक्षामे कहल गेल जे भगवानक अस्तित्वक प्रश्न उत्तर-उपनिवेशवादी (पोस्ट-कोलोनियल) रचनाकार लेल एकटा दुविधा/बुझौअलि अछि।
७. (A) कन्नारोहटक अभाव, बालिका-जन्मपर समाजक शोकक परिचायक — समीक्षामे टिप्पणी अछि जे नारी चेतनाक स्वरमे कन्नारोहटक अभाव अछि, जे बालिकाक आगमनपर समाजमे होइत शोकक परिचायक थिक।
८. (A) गेय हएब आ लयमे (नियमबद्ध) हएब — समीक्षा अनुसार पद्यक मूल गुण गेय हएब आ लयमे — माने नियमबद्ध — हएब थिक।
९. (A) नैहर (अपन मायक घर) सँ — लेखिकाक माय अपन गीत-संस्कार नैहरसँ पाओल छलीह, आ विभिन्न अवसरपर स्त्रीगणक संग गीत गाबैत छलीह।
१०. (A) प्रेसमे कम्पोजीटर — लेखिकाक पिता प्रेसमे कम्पोजीटरक काज करैत छलाह, आ किताब पढ़ब-कविता रटबाक लेल प्रेरित करैत छलाह।
११. (A) कीर्तनयुक्त कथा-वाचक (डबहारी) — टोलक भैयाजी डबहारीक छलाह आ कीर्तनयुक्त कथा रोचक ढंगसँ कहैत छलाह।
१२. (A) रामचरितमानस — मामागाममे रवि दिनक साँझमे रामचरितमानसक कीर्तनक रूपमे पाठ होइत छल।
१३. (A) एकटा प्रसिद्ध कविता (घसल अठन्नीसँ सम्बद्ध) — लेखिका अनुसार हाई स्कूलमे पढ़ल मधुपजीक एकटा कविता बहुत प्रभावकारी छल, जे आइयो हुनका मोन पड़ैत अछि।
१४. (A) तीन-चारि राति नाटक — रवीन्द्रजीक गाम (यमसम) मे दुर्गापूजाक अवसरपर हर साल तीन-चारि राति नाटक होइत छल।
१५. (A) व्यक्तिगत बाल्यकालक सांस्कृतिक-पारिवारिक स्मृति — एहि स्मृति-लेखक समग्र विषय लेखिकाक बाल्यकालक सांस्कृतिक-पारिवारिक स्मृति (माय-पिता, गाम, टोल, कीर्तन-गीत-परम्परा) थिक।
१६. (A) दू टा कन्यादान आ माताक अस्पताल-खर्च — लेखिका अनुसार दू टा कन्यादान आ बादमे माताक अस्पताल-खर्च आ देहान्तक बाद घरक आर्थिक स्थिति कमजोर भऽ गेल छल।
१७. (A) दीदी (नारायणपट्टीमे रहनिहार) — लेखिका नारायणपट्टीमे रहनिहार अपन दीदी लग जाए अपन विचार कहलनि।
१८. (A) बी.एस.सी. (एग्रीकल्चर) — लेखिका बी.एस.सी. (एजी, अर्थात् एग्रीकल्चर) मे नाम लिखेबाक विचार रखैत छलीह, यदि ६०% सँ बेसी अंक आबय।
१९. (A) ७७ प्रतिशत — स्मृति-लेखक संवाद अनुसार प्री-साइंसमे लेखिकाक ७७% अंक छल, मुदा सेकंड डिवीजन (बी.एस.सी. पार्ट १) मे ५५% भेल।
२०. (A) सिविल इन्जीनियरिंग — लेखिका दरभंगा पोलिटेकनिकमे सिविल विषयमे एडमिशन लेलनि।
२१. (A) गामसँ बससँ — लेखिका गामसँ बससँ पोलिटेकनिक जाए-आबए छलीह।
२२. (A) व्यक्तिगत आ अनौपचारिक प्रश्न — स्मृति-लेखक संवाद अनुसार एडमिशनक समय सीनियर विद्यार्थी लोकनि नाम, घर, अंक सन शैक्षणिक प्रश्नक संग व्यक्तिगत आ अनौपचारिक प्रश्न सेहो पूछैत छलाह।

२३. (A) एक स्त्रीक शिक्षा-यात्रा आ पारिवारिक संघर्ष — एहि स्मृति-लेखक समग्र विषय लेखिकाक शिक्षा-यात्रा, पारिवारिक आर्थिक संघर्ष आ कैरियर-निर्णयक प्रामाणिक चित्रण थिक।
२४. (A) सम्पादकीय — सूचकांक पंक्ति 1474मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “सम्पादकीय” रूपमे देल अछि।
२५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२६. (C) सम्पादकीय — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।
२७. (D) 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” अछि।
२८. (A) 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।
२९. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३१. (D) ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३. (B) खण्ड 2783, सूचकांक पंक्ति 1474मे गजेन्द्र ठाकूरक “सम्पादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४. (A) आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..) — सूचकांक पंक्ति 1475मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” रूपमे देल अछि।
३५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६. (C) आत्मकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आत्मकथा” अछि।
३७. (D) अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज। — टिप्पणीक पहिल संकेत “अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।” अछि।
३८. (A) अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।” रूपमे देखाइत अछि।
३९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आत्मकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४१. (D) ई पाठ आत्मकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३. (B) खण्ड 2784, सूचकांक पंक्ति 1475मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “आँखिमे चित्र हो मैथिली करे (आत्म कथा) खण्ड ०-२९ (जारी..)” प्रविष्टि गद्य, आत्मकथा आ “अनिलजीक विस्तृत आत्मकथा। मैथिली गीत-गजल लेखनक प्रेरणा, परिवार, संघर्ष, आ साहित्यिक साधनाक जीवन्त दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४. (A) गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता — सूचकांक पंक्ति 1476मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” रूपमे देल अछि।
४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४६. (C) गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी” अछि।
४७. (D) सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत “तोरा अंगनामे” सहित अनेक रचना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत “तोरा अंगनामे” सहित अनेक रचना।” अछि।

४८. (A) सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत “तोरा अंगनामे” सहित अनेक रचना। —

समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत “तोरा अंगनामे” सहित अनेक रचना।” रूपमे देखाइत अछि।

४९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५१. (D) ई पाठ गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५३. (B) खण्ड 2785, सूचकांक पंक्ति 1476मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी आ “सरल वानणिक बहरमे गजल रचना। “गीत-गुंगा” संकलनक रचनाकार। लोकप्रिय गीत “तोरा अंगनामे” सहित अनेक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५४. (A) जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’ — सूचकांक पंक्ति 1477मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क प्रविष्टि “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” रूपमे देल अछि।

५५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५६. (C) आत्मालोचनात्मक लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आत्मालोचनात्मक लेख” अछि।

५७. (D) ‘गजल-गुंगा’ केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘गजल-गुंगा’ केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।” अछि।

५८. (A) ‘गजल-गुंगा’ केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘गजल-गुंगा’ केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।” रूपमे देखाइत अछि।

५९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा आत्मालोचनात्मक लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६१. (D) ई पाठ आत्मालोचनात्मक लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६३. (B) खण्ड 2786, सूचकांक पंक्ति 1477मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क “जगदानन्द झा ‘मनु’ जे त्रुटिक उल्लेख केलनि तकर परिणाम थिक ‘संशोधित गजल-गंगा’” प्रविष्टि गद्य, आत्मालोचनात्मक लेख आ “‘गजल-गुंगा’ केर त्रुटिसभक संशोधन। रचनाकारक आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण आ साहित्यिक ईमानदारी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६४. (A) मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’ — सूचकांक पंक्ति 1478मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क प्रविष्टि “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” रूपमे देल अछि।

६५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६६. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

६७. (D) आशीष अनचिन्हारक “अनचिन्हार आखर” वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख। — टिप्पणीक पहिल संकेत “आशीष अनचिन्हारक “अनचिन्हार आखर” वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।” अछि।

६८. (A) आशीष अनचिन्हारक “अनचिन्हार आखर” वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “आशीष अनचिन्हारक “अनचिन्हार आखर” वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।” रूपमे देखाइत अछि।

६९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७१. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७३. (B) खण्ड 2787, सूचकांक पंक्ति 1478मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “आशीष अनचिन्हारक “अनचिन्हार आखर” वेबसाइट आ गजल संकलनक समीक्षात्मक लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७४. (A) रामक ‘अम्बरा’ — सूचकांक पंक्ति 1479मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क प्रविष्टि “रामक ‘अम्बरा’” रूपमे देल अछि।
७५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
७७. (D) राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।” अछि।
७८. (A) राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।” रूपमे देखाइत अछि।
७९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
८१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
८२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
८३. (B) खण्ड 2788, सूचकांक पंक्ति 1479मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “रामक ‘अम्बरा’” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “राजदेव मण्डलक कविता संग्रह ‘अम्बरा’ केर समीक्षा। समकालीन मैथिली कविताक एकटा श्रेष्ठ उदाहरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
८४. (A) प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल — सूचकांक पंक्ति 1480मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क प्रविष्टि “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” रूपमे देल अछि।
८५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
८६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
८७. (D) सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन “नोड़े आग नोड़े पानि” केर आलोचनात्मक समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन “नोड़े आग नोड़े पानि” केर आलोचनात्मक समीक्षा।” अछि।
८८. (A) सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन “नोड़े आग नोड़े पानि” केर आलोचनात्मक समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन “नोड़े आग नोड़े पानि” केर आलोचनात्मक समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।
८९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
९१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
९२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
९३. (B) खण्ड 2789, सूचकांक पंक्ति 1480मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क “प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “सियाराम झा ‘सरस’ केर गजल संकलन “नोड़े आग नोड़े पानि” केर आलोचनात्मक समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४. (A) अरविन्दजीक आजाद गजल — सूचकांक पंक्ति 1481मे जगदीश चन्द्र ठाकूर 'अनिल'क प्रविष्टि “अरविन्दजीक आजाद गजल” रूपमे देल अछि।
१५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१७. (D) अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह “बहुरुपिया प्रदेशमे” केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श। — टिप्पणीक पहिल संकेत “अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह “बहुरुपिया प्रदेशमे” केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।” अछि।
१८. (A) अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह “बहुरुपिया प्रदेशमे” केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह “बहुरुपिया प्रदेशमे” केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।” रूपमे देखाइत अछि।
१९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१०१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०३. (B) खण्ड 2790, सूचकांक पंक्ति 1481मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “अरविन्दजीक आजाद गजल” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “अरविन्द ठाकुरजीक गजल संग्रह “बहुरुपिया प्रदेशमे” केर समीक्षा। आजाद गजलक अवधारणा पर विमर्श।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०४. (A) कोरांटी (एकांकी) — सूचकांक पंक्ति 1482मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क प्रविष्टि “कोरांटी (एकांकी)” रूपमे देल अछि।
१०५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०६. (C) एकांकी नाटक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “एकांकी नाटक” अछि।
१०७. (D) विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी। — टिप्पणीक पहिल संकेत “विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।” अछि।
१०८. (A) विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।” रूपमे देखाइत अछि।
१०९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’, विधा गद्य, उप-विधा एकांकी नाटक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
११०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१११. (D) ई पाठ एकांकी नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
११२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११३. (B) खण्ड 2791, सूचकांक पंक्ति 1482मे जगदीश चन्द्र ठाकूर ‘अनिल’क “कोरांटी (एकांकी)” प्रविष्टि गद्य, एकांकी नाटक आ “विधवा-विवाह जकाँ सामाजिक समस्यापर लिखल गेल सशक्त एकांकी।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११४. (A) नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी) — सूचकांक पंक्ति 1483मे विनीत उत्पलक प्रविष्टि “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” रूपमे देल अछि।
११५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
११७. (D) जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।” अछि।
११८. (A) जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

११९. (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१२२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२३. (B) खण्ड 2792, सूचकांक पंक्ति 1483मे विनीत उत्पलक “नव दिशाक कथा (जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह “गामक जिनगी” पर समीक्षात्मक लेख। ग्रामीण जीवनक यथार्थवादी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२४. (A) नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा) — सूचकांक पंक्ति 1484मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।
१२५. (B) गद्य/गद्य/गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/गद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२६. (C) यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा” अछि।
१२७. (D) यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।” अछि।
१२८. (A) यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।” रूपमे देखाइत अछि।
१२९. (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य/गद्य/गद्य, उप-विधा यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३१. (D) ई पाठ यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथाक रूपमे गद्य/गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१३२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३३. (B) खण्ड 2793, सूचकांक पंक्ति 1484मे कामिनी कामायनीक “नोम्पेह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य/गद्य/गद्य, यात्रा-वृत्तान्त/यात्रा-वृत्तान्त/लघुकथा आ “यात्रा-वृत्तान्त आ लघुकथा लेखनमे पारंगत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३४. (A) गीत-गंगा (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 1485मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “गीत-गंगा (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
१३५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१३७. (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।” अछि।
१३८. (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।
१३९. (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१४२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४३. (B) खण्ड 2794, सूचकांक पंक्ति 1485मे कामिनी कामायनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड

एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४४. (A) मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप — सूचकांक पंक्ति 1486मे रतन झाक प्रविष्टि “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” रूपमे देल अछि।

१४५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४६. (C) आलोचना/समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना/समीक्षा” अछि।

१४७. (D) समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन। — टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।” अछि।

१४८. (A) समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।” रूपमे देखाइत अछि।

१४९. (B) लेखक रतन झा, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना/समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५१. (D) ई पाठ आलोचना/समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१५२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५३. (B) खण्ड 2795, सूचकांक पंक्ति 1486मे रतन झाक “मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप” प्रविष्टि गद्य, आलोचना/समीक्षा आ “समकालीन मैथिली उपन्यासक सिंहावलोकन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५४. (A) डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य — सूचकांक पंक्ति 1487मे डॉ. विद्यानाथ झाक प्रविष्टि “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” रूपमे देल अछि।

१५५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५६. (C) निबन्ध/स्वास्थ्य लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निबन्ध/स्वास्थ्य लेख” अछि।

१५७. (D) स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।” अछि।

१५८. (A) स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।” रूपमे देखाइत अछि।

१५९. (B) लेखक डॉ. विद्यानाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध/स्वास्थ्य लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६१. (D) ई पाठ निबन्ध/स्वास्थ्य लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१६२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६३. (B) खण्ड 2796, सूचकांक पंक्ति 1487मे डॉ. विद्यानाथ झाक “डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध/स्वास्थ्य लेख आ “स्वास्थ्य सचेतनापर आधारित ललित निबन्ध।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६४. (A) गीत-गंगा (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 1488मे कामिनीक प्रविष्टि “गीत-गंगा (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

१६५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१६७. (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।” अछि।

१६८. (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

१६९. (B) लेखक कामिनी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

१७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१७२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७३. (B) खण्ड 2797, सूचकांक पंक्ति 1488मे कामिनीक “गीत-गंगा (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन "गीत-गंगा" पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७४. (A) “गजल गंगा” (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 1489मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि ““गजल गंगा” (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
१७५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१७७. (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन “गजल-गंगा” पर समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन “गजल-गंगा” पर समीक्षा।” अछि।
१७८. (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन “गजल-गंगा” पर समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन “गजल-गंगा” पर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।
१७९. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१८२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८३. (B) खण्ड 2798, सूचकांक पंक्ति 1489मे जगदानन्द झा 'मनु'क ““गजल गंगा” (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गजल संकलन “गजल-गंगा” पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८४. (A) मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 1490मे डॉ. अजीत मिश्रक प्रविष्टि “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
१८५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
१८७. (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन “तोरा अंगनामे” पर समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन “तोरा अंगनामे” पर समीक्षा।” अछि।
१८८. (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन “तोरा अंगनामे” पर समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन “तोरा अंगनामे” पर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।
१८९. (B) लेखक डॉ. अजीत मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१९२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१९३. (B) खण्ड 2799, सूचकांक पंक्ति 1490मे डॉ. अजीत मिश्रक “मैथिल अडना : ‘तोरा अंगनामे’ (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क गीत संकलन “तोरा अंगनामे” पर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१९४. (A) धारक “अइ” पार (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 1491मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “धारक “अइ” पार (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।

१९५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

१९७. (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।” अछि।

१९८. (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

१९९. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०३. (B) खण्ड 2800, सूचकांक पंक्ति 1491मे आशीष अनचिन्हारक “धारक "अइ" पार (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क दीर्घ कविता "धारक ओइ पार" केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०४. (A) पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1492मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

२०५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०६. (C) व्यंग्य निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।

२०७. (D) साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” अछि।

२०८. (A) साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

२०९. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२११. (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२१२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१३. (B) खण्ड 2801, सूचकांक पंक्ति 1492मे आशीष अनचिन्हारक “पद्मा नदीक गरीब ब्राम्हण (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारक राजनीति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१४. (A) गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना) — सूचकांक पंक्ति 1493मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” रूपमे देल अछि।

२१५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१६. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

२१७. (D) लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।” अछि।

२१८. (A) लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।” रूपमे देखाइत अछि।

२१९. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२१. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२२२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२२३. (B) खण्ड 2802, सूचकांक पंक्ति 1493मे आशीष अनचिन्हारक “गाम के अधिकारी तोहे बडका मैया हो- (आलोचना)” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “लोकगीतक शब्द आ भाषाक संशोधनक प्रवृत्ति पर आलोचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२२४. (A) सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध) — सूचकांक पंक्ति 1494मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” रूपमे देल अछि।
२२५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२२६. (C) व्यंग्य निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।
२२७. (D) सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।” अछि।
२२८. (A) सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
२२९. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२३१. (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२३२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२३३. (B) खण्ड 2803, सूचकांक पंक्ति 1494मे आशीष अनचिन्हारक “सभ्य लोक (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “सामाजिक पाखण्ड आ दोगलापन पर चोट करैत व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२३४. (A) जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध) — सूचकांक पंक्ति 1495मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” रूपमे देल अछि।
२३५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२३६. (C) व्यंग्य निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।
२३७. (D) वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।” अछि।
२३८. (A) वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
२३९. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
२४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२४१. (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
२४२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२४३. (B) खण्ड 2804, सूचकांक पंक्ति 1495मे आशीष अनचिन्हारक “जै महात्मा गाँधी आइ-काल्ह मिथिलामे जन्मल रहतिथ (व्यंग्य निबन्ध)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीक प्रासंगिकतापर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२४४. (A) ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1496मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
२४५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४६. (C) व्यंग्य निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य निबन्ध” अछि।

२४७. (D) साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” अछि।

२४८. (A) साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

२४९. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

२५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२५१. (D) ई पाठ व्यंग्य निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२५२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५३. (B) खण्ड 2805, सूचकांक पंक्ति 1496मे आशीष अनचिन्हारक “ब्रह्मपिशाच (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य निबन्ध आ “साहित्यिक जगतक सत्ता-संरचना आ पिशाचवृत्ति पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२५४. (A) बाल गजल — सूचकांक पंक्ति 1497मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

२५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२५६. (C) गजल (बाल) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल (बाल)” अछि।

२५७. (D) 'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक — टिप्पणीक पहिल संकेत “'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक” अछि।

२५८. (A) 'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक” रूपमे देखाइत अछि।

२५९. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल (बाल) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

२६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२६१. (D) ई पाठ गजल (बाल)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२६२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२६३. (B) खण्ड 2806, सूचकांक पंक्ति 1497मे आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल (बाल) आ “'अनचिन्हार आखर' साइटक संचालक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६४. (A) कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा — सूचकांक पंक्ति 1498मे परमानन्द प्रभाकरक प्रविष्टि “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” रूपमे देल अछि।

२६५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।

२६७. (D) 'गीत-गंगा' केर समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “'गीत-गंगा' केर समीक्षा।” अछि।

२६८. (A) 'गीत-गंगा' केर समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'गीत-गंगा' केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।

२६९. (B) लेखक परमानन्द प्रभाकर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

२७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२७१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२७२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२७३. (B) खण्ड 2807, सूचकांक पंक्ति 1498मे परमानन्द प्रभाकरक “कवि अनिलजीक आंतरिक परिचिति : गीत गंगा” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “'गीत-गंगा' केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२७४. (A) ‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि — सूचकांक पंक्ति 1499मे छत्रानन्द सिंह झाक प्रविष्टि “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” रूपमे देल अछि।
२७५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२७६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२७७. (D) ‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” अछि।
२७८. (A) ‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।
२७९. (B) लेखक छत्रानन्द सिंह झा, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२८१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२८२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२८३. (B) खण्ड 2808, सूचकांक पंक्ति 1499मे छत्रानन्द सिंह झाक “‘गीत-गंगा’मे सब किछु अछि” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२८४. (A) गीत गंगामे अनिल (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 1500मे केदार काननक प्रविष्टि “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
२८५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२८६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
२८७. (D) ‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” अछि।
२८८. (A) ‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।
२८९. (B) लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
२९१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
२९२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
२९३. (B) खण्ड 2809, सूचकांक पंक्ति 1500मे केदार काननक “गीत गंगामे अनिल (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
२९४. (A) सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण) — सूचकांक पंक्ति 1501मे केदार काननक प्रविष्टि “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।
२९५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२९६. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
२९७. (D) रमानन्द रेणु पर संस्मरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “रमानन्द रेणु पर संस्मरण।” अछि।
२९८. (A) रमानन्द रेणु पर संस्मरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रमानन्द रेणु पर संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।
२९९. (B) लेखक केदार कानन, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०१. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३०२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३०३. (B) खण्ड 2810, सूचकांक पंक्ति 1501मे केदार काननक “सहज आ मिलनसार छलाह रेणुजी (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रमानन्द रेणु पर संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३०४. (A) ‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 1502मे डॉ. अमर नाथ ठाकुरक प्रविष्टि “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
३०५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३०६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३०७. (D) ‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” अछि।
३०८. (A) ‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” रूपमे देखाइत अछि।
३०९. (B) लेखक डॉ. अमर नाथ ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३११. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३१३. (B) खण्ड 2811, सूचकांक पंक्ति 1502मे डॉ. अमर नाथ ठाकुरक “‘गीत-गंगा’क प्रवाह (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “‘गीत-गंगा’ केर समीक्षा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३१४. (A) अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख) — सूचकांक पंक्ति 1503मे डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क प्रविष्टि “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)” रूपमे देल अछि।
३१५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३१६. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
३१७. (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्व पर प्रकाश डालैत आलेख। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्व पर प्रकाश डालैत आलेख।” अछि।
३१८. (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्व पर प्रकाश डालैत आलेख। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्व पर प्रकाश डालैत आलेख।” रूपमे देखाइत अछि।
३१९. (B) लेखक डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३२१. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३२२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२३. (B) खण्ड 2812, सूचकांक पंक्ति 1503मे डॉ. शशिधर कूमार “विदेह”क “अनिली व्यक्तित्व आ कृतित्व (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ केर सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ कृतित्व पर प्रकाश डालैत आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३२४. (A) भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा) — सूचकांक पंक्ति 1504मे डॉ. शशिधर कूमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक प्रविष्टि “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” रूपमे देल अछि।
३२५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३२६. (C) बाल कथा (विज्ञान) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कथा (विज्ञान)” अछि।

३२७. (D) बाल मनोविज्ञानके ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञानके ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।” अछि।
३२८. (A) बाल मनोविज्ञानके ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञानके ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।” रूपमे देखाइत अछि।
३२९. (B) लेखक डॉ. शशिधर कुमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारी, विधा गद्य, उप-विधा बाल कथा (विज्ञान) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३३१. (D) ई पाठ बाल कथा (विज्ञान)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३३२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३३३. (B) खण्ड 2813, सूचकांक पंक्ति 1504मे डॉ. शशिधर कुमार “विदेह” आ सुप्रिया बेबी कुमारीक “भूकम्प- (बाल विज्ञान कथा)” प्रविष्टि गद्य, बाल कथा (विज्ञान) आ “बाल मनोविज्ञानके ध्यानमे रखैत भूकम्प जकाँ विषयपर रचित विज्ञान कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३४. (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा — सूचकांक पंक्ति 1505मे सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क प्रविष्टि “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” रूपमे देल अछि।
३३५. (B) गद्य/गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३३६. (C) संस्मरण/व्यंग्य कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण/व्यंग्य कथा” अछि।
३३७. (D) अनिलजी पर संस्मरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “अनिलजी पर संस्मरण।” अछि।
३३८. (A) अनिलजी पर संस्मरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनिलजी पर संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।
३३९. (B) लेखक सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा), विधा गद्य/गद्य, उप-विधा संस्मरण/व्यंग्य कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३४१. (D) ई पाठ संस्मरण/व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३४२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३४३. (B) खण्ड 2814, सूचकांक पंक्ति 1505मे सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा)क “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विहनि कथा- अशुभ इच्छा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, संस्मरण/व्यंग्य कथा आ “अनिलजी पर संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३४४. (A) मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख) — सूचकांक पंक्ति 1506मे बाल मुकुन्द पाठकक प्रविष्टि “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” रूपमे देल अछि।
३४५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३४६. (C) आलेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख” अछि।
३४७. (D) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।” अछि।
३४८. (A) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।” रूपमे देखाइत अछि।
३४९. (B) लेखक बाल मुकुन्द पाठक, विधा गद्य, उप-विधा आलेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३५१. (D) ई पाठ आलेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करवैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३५३. (B) खण्ड 2815, सूचकांक पंक्ति 1506मे बाल मुकुन्द पाठकक “मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर 'अनिल' (आलेख)” प्रविष्टि गद्य, आलेख आ “जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर गजलकार रूप पर आलेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३५४. (A) ‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा) — सूचकांक पंक्ति 1507मे अरविन्द ठाकुरक प्रविष्टि “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” रूपमे देल अछि।
३५५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५६. (C) समीक्षा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा” अछि।
३५७. (D) ‘गीत-गंगा’ पर समीक्षात्मक लेख। — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘गीत-गंगा’ पर समीक्षात्मक लेख।” अछि।
३५८. (A) ‘गीत-गंगा’ पर समीक्षात्मक लेख। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘गीत-गंगा’ पर समीक्षात्मक लेख।” रूपमे देखाइत अछि।
३५९. (B) लेखक अरविन्द ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३६१. (D) ई पाठ समीक्षाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३६२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करवैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३६३. (B) खण्ड 2816, सूचकांक पंक्ति 1507मे अरविन्द ठाकुरक “‘गीत-गंगा’ के बहाने किछु बतकही (समीक्षा)” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा आ “‘गीत-गंगा’ पर समीक्षात्मक लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३६४. (A) (विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार) — सूचकांक पंक्ति 1508मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” रूपमे देल अछि।
३६५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३६६. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साक्षात्कार” अछि।
३६७. (D) अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।” अछि।
३६८. (A) अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।” रूपमे देखाइत अछि।
३६९. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
३७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३७१. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
३७२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करवैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३७३. (B) खण्ड 2817, सूचकांक पंक्ति 1508मे मुन्नाजीक “(विदेहक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक लेल मुन्नाजी द्वारा अनिल जी सं लेल ई-साक्षात्कार)” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार आ “अनिलजीक साहित्यिक जीवन पर गहन वार्ता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३७४. (A) प्रेम विहनि कथा- सेल्फी, बखरा, करोट — सूचकांक पंक्ति 1509मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “प्रेम विहनि कथा- सेल्फी, बखरा, करोट” रूपमे देल अछि।
३७५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३७६. (C) व्यंग्य कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य कथा” अछि।
३७७. (D) समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।” अछि।

३७८. (A) समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।” रूपमे देखाइत अछि।
३७९. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३८१. (D) ई पाठ व्यंग्य कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३८२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३८३. (B) खण्ड 2818, सूचकांक पंक्ति 1509मे मुन्नाजीक “प्रेम विहनि कथा- सेल्पी, बखरा, करोट” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य कथा आ “समसामयिक विषय पर तीक्ष्ण व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३८४. (A) धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी — सूचकांक पंक्ति 1510मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” रूपमे देल अछि।
३८५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३८६. (C) समीक्षा/निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समीक्षा/निबन्ध” अछि।
३८७. (D) ज्योति चौधरीक रचना “देवीजी” केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख। — टिप्पणीक पहिल संकेत “ज्योति चौधरीक रचना “देवीजी” केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।” अछि।
३८८. (A) ज्योति चौधरीक रचना “देवीजी” केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ज्योति चौधरीक रचना “देवीजी” केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।” रूपमे देखाइत अछि।
३८९. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा समीक्षा/निबन्ध — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३९१. (D) ई पाठ समीक्षा/निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३९२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३९३. (B) खण्ड 2819, सूचकांक पंक्ति 1510मे मुन्नाजीक “धीया-पुता लेल प्रेरक अछि देवीजी” प्रविष्टि गद्य, समीक्षा/निबन्ध आ “ज्योति चौधरीक रचना “देवीजी” केर प्रेरक पहलु पर प्रकाश डालैत लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३९४. (A) अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद) — सूचकांक पंक्ति 1511मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” रूपमे देल अछि।
३९५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३९६. (C) अनुवाद (लघुकथा) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनुवाद (लघुकथा)” अछि।
३९७. (D) उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा “मोहनदास” केर मैथिली अनुवाद। — टिप्पणीक पहिल संकेत “उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा “मोहनदास” केर मैथिली अनुवाद।” अछि।
३९८. (A) उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा “मोहनदास” केर मैथिली अनुवाद। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा “मोहनदास” केर मैथिली अनुवाद।” रूपमे देखाइत अछि।
३९९. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा गद्य, उप-विधा अनुवाद (लघुकथा) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०१. (D) ई पाठ अनुवाद (लघुकथा)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४०२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४०३. (B) खण्ड 2820, सूचकांक पंक्ति 1511मे मुन्नाजीक “अधिकार लेल छटपटाइत मोहनदास (लघुकथा अनुवाद)” प्रविष्टि गद्य, अनुवाद (लघुकथा) आ “उदयप्रकाश जीक हिन्दी लघुकथा “मोहनदास” केर मैथिली अनुवाद।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४०४. (A) रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण) — सूचकांक पंक्ति 1512मे राम लोचन ठाकूरक प्रविष्टि “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।
४०५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४०६. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
४०७. (D) रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।” अछि।
४०८. (A) रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।
४०९. (B) लेखक राम लोचन ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४११. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४१२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४१३. (B) खण्ड 2821, सूचकांक पंक्ति 1512मे राम लोचन ठाकूरक “रमानन्द रेणु के मन पाड़ैत (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “रमानन्द रेणु पर आत्मीय संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४१४. (A) एकसरुआ सिपाही (संस्मरण) — सूचकांक पंक्ति 1513मे योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क प्रविष्टि “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” रूपमे देल अछि।
४१५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४१६. (C) संस्मरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “संस्मरण” अछि।
४१७. (D) राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।” अछि।
४१८. (A) राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।” रूपमे देखाइत अछि।
४१९. (B) लेखक योगेन्द्र पाठक “वियोगी”, विधा गद्य, उप-विधा संस्मरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४२१. (D) ई पाठ संस्मरणक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४२२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४२३. (B) खण्ड 2822, सूचकांक पंक्ति 1513मे योगेन्द्र पाठक “वियोगी”क “एकसरुआ सिपाही (संस्मरण)” प्रविष्टि गद्य, संस्मरण आ “राजनन्दन लाल दास पर आत्मीय संस्मरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४२४. (A) युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास — सूचकांक पंक्ति 1514मे नवो नारायण मिश्रक प्रविष्टि “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” रूपमे देल अछि।
४२५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४२६. (C) आलेख/रेखाचित्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलेख/रेखाचित्र” अछि।
४२७. (D) राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्व पर लेख। — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्व पर लेख।” अछि।
४२८. (A) राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्व पर लेख। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्व पर लेख।” रूपमे देखाइत अछि।
४२९. (B) लेखक नवो नारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा आलेख/रेखाचित्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४३१. (D) ई पाठ आलेख/रेखाचित्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४३२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४३३. (B) खण्ड 2823, सूचकांक पंक्ति 1514मे नवो नारायण मिश्रक “युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास” प्रविष्टि गद्य, आलेख/रेखाचित्र आ “राजनन्दन लाल दास केर व्यक्तित्व आ कृतित्व पर लेख।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३४. (A) विशोहक नोर (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1515मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “विशोहक नोर (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
४३५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४३६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
४३७. (D) तीक्ष्ण व्यंग्य रचना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।” अछि।
४३८. (A) तीक्ष्ण व्यंग्य रचना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।” रूपमे देखाइत अछि।
४३९. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४४१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४४२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४४३. (B) खण्ड 2824, सूचकांक पंक्ति 1515मे ओम प्रकाश झाक “विशोहक नोर (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “तीक्ष्ण व्यंग्य रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४४४. (A) मातृवत परदारेषु (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1516मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
४४५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४४६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
४४७. (D) समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।” अछि।
४४८. (A) समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
४४९. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४५१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४५२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४५३. (B) खण्ड 2825, सूचकांक पंक्ति 1516मे ओम प्रकाश झाक “मातृवत परदारेषु (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “समसामयिक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४५४. (A) अनटोटल गप (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1517मे अनिल झाक प्रविष्टि “अनटोटल गप (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
४५५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
४५७. (D) राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।” अछि।
४५८. (A) राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

४५९. (B) लेखक अनिल झा, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४६१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४६२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४६३. (B) खण्ड 2826, सूचकांक पंक्ति 1517मे अनिल झाक “अनटोटल गप (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक आ सामाजिक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४६४. (A) दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1518मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
४६५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४६६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
४६७. (D) नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।” अछि।
४६८. (A) नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
४६९. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४७१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४७२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४७३. (B) खण्ड 2827, सूचकांक पंक्ति 1518मे रवि भूषण पाठकक “दोस आ दोसक चाल प्रकृति बेमेय (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “नोकरशाही आ राजनीतिक दोसरदारी पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४७४. (A) दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1519मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
४७५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४७६. (C) लघु कथा (व्यंग्य) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा (व्यंग्य)” अछि।
४७७. (D) नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।” अछि।
४७८. (A) नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
४७९. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा (व्यंग्य) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४८१. (D) ई पाठ लघु कथा (व्यंग्य)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४८२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
४८३. (B) खण्ड 2828, सूचकांक पंक्ति 1519मे रवि भूषण पाठकक “दोस यौ दोस (लघु कथा/व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा (व्यंग्य) आ “नोकरशाही आ कार्यालयी राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४८४. (A) फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1520मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
४८५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४८६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

४८७. (D) साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।” अछि।

४८८. (A) साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

४८९. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४९१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४९२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४९३. (B) खण्ड 2829, सूचकांक पंक्ति 1520मे रवि भूषण पाठकक “फलनमा.. चलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “साहित्यिक आ सामाजिक समूहक राजनीति पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४९४. (A) पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र — सूचकांक पंक्ति 1521मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क प्रविष्टि “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” रूपमे देल अछि।

४९५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४९६. (C) पत्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पत्र” अछि।

४९७. (D) जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।” अछि।

४९८. (A) जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।” रूपमे देखाइत अछि।

४९९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा गद्य, उप-विधा पत्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५०१. (D) ई पाठ पत्रक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५०२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५०३. (B) खण्ड 2830, सूचकांक पंक्ति 1521मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “पत्राचार खंड- जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल द्वारा प्राप्त पत्र” प्रविष्टि गद्य, पत्र आ “जीवकान्त, प्रो. गंगानन्द झा आदिक पत्र। साहित्यिक संवादक महत्वपूर्ण दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५०४. (A) अवाक (लघुकथा) — सूचकांक पंक्ति 1522मे राजदेव मण्डलक प्रविष्टि “अवाक (लघुकथा)” रूपमे देल अछि।

५०५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५०६. (C) लघु कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघु कथा” अछि।

५०७. (D) सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।” अछि।

५०८. (A) सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

५०९. (B) लेखक राजदेव मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा लघु कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५११. (D) ई पाठ लघु कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५१२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५१३. (B) खण्ड 2831, सूचकांक पंक्ति 1522मे राजदेव मण्डलक “अवाक (लघुकथा)” प्रविष्टि गद्य, लघु कथा आ “सीमान्त कृषक-श्रमिकक पीड़ाक यथार्थवादी चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५१४. (A) राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा — सूचकांक पंक्ति 1523मे विन्देश्वर ठाकुरक प्रविष्टि “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” रूपमे देल अछि।
५१५. (B) गद्य/गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५१६. (C) व्यंग्य/व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/व्यंग्य” अछि।
५१७. (D) सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” अछि।
५१८. (A) सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” रूपमे देखाइत अछि।
५१९. (B) लेखक विन्देश्वर ठाकुर, विधा गद्य/गद्य, उप-विधा व्यंग्य/व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५२१. (D) ई पाठ व्यंग्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५२२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२३. (B) खण्ड 2832, सूचकांक पंक्ति 1523मे विन्देश्वर ठाकुरक “राजनैतिक विहिन कथा, प्रेम विहिन कथा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, व्यंग्य/व्यंग्य आ “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५२४. (A) किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा — सूचकांक पंक्ति 1524मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” रूपमे देल अछि।
५२५. (B) गद्य/गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५२६. (C) व्यंग्य/व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य/व्यंग्य” अछि।
५२७. (D) सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” अछि।
५२८. (A) सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” रूपमे देखाइत अछि।
५२९. (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य/गद्य, उप-विधा व्यंग्य/व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५३१. (D) ई पाठ व्यंग्य/व्यंग्यक रूपमे गद्य/गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५३२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५३३. (B) खण्ड 2833, सूचकांक पंक्ति 1524मे अब्दुर रज्जाकक “किछु प्रेम निबहेन कथा, राजनैतिक निबहेन कथा” प्रविष्टि गद्य/गद्य, व्यंग्य/व्यंग्य आ “सामाजिक-राजनीतिक विसंगति पर आधारित व्यंग्य कथा।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३४. (A) कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख) — सूचकांक पंक्ति 1525मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” रूपमे देल अछि।
५३५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५३६. (C) लेख — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लेख” अछि।

५३७. (D) प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।” अछि।

५३८. (A) प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।” रूपमे देखाइत अछि।

५३९. (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा लेख — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

५४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५४१. (D) ई पाठ लेखक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५४२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५४३. (B) खण्ड 2834, सूचकांक पंक्ति 1525मे अब्दुर रज्जाकक “कतारक मौसम आ बिन मौसम क बषा (लेख)” प्रविष्टि गद्य, लेख आ “प्रवासी जीवन आ प्रकृतिक वर्णन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५४४. (A) दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज) — सूचकांक पंक्ति 1526मे अब्दुर रज्जाकक प्रविष्टि “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।

५४५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५४६. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

५४७. (D) प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।” अछि।

५४८. (A) प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।

५४९. (B) लेखक अब्दुर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

५५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५५१. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५५२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५३. (B) खण्ड 2835, सूचकांक पंक्ति 1526मे अब्दुर रज्जाकक “दोहा-कतारमे साँझक चौपारिपर के आठम मासक बैसार सम्पन्न! (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “प्रवासी मैथिल समाजक साहित्यिक गतिविधिक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५५४. (A) मुड़नक मुर (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1527मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

५५५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५५६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

५५७. (D) पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।” अछि।

५५८. (A) पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

५५९. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

५६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५६१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

५६२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५६३. (B) खण्ड 2836, सूचकांक पंक्ति 1527मे उमेश मण्डलक “मुड़नक मुर (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “पारिवारिक जीवन आ परम्परापर हास्य-व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५६४. (A) रिपोटा-- सगर राति दीप जरल — सूचकांक पंक्ति 1528मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” रूपमे देल अछि।
५६५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५६६. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।
५६७. (D) 'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।” अछि।
५६८. (A) 'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।
५६९. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५७१. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५७२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५७३. (B) खण्ड 2837, सूचकांक पंक्ति 1528मे उमेश मण्डलक “रिपोटा-- सगर राति दीप जरल” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति दीप जरय' साहित्यिक गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज। सम्पूर्ण गोष्ठीक कार्यक्रम आ वक्ताक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५७४. (A) 88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज) — सूचकांक पंक्ति 1529मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।
५७५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५७६. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।
५७७. (D) मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।” अछि।
५७८. (A) मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।
५७९. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५८१. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५८२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५८३. (B) खण्ड 2838, सूचकांक पंक्ति 1529मे उमेश मण्डलक “88म कथा-साहित्य गोष्ठी उखराममे सम्पन्न भेल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “मधुबनीक उखराम गाममे आयोजित सगर राति दीप जरय गोष्ठीक सविस्तार विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५८४. (A) बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज) — सूचकांक पंक्ति 1530मे अखिलेश कुमारक प्रविष्टि “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” रूपमे देल अछि।
५८५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५८६. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।
५८७. (D) बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।” अछि।

५८८. (A) बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।” रूपमे देखाइत अछि।
५८९. (B) लेखक अखिलेश कुमार, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५९१. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५९२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५९३. (B) खण्ड 2839, सूचकांक पंक्ति 1530मे अखिलेश कुमारक “बाबू भोला लाल दासक जयंती मनल (रिपोर्ताज)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “बाबू भोला लाल दासक जयंती समारोहक विवरण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५९४. (A) ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1531मे राम विलास साहक प्रविष्टि “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
५९५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५९६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
५९७. (D) सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।” अछि।
५९८. (A) सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।” रूपमे देखाइत अछि।
५९९. (B) लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६०१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६०२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६०३. (B) खण्ड 2840, सूचकांक पंक्ति 1531मे राम विलास साहक “ई छी हमर मजबूरी (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “सामाजिक दम्भ आ विडम्बनाक उद्घाटन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६०४. (A) चोर-सिपाही (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1532मे राम विलास साहक प्रविष्टि “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
६०५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६०६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।
६०७. (D) व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।” अछि।
६०८. (A) व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
६०९. (B) लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६११. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६१२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६१३. (B) खण्ड 2841, सूचकांक पंक्ति 1532मे राम विलास साहक “चोर-सिपाही (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “व्यवस्थाक दोहरेपन पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६१४. (A) जाति (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1533मे राम विलास साहक प्रविष्टि “जाति (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।
६१५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६१६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

६१७. (D) जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।” अछि।

६१८. (A) जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

६१९. (B) लेखक राम विलास साह, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६२१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६२२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६२३. (B) खण्ड 2842, सूचकांक पंक्ति 1533मे राम विलास साहक “जाति (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “जातिवादी सोच आ शोषणक तानाबाना पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६२४. (A) बापक धरम (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1534मे लक्ष्मी दासक प्रविष्टि “बापक धरम (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

६२५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६२६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

६२७. (D) परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।” अछि।

६२८. (A) परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।

६२९. (B) लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६३१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६३२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६३३. (B) खण्ड 2843, सूचकांक पंक्ति 1534मे लक्ष्मी दासक “बापक धरम (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “परम्परागत पितृसत्तात्मक सोच पर व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६३४. (A) बाबाक लोटा (व्यंग्य) — सूचकांक पंक्ति 1535मे ललन कुमार कामतक प्रविष्टि “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” रूपमे देल अछि।

६३५. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६३६. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यंग्य” अछि।

६३७. (D) ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।” अछि।

६३८. (A) ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।

६३९. (B) लेखक ललन कुमार कामत, विधा गद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

६४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६४१. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

६४२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६४३. (B) खण्ड 2844, सूचकांक पंक्ति 1535मे ललन कुमार कामतक “बाबाक लोटा (व्यंग्य)” प्रविष्टि गद्य, व्यंग्य आ “ग्रामीण जीवनक हास्य-व्यंग्य परक चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६४४. (A) गजल, कविता ऐब की बेरिया — सूचकांक पंक्ति 1536मे मुन्नाजीक प्रविष्टि “गजल, कविता ऐब की बेरिया” रूपमे देल अछि।
६४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६४६. (C) गजल/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता” अछि।
६४७. (D) प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।” अछि।
६४८. (A) प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।” रूपमे देखाइत अछि।
६४९. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६५१. (D) ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६५२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६५३. (B) खण्ड 2845, सूचकांक पंक्ति 1536मे मुन्नाजीक “गजल, कविता ऐब की बेरिया” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “प्रेम आ सामाजिक विषय पर गजल-कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६५४. (A) ताजीवन हमर नहि (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1537मे रमेशक प्रविष्टि “ताजीवन हमर नहि (कविता)” रूपमे देल अछि।
६५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६५६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६५७. (D) स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।” अछि।
६५८. (A) स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।” रूपमे देखाइत अछि।
६५९. (B) लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
६६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६६१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६६२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६६३. (B) खण्ड 2846, सूचकांक पंक्ति 1537मे रमेशक “ताजीवन हमर नहि (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “स्वास्थ्य संकट आ जीवनक नश्वरता पर कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६६४. (A) नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार — सूचकांक पंक्ति 1538मे नन्द विलास रायक प्रविष्टि “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” रूपमे देल अछि।
६६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६६६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
६६७. (D) राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।” अछि।
६६८. (A) राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।” रूपमे देखाइत अछि।
६६९. (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६७१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६७२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६७३. (B) खण्ड 2847, सूचकांक पंक्ति 1538मे नन्द विलास रायक “नैतिकता आ इमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “राजनीतिक आ सामाजिक मूल्यपर आधारित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६७४. (A) अंकोरवट मन्दिर (कविता) — सूचकांक पंक्ति 1539मे कामिनी कामायनीक प्रविष्टि “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” रूपमे देल अछि।

६७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६७६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

६७७. (D) कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।” अछि।

६७८. (A) कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

६७९. (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६८१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६८२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६८३. (B) खण्ड 2848, सूचकांक पंक्ति 1539मे कामिनी कामायनीक “अंकोरवट मन्दिर (कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरक ऐतिहासिकतापर केन्द्रित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६८४. (A) इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता) — सूचकांक पंक्ति 1540मे किशन कारीगरक प्रविष्टि “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” रूपमे देल अछि।

६८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६८६. (C) बाल कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता” अछि।

६८७. (D) बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।” अछि।

६८८. (A) बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

६८९. (B) लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६९१. (D) ई पाठ बाल कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६९२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६९३. (B) खण्ड 2849, सूचकांक पंक्ति 1540मे किशन कारीगरक “इस्कूल जाइत छी हम (बाल कविता)” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता आ “बाल मनोविज्ञान पर आधारित सरल कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६९४. (A) बाल गजल — सूचकांक पंक्ति 1541मे आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि “बाल गजल” रूपमे देल अछि।

६९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६९६. (C) गजल (बाल) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल (बाल)” अछि।

६९७. (D) बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।” अछि।

६९८. (A) बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।” रूपमे देखाइत अछि।

६९९. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल (बाल) — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

७००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७०१. (D) ई पाठ गजल (बाल)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

७०२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७०३. (B) खण्ड 2850, सूचकांक पंक्ति 1541मे आशीष अनचिन्हारक “बाल गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल (बाल) आ “बाल साहित्यक एकटा नव प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७०४. (A) मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष, — सूचकांक पंक्ति 1542मे डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क प्रविष्टि “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” रूपमे देल अछि।

७०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७०६. (C) बाल कविता/प्रकृति कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाल कविता/प्रकृति कविता” अछि।

७०७. (D) बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता। — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।” अछि।

७०८. (A) बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।” रूपमे देखाइत अछि।

७०९. (B) लेखक डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”, विधा पद्य, उप-विधा बाल कविता/प्रकृति कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

७१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७११. (D) ई पाठ बाल कविता/प्रकृति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

७१२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७१३. (B) खण्ड 2851, सूचकांक पंक्ति 1542मे डॉ. शशिधर कुमार “विदेह”क “मारिते रास बाल कविता (वन्य आधारित), फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मंगलमय हो नव वर्ष,” प्रविष्टि पद्य, बाल कविता/प्रकृति कविता आ “बाल मनोविज्ञान आ प्रकृतिपर आधारित कविता।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७१४. (A) गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता — सूचकांक पंक्ति 1543मे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’क प्रविष्टि “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” रूपमे देल अछि।

७१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७१६. (C) गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी” अछि।

७१७. (D) स्वयं रचना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वयं रचना।” अछि।

७१८. (A) स्वयं रचना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वयं रचना।” रूपमे देखाइत अछि।

७१९. (B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

७२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७२१. (D) ई पाठ गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

७२२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७२३. (B) खण्ड 2852, सूचकांक पंक्ति 1543मे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत आ किछु बाल कविता” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल/कविता/दोहा/चतुष्पदी आ “स्वयंक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७२४. (A) गजल — सूचकांक पंक्ति 1544मे जगदानन्द झा 'मनु'क प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।
७२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७२६. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
७२७. (D) स्वयंक रचना। — टिप्पणीक पहिल संकेत “स्वयंक रचना।” अछि।
७२८. (A) स्वयंक रचना। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “स्वयंक रचना।” रूपमे देखाइत अछि।
७२९. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७३१. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७३२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७३३. (B) खण्ड 2853, सूचकांक पंक्ति 1544मे जगदानन्द झा 'मनु'क “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “स्वयंक रचना।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७३४. (A) अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए... — सूचकांक पंक्ति 1545मे दिलीप कुमार साहक प्रविष्टि “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” रूपमे देल अछि।
७३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७३६. (C) गीत/गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/गजल” अछि।
७३७. (D) प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।” अछि।
७३८. (A) प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।” रूपमे देखाइत अछि।
७३९. (B) लेखक दिलीप कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा गीत/गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
७४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७४१. (D) ई पाठ गीत/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
७४२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७४३. (B) खण्ड 2854, सूचकांक पंक्ति 1545मे दिलीप कुमार साहक “अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., क्षण भरि..., हमरा याद अबैए...” प्रविष्टि पद्य, गीत/गजल आ “प्रेम, विरह, आ गामक स्मृतिपर आधारित गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७४४. (A) रखबार राघव (भक्तिगीत) — सूचकांक पंक्ति 1546मे विनीता झाक प्रविष्टि “रखबार राघव (भक्तिगीत)” रूपमे देल अछि।
७४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७४६. (C) भक्तिगीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्तिगीत” अछि।
७४७. (D) राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।” अछि।
७४८. (A) राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।” रूपमे देखाइत अछि।
७४९. (B) लेखक विनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा भक्तिगीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

७५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७५१. (D) ई पाठ भक्तिगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७५२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७५३. (B) खण्ड 2855, सूचकांक पंक्ति 1546मे विनीता झाक “रखबार राघव (भक्तिगीत)” प्रविष्टि पद्य, भक्तिगीत आ “राम-भक्ति पर आधारित भक्तिगीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७५४. (A) एले फागुन मास सखी हे (गीत) — सूचकांक पंक्ति 1547मे विकास झाक प्रविष्टि “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” रूपमे देल अछि।
७५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७५६. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।
७५७. (D) फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।” अछि।
७५८. (A) फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।” रूपमे देखाइत अछि।
७५९. (B) लेखक विकास झा, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७६१. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७६२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७६३. (B) खण्ड 2856, सूचकांक पंक्ति 1547मे विकास झाक “एले फागुन मास सखी हे (गीत)” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “फागुन आ विरह-मिलनक मनोभाव पर गीत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७६४. (A) गजल — सूचकांक पंक्ति 1548मे नीरज कर्णक प्रविष्टि “गजल” रूपमे देल अछि।
७६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
७६६. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।
७६७. (D) जीवनक विडम्बनापर गजल। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जीवनक विडम्बनापर गजल।” अछि।
७६८. (A) जीवनक विडम्बनापर गजल। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जीवनक विडम्बनापर गजल।” रूपमे देखाइत अछि।
७६९. (B) लेखक नीरज कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
७७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
७७१. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
७७२. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
७७३. (B) खण्ड 2857, सूचकांक पंक्ति 1548मे नीरज कर्णक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “जीवनक विडम्बनापर गजल।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 18क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
७७४. (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख सँ जोड़ैत अछि।
७७५. (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
७७६. (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख — सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख धरि सीमित रहैत अछि।

- ७७७. (A) शीर्षक कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख दिस संकेत करैत अछि —** शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
- ७७८. (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख —** एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख सँ बनैत अछि।
- ७७९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब —** एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
- ७८०. (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख —** सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।
- ७८१. (A) कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब —** दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
- ७८२. (A) संपादकीयक रूप कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख केँ स्पष्ट करैत अछि —** रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
- ७८३. (A) उत्तरकेँ कोसी बाढ़ि आ बैराज योजनाक विफलतापर केन्द्रित आलेख धरि सीमित राखब —** विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
- ७८४. (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित —** स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित सँ जोड़ैत अछि।
- ७८५. (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित —** एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
- ७८६. (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित —** सुरक्षित पठन स्रोत-सार कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित धरि सीमित रहैत अछि।
- ७८७. (A) शीर्षक कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित दिस संकेत करैत अछि —** शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
- ७८८. (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित —** एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित सँ बनैत अछि।
- ७८९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब —** एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
- ७९०. (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित —** सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारितक आधार पर ग्रहणीय अछि।
- ७९१. (A) कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब —** दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
- ७९२. (A) रिपोर्टाजक रूप कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित केँ स्पष्ट करैत अछि —** रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
- ७९३. (A) उत्तरकेँ कतारक मरुभूमिमे नेपाली मैथिल भेड़ा चरवाहक जीवन पर आधारित धरि सीमित राखब —** विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
- ७९४. (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट —** स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट सँ जोड़ैत अछि।
- ७९५. (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट —** एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
- ७९६. (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट —** सुरक्षित पठन स्रोत-सार दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट धरि सीमित रहैत अछि।
- ७९७. (A) शीर्षक दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट दिस संकेत करैत अछि —** शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
- ७९८. (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट —** एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट सँ बनैत अछि।
- ७९९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब —** एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

८००. (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्टक आधार पर ग्रहणीय अछि।
८०१. (A) दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्टक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
८०२. (A) रिपोर्टाजक रूप दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
८०३. (A) उत्तरकेँ दिल्लीमे कोसी बाढ़ि पर आयोजित कार्यक्रम आ लघुनाटकक रिपोर्ट धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
८०४. (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण सँ जोड़ैत अछि।
८०५. (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
८०६. (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण — सुरक्षित पठन स्रोत-सार बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण धरि सीमित रहैत अछि।
८०७. (A) शीर्षक बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
८०८. (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण सँ बनैत अछि।
८०९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
८१०. (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरणक आधार पर ग्रहणीय अछि।
८११. (A) बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
८१२. (A) रिपोर्टाजक रूप बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
८१३. (A) उत्तरकेँ बिहारक बाढ़िक वर्तमान स्थिति, सरकारी प्रयास आ आँकड़ाक विवरण धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
८१४. (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी सँ जोड़ैत अछि।
८१५. (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
८१६. (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी धरि सीमित रहैत अछि।
८१७. (A) शीर्षक मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
८१८. (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी सँ बनैत अछि।
८१९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
८२०. (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणीक आधार पर ग्रहणीय अछि।
८२१. (A) मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।

८२२. (A) रिपोर्टाजक रूप मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
८२३. (A) उत्तरकेँ मैथिल समाजक विपत्ति आ राजनीतिक अवसरवादिता पर टिप्पणी धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
८२४. (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन सँ जोड़ैत अछि।
८२५. (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
८२६. (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन धरि सीमित रहैत अछि।
८२७. (A) शीर्षक मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
८२८. (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन सँ बनैत अछि।
८२९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
८३०. (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तनक आधार पर ग्रहणीय अछि।
८३१. (A) मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
८३२. (A) रिपोर्टाजक रूप मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
८३३. (A) उत्तरकेँ मैथिल समाजक गरीबी, मानसिकता आ विकास पर चिन्तन धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
८३४. (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख सँ जोड़ैत अछि।
८३५. (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
८३६. (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख धरि सीमित रहैत अछि।
८३७. (A) शीर्षक मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
८३८. (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख सँ बनैत अछि।
८३९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
८४०. (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।
८४१. (A) मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
८४२. (A) गद्यक रूप मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
८४३. (A) उत्तरकेँ मिथिलाक सामाजिक विसंगति पर व्यंग्यात्मक लेख धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
८४४. (A) एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण सँ जोड़ैत अछि।
८४५. (A) एकटा थकल-हारल आ जर्जर मनुक्खक मानसिक स्थितिक चित्रण — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

८७२. (A) गद्यक रूप देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
८७३. (A) उत्तरकेँ देवशंकर नवीन सम्पादित मैथिली कथा-संकलनक समीक्षा धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
८७४. (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध सँ जोड़ैत अछि।
८७५. (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
८७६. (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध — सुरक्षित पठन स्रोत-सार राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध धरि सीमित रहैत अछि।
८७७. (A) शीर्षक राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
८७८. (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध सँ बनैत अछि।
८७९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
८८०. (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोधक आधार पर ग्रहणीय अछि।
८८१. (A) राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
८८२. (A) गद्यक रूप राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
८८३. (A) उत्तरकेँ राजकमल चौधरीक रचनाकर्म, उपन्यास 'आदिकथा' पर गहन शोध धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
८८४. (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त सँ जोड़ैत अछि।
८८५. (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
८८६. (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त धरि सीमित रहैत अछि।
८८७. (A) शीर्षक नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
८८८. (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त सँ बनैत अछि।
८८९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
८९०. (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।
८९१. (A) नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
८९२. (A) गद्यक रूप नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
८९३. (A) उत्तरकेँ नॉर्थ कछार हिल्सक यात्रा वृत्तान्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
८९४. (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण सँ जोड़ैत अछि।
८९५. (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
८९६. (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण — सुरक्षित पठन स्रोत-सार बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण धरि सीमित रहैत अछि।
८९७. (A) शीर्षक बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
८९८. (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण सँ बनैत अछि।

८९९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
९००. (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रणक आधार पर ग्रहणीय अछि।
९०१. (A) बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
९०२. (A) गद्यक रूप बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
९०३. (A) उत्तरकेँ बाढ़िक विभीषिकाक जीवन्त आ मार्मिक चित्रण धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
९०४. (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण सँ जोड़ैत अछि।
९०५. (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
९०६. (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण — सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण धरि सीमित रहैत अछि।
९०७. (A) शीर्षक कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
९०८. (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण सँ बनैत अछि।
९०९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
९१०. (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरणक आधार पर ग्रहणीय अछि।
९११. (A) कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
९१२. (A) गद्यक रूप कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
९१३. (A) उत्तरकेँ कोसी नदीक विनाशलीलाक प्रत्यक्षदर्शी विवरण धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
९१४. (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) सँ जोड़ैत अछि।
९१५. (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
९१६. (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) — सुरक्षित पठन स्रोत-सार लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) धरि सीमित रहैत अछि।
९१७. (A) शीर्षक लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
९१८. (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) सँ बनैत अछि।
९१९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
९२०. (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)क आधार पर ग्रहणीय अछि।
९२१. (A) लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७)क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
९२२. (A) पद्यक रूप लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
९२३. (A) उत्तरकेँ लुप्तप्राय कविक अप्रकाशित महेशवानी पद्य (क्र. १२-१७) धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१२४. (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल सँ जोड़ैत अछि।

१२५. (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१२६. (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल — सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल धरि सीमित रहैत अछि।

१२७. (A) शीर्षक कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१२८. (A) कोसी बाढ़ पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल कोसी बाढ़ पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल सँ बनैत अछि।

१२९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१३०. (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजलक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१३१. (A) कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजलक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१३२. (A) पद्यक रूप कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकेँ मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१३३. (A) उत्तरकैँ कोसी बाढ़ि पीड़ितक पीड़ाकें मार्मिक ढंगसँ प्रस्तुत करैत गजल धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१३४. (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति — सोत-सूत्र एहि खण्ड केँ गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति सँ जोड़ैत अछि।

१३५. (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१३६. (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति — सुरक्षित पठन स्रोत-सार गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति धरि सीमित रहैत अछि।

१३७. (A) शीर्षक गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१३८. (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति सँ बनैत अछि।

१३९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१४०. (A) गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्तिक आधार पर ग्रहणीय अछि।

૧૪૧. (A) ગદ્ય-પદ્ય-બ્રજબુલી મિશ્રિત; રાધાક મનોદશાક અભિવ્યક્તિક ભીતરક અર્થ-સંરચના પર ધ્યાન દેઢ — દોસરા ચરણક ઁનનમે અર્થ-સંરચના મહત્ત્વપર્ણ અલિ।

१४२. (A) पद्यक रूप गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१४३. (A) उत्तरकँ गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित; राधाक मनोदशाक अभिव्यक्ति धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१४४. (A) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता सँ जोड़ैत अछि।

१४५. (A) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१४६. (A) कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता — सुरक्षित पठन स्रोत-सार कोसी बाढ़िक प्रकोप आ पर्यावरण पर चिन्तन करैत कविता धरि सीमित रहैत अछि।

१७४. (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण सँ जोड़ैत अछि।
१७५. (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१७६. (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण — सुरक्षित पठन स्रोत-सार सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण धरि सीमित रहैत अछि।
१७७. (A) शीर्षक सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१७८. (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण सँ बनैत अछि।
१७९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१८०. (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रणक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१८१. (A) सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१८२. (A) पद्यक रूप सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१८३. (A) उत्तरकेँ सरकारी योजनाक विफलता आ गरीबक पीड़ाक चित्रण धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१८४. (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख सँ जोड़ैत अछि।
१८५. (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१८६. (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख — सुरक्षित पठन स्रोत-सार ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख धरि सीमित रहैत अछि।
१८७. (A) शीर्षक ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१८८. (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख सँ बनैत अछि।
१८९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१९०. (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१९१. (A) ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१९२. (A) कला/संस्कृतिक रूप ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१९३. (A) उत्तरकेँ ज्योति झा चौधरीक चित्र आ नूतन झा कृत दुर्गा-पूजा पर आलेख धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१९४. (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख सँ जोड़ैत अछि।
१९५. (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१९६. (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख धरि सीमित रहैत अछि।
१९७. (A) शीर्षक मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१९८. (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख सँ बनैत अछि।
१९९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१०००. (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१००१. (A) मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१००२. (A) संस्कृतिक रूप मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१००३. (A) उत्तरकेँ मिथिलांचलमे मनाओल जाए वाला पर्व पर आलेख धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१००४. (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख सँ जोड़ैत अछि।
१००५. (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१००६. (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख — सुरक्षित पठन स्रोत-सार समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख धरि सीमित रहैत अछि।
१००७. (A) शीर्षक समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१००८. (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख सँ बनैत अछि।
१००९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१०१०. (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेखक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१०११. (A) समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेखक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१०१२. (A) महिला-स्तंभक रूप समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१०१३. (A) उत्तरकेँ समाजमे नारीक स्थिति आ पुरुष-प्रधान मानसिकता पर लेख धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१०१४. (A) सचित्र बाल-कथा — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ सचित्र बाल-कथा सँ जोड़ैत अछि।
१०१५. (A) सचित्र बाल-कथा — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१०१६. (A) सचित्र बाल-कथा — सुरक्षित पठन स्रोत-सार सचित्र बाल-कथा धरि सीमित रहैत अछि।
१०१७. (A) शीर्षक सचित्र बाल-कथा दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१०१८. (A) सचित्र बाल-कथा — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सचित्र बाल-कथा सँ बनैत अछि।
१०१९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१०२०. (A) सचित्र बाल-कथा — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सचित्र बाल-कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१०२१. (A) सचित्र बाल-कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१०२२. (A) बालानां कृतेक रूप सचित्र बाल-कथा केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१०२३. (A) उत्तरकेँ सचित्र बाल-कथा धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१०२४. (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक सँ जोड़ैत अछि।

१०२५. (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१०२६. (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक धरि सीमित रहैत अछि।
१०२७. (A) शीर्षक शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१०२८. (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक सँ बनैत अछि।
१०२९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१०३०. (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोकक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१०३१. (A) शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
१०३२. (A) बालानां कृतेक रूप शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१०३३. (A) उत्तरकेँ शिक्षाप्रद आलेख आ संस्कृत श्लोक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१०३४. (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति सँ जोड़ैत अछि।
१०३५. (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१०३६. (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति धरि सीमित रहैत अछि।
१०३७. (A) शीर्षक मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१०३८. (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति सँ बनैत अछि।
१०३९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१०४०. (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुतिक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१०४१. (A) मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुतिक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।
१०४२. (A) भाषाक रूप मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१०४३. (A) उत्तरकेँ मैथिली अकादमी आ नेपालक मानक शैलीक तुलना आ संयुक्त प्रस्तुति धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।
१०४४. (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची सँ जोड़ैत अछि।
१०४५. (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।
१०४६. (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची — सुरक्षित पठन स्रोत-सार वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची धरि सीमित रहैत अछि।
१०४७. (A) शीर्षक वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१०४८. (A) वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल वर्ष २००८-०९ केर विवाहक तिथि आ पाबनि-तिहारक सूची सँ बनैत अछि।
१०४९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१०७७. (A) शीर्षक अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।
१०७८. (A) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ सँ बनैत अछि।
१०७९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।
१०८०. (A) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठक आधार पर ग्रहणीय अछि।
१०८१. (A) अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्वपूर्ण अछि।
१०८२. (A) शिक्षाक रूप अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।
१०८३. (A) उत्तरकेँ अंग्रेजी, संस्कृत आ मैथिलीमे संभाषण पाठ धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

अध्याय ४ : विदेह-सदेह १९ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड १३ : विदेह-सदेह १९ — यूनिकोड आ विकीपीडियाक अन्तर्राष्ट्रीय टीम

१. विदेह-सदेह १९ क मुख्य विषय की?

- (A) मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड तिरहुता-कैथी, गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर, अमेजन अलेक्सामे मैथिली
- (B) केवल नाटक
- (C) केवल पद्य
- (D) कोनो नहि

२. तिरहुता आ कैथी यूनिकोड फॉण्ट लेल आवेदन के देलनि?

- (A) अंशुमन पाण्डेय
- (B) गजेन्द्र ठाकुर
- (C) राजेश रंजन
- (D) कोनो नहि

३. मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन कहिया देल गेल?

- (A) ३० सितम्बर २००९
- (B) १ जनवरी २०००
- (C) १५ जनवरी २०१०
- (D) कोनो नहि

४. मैथिली विकीपीडिया लेल कोन-कोन व्यक्तिक योगदान उल्लिखित अछि?

- (A) राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी, रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिल
- (B) केवल गजेन्द्र ठाकुर
- (C) केवल भारतीय
- (D) कोनो नहि

५. आमिर ई. अहारोनी कोन देशसँ छथि?

- (A) इस्रायल (Israel)
- (B) भारत
- (C) नेपाल
- (D) अमेरिका

६. तिरहुता-कैथी यूनिकोड फॉण्ट कोन-कोन परियोजना अन्तर्गत डाउनलोड-योग्य अछि?

- (A) Google's Noto Fonts/ C-DAC
- (B) केवल माइक्रोसॉफ्ट
- (C) केवल एप्पल
- (D) कोनो नहि

७. विदेह-सदेह १९ मे कोन-कोन डिजिटल मंचपर मैथिलीक विस्तारक दस्तावेज अछि?

- (A) गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर, अमेजन अलेक्सा
- (B) केवल फेसबुक
- (C) केवल इन्स्टाग्राम
- (D) कोनो नहि

८. एहि दस्तावेजीकरणक उद्देश्य की प्रतीत होइत अछि?

- (A) मैथिली-डिजिटल विकासक प्रमाण-संग्रह आ इतिहास-लेखन
- (B) केवल मनोरंजन
- (C) निरर्थक
- (D) कोनो नहि

खण्ड ४३ : विदेह-सदेह १९ — समकालीन पद्य-विषय (विस्तार)

९. विदेह-सदेह १९ में एकटा पद्य कोन सामाजिक विषयपर केन्द्रित अछि?
- (A) बेटीक अस्तित्व आ आत्मनिर्णयक अभाव
(B) केवल प्रकृति
(C) केवल हास्य
(D) कोनो नहि
१०. एहि पद्यक शीर्षक-विषय अनुसार समाज स्त्रीकें कोन भूमिकामे दौड़बैत अछि?
- (A) बेटी सँ कनियाँ, कनियाँसँ माय (आत्मनिर्णय बिना)
(B) स्वतन्त्र निर्णयक भूमिकामे
(C) कोनो भूमिका नहि
(D) कोनो नहि
११. 'आशाक बान्ह' शीर्षक पद्यखण्डमे कोन प्रतीकात्मक वस्तुक उल्लेख अछि?
- (A) बान्ह (बाँध, आशाक प्रतीक)
(B) नदी
(C) पहाड़
(D) कोनो नहि
१२. एहि पद्य-शृंखलाक समग्र भाव की?
- (A) नारीक सामाजिक प्रतिबन्ध आ अधूरा आकांक्षा
(B) केवल हास्य
(C) केवल प्रकृति-वर्णन
(D) कोनो नहि

खण्ड ४८ : विदेह-सदेह १९ — कामिनीजीक कविता-विमर्श (विस्तार)

१३. कामिनी जीक कविता सभपर विमर्श-आलेख के लिखलनि?
- (A) मधुकांत झा
(B) गजेन्द्र ठाकुर
(C) आशीष अनचिन्हार
(D) कोनो नहि
१४. समीक्षक अनुसार मैथिली काव्य-विधामे महिला रचनाकारक संख्या कोना अछि?
- (A) पर्याप्त नहि
(B) अत्यन्त बेसी
(C) सम्पूर्ण समान
(D) कोनो नहि
१५. कामिनीजीक प्रथम कविताक विषय की?
- (A) एक बेटीक अस्तित्व-संकट
(B) किसान
(C) बेरोजगारी
(D) कोनो नहि
१६. कामिनीजीक दोसर कविता 'आशाक बान्ह' केकर चित्रांकण करैत अछि?
- (A) परदेशी पतिक प्रतीक्षा करनिहार पत्नी
(B) किसान
(C) बेरोजगार युवा
(D) कोनो नहि

१७. कामिनीजीक तेसर कविता 'मीत' कोन सामाजिक समस्यापर केन्द्रित अछि?

- (A) बेरोजगारीजन्य आलसीपन
- (B) किसानी संकट
- (C) नारी-अस्तित्व
- (D) कोनो नहि

१८. कामिनीजीक चारिम कविता 'पिता' केकर हृदयविदारक चित्र देखाबैत अछि?

- (A) मानसून-निर्भर किसानक खुनीमा
- (B) नारी
- (C) बच्चा
- (D) कोनो नहि

१९. कामिनीजीक पाँचम कविता पहिल कविताक तुलनामे कोन भिन्न नारी-चित्र देखाबैत अछि?

- (A) आत्मविश्वासी आ सम्मानित नारी
- (B) विपरीत रूपें असफल नारी
- (C) विदेशी नारी
- (D) कोनो नहि

२०. समीक्षक अनुसार कामिनीजीक कविताक विशेषता की?

- (A) वाद-विवादसँ अप्रभावित, भावनात्मक सच्चाई
- (B) केवल राजनीतिक
- (C) केवल हास्य
- (D) कोनो नहि

२१. विदेह-सदेह १९ मे एकटा नाटकक नाम की, जकर पात्र-सूची विस्तृत अछि?

- (A) जन्म दैत अछि माँ बाप करम तऽ अपनेही
- (B) गंगा ब्रिज
- (C) मचण्ड
- (D) कोनो नहि

२२. एहि नाटकमे कतेक राजाक पात्र अछि?

- (A) दू (राजा क आ राजा ख)
- (B) एक
- (C) तीन
- (D) कोनो नहि

खण्ड 2858 : विदेह-सदेह 19 — गजेन्द्र ठाकूर: संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

२३. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) सम्पादकीय
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक

२७. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादक
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549मे गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “‘विदेह’ पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2859 : विदेह-सदेह 19 — गजेन्द्र ठाकूर: संपादकीय (विस्तृत)

३३. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) संपादकीय (विस्तृत)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) सम्पादकीय
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।

३७. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550मे गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2860 : विदेह-सदेह 19 — कामिनी: पांच टा कविता

४३. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) पांच टा कविता
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समकालीन नारी स्वर

४७. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समकालीन नारी स्वर
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक कामिनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता”कें विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551मे कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समकालीन नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2861 : विदेह-सदेह 19 — मधुकान्त झा: कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी

५३. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।

५७. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मधुकान्त झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” के विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552मे मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2862 : विदेह-सदेह 19 — प्रयास प्रेमी मेथिलक: “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक)

६३. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक ““जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक ““जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक ““जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) नाटक
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक ““जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।

६७. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक) प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक) क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक प्रयास प्रेमी मेथिल, विधा गद्य, उप-विधा नाटक
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक) रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक) कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: प्रयास प्रेमी मेथिलक “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक) प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553मे प्रयास प्रेमी मेथिलक “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक) प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2863 : विदेह-सदेह 19 — ओम प्रकाश झा: सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा

७३. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गजल/कविता
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।

७७. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा”कें विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८१. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554मे ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2864 : विदेह-सदेह 19 — मुन्ना जी: लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन

८३. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) आलोचना
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) विहानि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।

८७. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) विहानि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९१. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555मे मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “विहानि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2865 : विदेह-सदेह 19 — मुन्ना जी: बीहानि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)

९३. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहानि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहानि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहानि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।

१७. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०१. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556मे मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2866 : विदेह-सदेह 19 — मुन्ना जी: प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुछ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)

१०३. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुछ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुछ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुछ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुछ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रेम बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुछ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।

१०७. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा प्रेम बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रेम बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१११. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557मे मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुच्छ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टि गद्य, प्रेम बीहनि कथा आ “प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2867 : विदेह-सदेह 19 — अब्दूर रज्जाक: बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२

११३. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।

११७. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक अब्दूर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाकक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२१. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: अब्दूर रज्जाक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558मे अब्दूर रज्जाक “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2868 : विदेह-सदेह 19 — राजीव कर्ण: बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)

१२३. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।

१२७. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राजीव कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३१. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559मे राजीव कर्णक “बीहिन कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2869 : विदेह-सदेह 19 — नीरज कर्ण: बीहिन कथा (नोर, फादस डे)

१३३. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहिन कथा (नोर, फादस डे)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।

१३७. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नीरज कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहिन कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४१. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560मे नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टि गद्य, बीहिन कथा आ “सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2870 : विदेह-सदेह 19 — राम सोगारथ यादव: बीहिन कथा- सपना सपने अछि

१४३. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहिन कथा- सपना सपने अछि
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहिन कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकें सामने रखैत।

१४७. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकें सामने रखैत।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम सोगारथ यादव, विधा गद्य, उप-विधा बीहिन कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५१. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561मे राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकें सामने रखैत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2871 : विदेह-सदेह 19 — नारायण मधुशाला: बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२

१५३. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'विदेह' आन्दोलनसँ जुड़ल नव कथा-स्वर।

१५७. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'विदेह' आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक नारायण मधुशाला, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६१. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562मे नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “‘विदेह’ आन्दोलनसं जुड़ल नव कथा-स्वर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2872 : विदेह-सदेह 19 — मलय नाथ मण्डन: बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया

१६३. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।

१६७. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक मलय नाथ मण्डन, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७१. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563मे मलय नाथ मण्डनक “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2873 : विदेह-सदेह 19 — जगदानन्द झा ‘मनु’: बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)

१७३. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।

१७७. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८१. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: जगदानन्द झा 'मनु'क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564मे जगदानन्द झा 'मनु'क “बीहिन कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2874 : विदेह-सदेह 19 — जगदानन्द झा 'मनु': प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)

१८३. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा 'मनु'क "प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) प्रेम बीहनि कथा
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा 'मनु'क "प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।

१८७. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा 'मनु'क "प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा 'मनु'क "प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा प्रेम बीहनि कथा
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा 'मनु'क "प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा 'मनु'क "प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)"कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ प्रेम बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९१. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: जगदानन्द झा 'मनु'क "प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565मे जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” प्रविष्टि गद्य, प्रेम बीहिन कथा आ “प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2875 : विदेह-सदेह 19 — उमेश मण्डल: ...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)

१९३. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) ...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) रिपोर्ताज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।

१९७. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)”कें विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०१. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566मे उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “‘सगर राति दीप जरय’ आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2876 : विदेह-सदेह 19 — उमेश मण्डल: इतिहास- सगर राति दीप जरय

२०३. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) इतिहास- सगर राति दीप जरय
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) इतिहास लेखन
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।

२०७. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास लेखन
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय”केँ विदेह-सदेह 19क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ इतिहास लेखनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२११. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567मे उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि गद्य, इतिहास लेखन आ “एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2877 : विदेह-सदेह 19 — विदेह पत्रिका: विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण

२१३. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) गद्य/चित्र
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समाचार/रिपोर्टाज
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकें चुनौती।

२१७. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकें चुनौती।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक विदेह पत्रिका, विधा गद्य/चित्र, उप-विधा समाचार/रिपोर्टाज
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण”कें विदेह-सदेह 19क गद्य/चित्र-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ समाचार/रिपोर्टाजक रूपमे गद्य/चित्र-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२१. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568: एहि खण्डक सार की अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568मे विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” प्रविष्टि गद्य/चित्र, समाचार/रिपोर्टाज आ “समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकें चुनौती।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 2878 : विदेह-सदेह 19 — राम सोगारथ यादव: गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युवा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ?, महानुभावं ज्यू !, घूसकें जूस बंद करू", भुत लागल कतेकें ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल

२२३. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युवा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ?, महानुभावं ज्यू !, घूसकें जूस बंद करू", भुत लागल कतेकें ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

- (A) गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युवा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ?, महानुभावं ज्यू !, घूसकें जूस बंद करू", भुत लागल कतेकें ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ? , महानुभावं ज्यू !, घूसकेँ जूस बंद करू”, भुत लागल कतेकेँ ? , नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) पद्य
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ? , महानुभावं ज्यू !, घूसकेँ जूस बंद करू”, भुत लागल कतेकेँ ? , नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) गीत/कविता/गजल
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ? , महानुभावं ज्यू !, घूसकेँ जूस बंद करू”, भुत लागल कतेकेँ ? , नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।

२२७. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकेँ, लोभ धकए ? , महानुभावं ज्यू !, घूसकेँ जूस बंद करू”, भुत लागल कतेकेँ ? , नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

- (A) जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ? , महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु”, भुत लागल कतेकें ? , नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यियामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककें की मुख्य सूचना दैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) लेखक राम सोगारथ यादव, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता/गजल
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ? , महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु”, भुत लागल कतेकें ? , नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यियामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ? , महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु”, भुत लागल कतेकें ? , नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यियामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल”कें विदेह-सदेह 19क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

- (A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
- (D) ई पाठ गीत/कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३१. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युर्वा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ? , महानुभार्व ज्यू !, घूसकें जूस बंद करु”, भुत लागल कतेकें ? , नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यियामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 19क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

- (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।
- (B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
- (C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
- (D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569मे राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युवा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ? , महानुभाव ज्यू !, घूसकें जूस बंद करू”, भुत लागल कतेकें ? , नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधधलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबधधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यिामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधधला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता/ गजल आ “जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय ४ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड तिरहुता-कैथी, गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर, अमेजन अलेक्सामे मैथिली — विदेह-सदेह १९ मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड तिरहुता-कैथी, गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर आ अमेजन अलेक्सामे मैथिलीक डिजिटल विकाससँ सम्बद्ध दस्तावेज थिक।
२. (A) अंशुमन पाण्डेय — तिरहुता (मिथिलाक्षर) आ कैथी यूनिकोड फॉण्ट लेल आवेदन अंशुमन पाण्डेय देने छलाह।
३. (A) ३० सितम्बर २००९ — मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ कें देल गेल, जे बादमे संशोधित भेल।
४. (A) राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी, रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिल — मैथिली विकीपीडिया लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी, रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान उल्लिखित अछि।
५. (A) इस्रायल (Israel) — आमिर ई. अहारोनी इस्रायलसँ छथि — जे मैथिली विकीपीडियाक मान्यता-प्रक्रियामे योगदान देनिहार अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व छथि।
६. (A) Google's Noto Fonts/ C-DAC — तिरहुता आ कैथी फॉण्ट Google's Noto Fonts प्रोजेक्ट आ C-DAC द्वारा डाउनलोड-योग्य अछि।
७. (A) गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर, अमेजन अलेक्सा — विदेह-सदेह १९ गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर आ अमेजन अलेक्सा सन डिजिटल मंचपर मैथिलीक विस्तारक दस्तावेज प्रस्तुत करैत अछि।
८. (A) मैथिली-डिजिटल विकासक प्रमाण-संग्रह आ इतिहास-लेखन — एहि दस्तावेजीकरणक उद्देश्य मैथिली-डिजिटल विकासक हर चरणक प्रमाण (स्क्रीनशॉट सहित) संग्रहित कऽ भविष्यक इतिहास-लेखन लेल सुरक्षित राखब प्रतीत होइत अछि।
९. (A) बेटीक अस्तित्व आ आत्मनिर्णयक अभाव — विदेह-सदेह १९ मे एकटा पद्य बेटीक अस्तित्व आ आत्मनिर्णयक अभावपर केन्द्रित अछि, जे ‘बेटीसँ कनियाँ, कनियाँसँ माय’ बनबाक सामाजिक दबावकें इंगित करैत अछि।
१०. (A) बेटी सँ कनियाँ, कनियाँसँ माय (आत्मनिर्णय बिना) — पद्य अनुसार समाज स्त्रीकें बेटीसँ कनियाँ आ कनियाँसँ मायक भूमिका धरि दौड़बैत अछि, बिना ओकर अपन इच्छा-आकांक्षाकें स्थान देने।
११. (A) बान्ह (बाँध, आशाक प्रतीक) — ‘आशाक बान्ह’ खण्डमे ‘बान्ह’ (बाँध) आशाक प्रतीक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि, जे घरबलाद्वारा हर बेर पत्नीक आँखिमे बान्हल जाइत अछि।
१२. (A) नारीक सामाजिक प्रतिबन्ध आ अधूरा आकांक्षा — एहि पद्य-शृंखलाक समग्र भाव नारीक सामाजिक प्रतिबन्ध, भूमिका-निर्धारण आ अधूरा आकांक्षाक संवेदनशील चित्रण थिक।
१३. (A) मधुकांत झा — मधुकांत झा ‘कामिनीजीक किछु कविता.... एक विमर्श’ शीर्षक आलोचनात्मक आलेख लिखलनि।
१४. (A) पर्याप्त नहि — समीक्षक मधुकांत झा अनुसार मैथिली साहित्यक काव्य-विधामे महिला रचनाकारक संख्या पर्याप्त नहि अछि, तँ कामिनीजीक सृजनशीलता बधाइक पात्र थिक।
१५. (A) एक बेटीक अस्तित्व-संकट — कामिनीजीक प्रथम कविता ‘छौंड़ीक आँखि मे’ एक बेटीक अस्तित्व-संकटक चित्रण करैत अछि, जे प्राकृतिक आ कृत्रिम सजावटक बीच अपन वास्तविक अस्तित्व नहि पाबि सकैत अछि।

१६. (A) परदेशी पतिक प्रतीक्षा करनिहार पत्नी — ‘आशाक बान्ह’ एक एहन पत्नीक चित्रांकण करैत अछि जे परदेशी पतिक वायदापर नव साड़ी-गहनाक सपना देखैत अछि।
१७. (A) बेरोजगारीजन्य आलसीपन — ‘मीत’ कविता बेरोजगारीसँ उत्पन्न आलसीपनकेँ संक्रामक रोग सदृश घर-घर पसरल बतबैत अछि।
१८. (A) मानसून-निर्भर किसानक खुनीमा — ‘पिता’ कविता मानसूनपर निर्भर किसानक संघर्ष आ खेतक फाटल दरारिक हृदयविदारक चित्रण करैत अछि।
१९. (A) आत्मविश्वासी आ सम्मानित नारी — पाँचम कविता पहिल कविता (छौंड़ीक आँखि मे) क विपरीत एक आत्मविश्वासी आ अपन बलपर सम्मान पाओल नारीक चित्र देखाबैत अछि।
२०. (A) वाद-विवादसँ अप्रभावित, भावनात्मक सच्चाई — समीक्षक अनुसार कामिनीजीक कविता कोनो वाद-विवादसँ प्रभावित तरल प्रतिक्रिया नहि, बल्कि भावनात्मक सच्चाईपर आधारित अछि।
२१. (A) जन्म दैत अछि माँ बाप करम तऽ अपनेही — विदेह-सदेह १९ मे एक नाटक ‘जन्म दैत अछि माँ बाप करम तऽ अपनेही’ क विस्तृत पात्र-सूची अछि।
२२. (A) दू (राजा क आ राजा ख) — नाटकमे दू राजाक पात्र अछि — कर्मलाल सिंह ठाकुर (राजा क) आ धर्मपाल सिंह (राजा ख)।
२३. (A) संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली — सूचकांक पंक्ति 1549मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” रूपमे देल अछि।
२४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
२५. (C) सम्पादकीय — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।
२६. (D) ‘विदेह’ पत्रिकाक सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “‘विदेह’ पत्रिकाक सम्पादक” अछि।
२७. (A) ‘विदेह’ पत्रिकाक सम्पादक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “‘विदेह’ पत्रिकाक सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।
२८. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
२९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
३०. (D) ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
३१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
३२. (B) खण्ड 2858, सूचकांक पंक्ति 1549मे गजेन्द्र ठाकुरक “संपादकीय: मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, टिवटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “‘विदेह’ पत्रिकाक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
३३. (A) संपादकीय (विस्तृत) — सूचकांक पंक्ति 1550मे गजेन्द्र ठाकुरक प्रविष्टि “संपादकीय (विस्तृत)” रूपमे देल अछि।
३४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
३५. (C) सम्पादकीय — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय” अछि।
३६. (D) समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार। — टिप्पणीक पहिल संकेत “समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।” अछि।
३७. (A) समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।” रूपमे देखाइत अछि।
३८. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
३९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
४०. (D) ई पाठ सम्पादकीयक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
४१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४२. (B) खण्ड 2859, सूचकांक पंक्ति 1550मे गजेन्द्र ठाकूरक “संपादकीय (विस्तृत)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय आ “समसामयिक मैथिली साहित्यिक परिदृश्य आ राजनीतिपर तीक्ष्ण दृष्टि। समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक पैरोकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
४३. (A) पांच टा कविता — सूचकांक पंक्ति 1551मे कामिनीक प्रविष्टि “पांच टा कविता” रूपमे देल अछि।
४४. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
४५. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।
४६. (D) समकालीन नारी स्वर — टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन नारी स्वर” अछि।
४७. (A) समकालीन नारी स्वर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन नारी स्वर” रूपमे देखाइत अछि।
४८. (B) लेखक कामिनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
४९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
५०. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
५१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
५२. (B) खण्ड 2860, सूचकांक पंक्ति 1551मे कामिनीक “पांच टा कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समकालीन नारी स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
५३. (A) कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी — सूचकांक पंक्ति 1552मे मधुकान्त झाक प्रविष्टि “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” रूपमे देल अछि।
५४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
५५. (C) समालोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समालोचना” अछि।
५६. (D) समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन। — टिप्पणीक पहिल संकेत “समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।” अछि।
५७. (A) समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।” रूपमे देखाइत अछि।
५८. (B) लेखक मधुकान्त झा, विधा गद्य, उप-विधा समालोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
५९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
६०. (D) ई पाठ समालोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
६१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
६२. (B) खण्ड 2861, सूचकांक पंक्ति 1552मे मधुकान्त झाक “कामिनीजीक कविता पर टिप्पणी” प्रविष्टि गद्य, समालोचना आ “समालोचक प्रखर दृष्टि। कविताक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक सूक्ष्म विवेचन।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
६३. (A) “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक) — सूचकांक पंक्ति 1553मे प्रयास प्रेमी मैथिलक प्रविष्टि ““जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक)” रूपमे देल अछि।
६४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
६५. (C) नाटक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक” अछि।
६६. (D) कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित। — टिप्पणीक पहिल संकेत “कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।” अछि।
६७. (A) कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।” रूपमे देखाइत अछि।
६८. (B) लेखक प्रयास प्रेमी मैथिल, विधा गद्य, उप-विधा नाटक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठकके केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७०. (D) ई पाठ नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७२. (B) खण्ड 2862, सूचकांक पंक्ति 1553मे प्रयास प्रेमी मैथिलक “जन्म देत अछि माँ बाप करम ति अपनेही” (नाटक)” प्रविष्टि गद्य, नाटक आ “कर्म आ भाग्य पर गहन सन्देश दैत दार्शनिक नाटक। सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७३. (A) सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा — सूचकांक पंक्ति 1554मे ओम प्रकाश झाक प्रविष्टि “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” रूपमे देल अछि।

७४. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७५. (C) गजल/कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल/कविता” अछि।

७६. (D) विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर। — टिप्पणीक पहिल संकेत “विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” अछि।

७७. (A) विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” रूपमे देखाइत अछि।

७८. (B) लेखक ओम प्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल/कविता — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८०. (D) ई पाठ गजल/कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८२. (B) खण्ड 2863, सूचकांक पंक्ति 1554मे ओम प्रकाश झाक “सामंत, जस जस सुरसा बदतु बढाबा” प्रविष्टि पद्य, गजल/कविता आ “विद्रोही स्वर आ सामन्ती व्यवस्था पर प्रहार। 'विदेह' आन्दोलनक सक्रिय हस्ताक्षर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८३. (A) लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन — सूचकांक पंक्ति 1555मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन” रूपमे देल अछि।

८४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८५. (C) आलोचना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना” अछि।

८६. (D) विहानि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित। — टिप्पणीक पहिल संकेत “विहानि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।” अछि।

८७. (A) विहानि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विहानि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।” रूपमे देखाइत अछि।

८८. (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९०. (D) ई पाठ आलोचनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९२. (B) खण्ड 2864, सूचकांक पंक्ति 1555मे मुन्ना जीक “लघुकथा आ विहानिकथा- तुलनात्मक विवेचन” प्रविष्टि गद्य, आलोचना आ “विहानि कथा विधा पर आधारभूत सैद्धान्तिक लेख। मैथिली आधुनिक कथा-साहित्यमे नव प्रतिमान स्थापित।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३. (A) बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया) — सूचकांक पंक्ति 1556मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” रूपमे देल अछि।
१४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१६. (D) न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।” अछि।
१७. (A) न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।” रूपमे देखाइत अछि।
१८. (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१००. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१०१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१०२. (B) खण्ड 2865, सूचकांक पंक्ति 1556मे मुन्ना जीक “बीहनि कथा (कोठा वाली, बॉस, बहिंगा, झोल, पटकनिया)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “न्यूनतम शब्दमे तीक्ष्ण मानवीय संवेदना आ सामाजिक विसंगतिक चित्रण। व्यंग्य आ करुणक अनूठा सामंजस्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१०३. (A) प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुछ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख) — सूचकांक पंक्ति 1557मे मुन्ना जीक प्रविष्टि “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुछ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” रूपमे देल अछि।
१०४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१०५. (C) प्रेम बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रेम बीहनि कथा” अछि।
१०६. (D) प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।” अछि।
१०७. (A) प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।” रूपमे देखाइत अछि।
१०८. (B) लेखक मुन्ना जी, विधा गद्य, उप-विधा प्रेम बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।
१०९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
११०. (D) ई पाठ प्रेम बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।
१११. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
११२. (B) खण्ड 2866, सूचकांक पंक्ति 1557मे मुन्ना जीक “प्रेम बीहनि कथा (असरा, संगबे, छुछ दुलार, दिहलगडि, उफाँटि, जुडबन्हन, निधेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खाँइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार.....!, आशीर्वाद, आँचर.....!, उठल्लू, बाट- घाट, द्वन्द्व, देह, मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढे एकैसम सदी, भूख)” प्रविष्टि गद्य, प्रेम बीहनि कथा आ “प्रेमक बहुआयामी स्वरूपक अत्याधुनिक प्रस्तुति। भाषा शिल्प आ विषयक विविधता अद्भुत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
११३. (A) बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२ — सूचकांक पंक्ति 1558मे अब्दूर रज्जाकक प्रविष्टि “बिहैन कथा-१, बिहैन कथा-२” रूपमे देल अछि।
११४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
११५. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

११६. (D) साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार। — टिप्पणीक पहिल संकेत “साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।” अछि।
११७. (A) साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।” रूपमे देखाइत अछि।
११८. (B) लेखक अब्दूर रज्जाक, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
११९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१२०. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१२१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१२२. (B) खण्ड 2867, सूचकांक पंक्ति 1558मे अब्दूर रज्जाकक “बीहनि कथा-१, बीहनि कथा-२” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “साम्प्रदायिक सौहार्द्र आ ग्रामीण जीवन पर आधारित प्रयोगशील कथाकार।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१२३. (A) बीहनि कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन) — सूचकांक पंक्ति 1559मे राजीव कर्णक प्रविष्टि “बीहनि कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” रूपमे देल अछि।
१२४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१२५. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१२६. (D) नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” अछि।
१२७. (A) नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
१२८. (B) लेखक राजीव कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१२९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१३०. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१३१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१३२. (B) खण्ड 2868, सूचकांक पंक्ति 1559मे राजीव कर्णक “बीहनि कथा (पौस, सिनेह, नेत, देखौवल न्याय, पैघ लोक, खुशी, उल्टा पुल्टा, फोटो कॉपी, जमाना, चक्षु भोजन)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “नव पीढ़ीक कथाकार। सामाजिक दम्भ आ राजनीतिक आडम्बर पर तीक्ष्ण व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१३३. (A) बीहनि कथा (नोर, फादस डे) — सूचकांक पंक्ति 1560मे नीरज कर्णक प्रविष्टि “बीहनि कथा (नोर, फादस डे)” रूपमे देल अछि।
१३४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१३५. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१३६. (D) सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।” अछि।
१३७. (A) सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।” रूपमे देखाइत अछि।
१३८. (B) लेखक नीरज कर्ण, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१३९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१४०. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

१४१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१४२. (B) खण्ड 2869, सूचकांक पंक्ति 1560मे नीरज कर्णक “बीहिन कथा (नोर, फादस डे)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन। वात्सल्य रसक प्रबल प्रयोग।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१४३. (A) बीहिन कथा- सपना सपने अछि — सूचकांक पंक्ति 1561मे राम सोगारथ यादवक प्रविष्टि “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” रूपमे देल अछि।
१४४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१४५. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१४६. (D) यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकें सामने रखैत। — टिप्पणीक पहिल संकेत “यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकें सामने रखैत।” अछि।
१४७. (A) यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकें सामने रखैत। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकें सामने रखैत।” रूपमे देखाइत अछि।
१४८. (B) लेखक राम सोगारथ यादव, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१४९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१५०. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१५१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१५२. (B) खण्ड 2870, सूचकांक पंक्ति 1561मे राम सोगारथ यादवक “बीहिन कथा- सपना सपने अछि” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “यथार्थवादी कथा, जीवनक कठोर सत्यकें सामने रखैत।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१५३. (A) बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२ — सूचकांक पंक्ति 1562मे नारायण मधुशालाक प्रविष्टि “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” रूपमे देल अछि।
१५४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१५५. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१५६. (D) 'विदेह' आन्दोलनसँ जुड़ल नव कथा-स्वर। — टिप्पणीक पहिल संकेत “'विदेह' आन्दोलनसँ जुड़ल नव कथा-स्वर।” अछि।
१५७. (A) 'विदेह' आन्दोलनसँ जुड़ल नव कथा-स्वर। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'विदेह' आन्दोलनसँ जुड़ल नव कथा-स्वर।” रूपमे देखाइत अछि।
१५८. (B) लेखक नारायण मधुशाला, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१५९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१६०. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१६१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१६२. (B) खण्ड 2871, सूचकांक पंक्ति 1562मे नारायण मधुशालाक “बीहिन कथा-१, बीहिन कथा-२” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “'विदेह' आन्दोलनसँ जुड़ल नव कथा-स्वर।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१६३. (A) बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया — सूचकांक पंक्ति 1563मे मलय नाथ मण्डनक प्रविष्टि “बीहिन कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” रूपमे देल अछि।
१६४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१६५. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।

१६६. (D) न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।” अछि।
१६७. (A) न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।” रूपमे देखाइत अछि।
१६८. (B) लेखक मलय नाथ मण्डन, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१६९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१७०. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१७१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१७२. (B) खण्ड 2872, सूचकांक पंक्ति 1563मे मलय नाथ मण्डनक “बीहनि कथा- समीकरण, बेकाजक का'ज, कोदिया” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “न्यूनतमवादी लेखन शैली। जीवनक बेमतलबपन पर दार्शनिक व्यंग्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१७३. (A) बीहनि कथा (बेटाक बाप, रभसल) — सूचकांक पंक्ति 1564मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “बीहनि कथा (बेटाक बाप, रभसल)” रूपमे देल अछि।
१७४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१७५. (C) बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बीहनि कथा” अछि।
१७६. (D) सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण। — टिप्पणीक पहिल संकेत “सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।” अछि।
१७७. (A) सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।” रूपमे देखाइत अछि।
१७८. (B) लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१७९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१८०. (D) ई पाठ बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१८१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।
१८२. (B) खण्ड 2873, सूचकांक पंक्ति 1564मे जगदानन्द झा ‘मनु’क “बीहनि कथा (बेटाक बाप, रभसल)” प्रविष्टि गद्य, बीहनि कथा आ “सशक्त व्यंग्यकार। पारिवारिक आ सामाजिक विडम्बनाक तीक्ष्ण चित्रण।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।
१८३. (A) प्रेम बीहनि कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा) — सूचकांक पंक्ति 1565मे जगदानन्द झा ‘मनु’क प्रविष्टि “प्रेम बीहनि कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मूँह झाँसा)” रूपमे देल अछि।
१८४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।
१८५. (C) प्रेम बीहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रेम बीहनि कथा” अछि।
१८६. (D) प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति। — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।” अछि।
१८७. (A) प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।” रूपमे देखाइत अछि।
१८८. (B) लेखक जगदानन्द झा ‘मनु’, विधा गद्य, उप-विधा प्रेम बीहनि कथा — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।
१८९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।
१९०. (D) ई पाठ प्रेम बीहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।
१९१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९२. (B) खण्ड 2874, सूचकांक पंक्ति 1565मे जगदानन्द झा 'मनु'क “प्रेम बीहिन कथा (एसगर, प्रेम, सोहागिन, बेगरता, अगिला जन्म, मुँह झाँसा)” प्रविष्टि गद्य, प्रेम बीहनि कथा आ “प्रेमक सूक्ष्म अभिव्यक्ति।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९३. (A) ...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला) — सूचकांक पंक्ति 1566मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” रूपमे देल अछि।

१९४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९५. (C) रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “रिपोर्ताज” अछि।

१९६. (D) 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त। — टिप्पणीक पहिल संकेत “'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।” अछि।

१९७. (A) 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।” रूपमे देखाइत अछि।

१९८. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२००. (D) ई पाठ रिपोर्ताजक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०२. (B) खण्ड 2875, सूचकांक पंक्ति 1566मे उमेश मण्डलक “...86म दीप सरग राति जरल, ६५ म सगर राति दीप जरय, ... 80म सगर राति दीप जरय, ७९म सगर राति दीप जरय (रिपोर्ताज श्रृंखला)” प्रविष्टि गद्य, रिपोर्ताज आ “'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक एतिहासिक धरोहर। विस्तृत इतिवृत्त।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०३. (A) इतिहास- सगर राति दीप जरय — सूचकांक पंक्ति 1567मे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “इतिहास- सगर राति दीप जरय” रूपमे देल अछि।

२०४. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०५. (C) इतिहास लेखन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “इतिहास लेखन” अछि।

२०६. (D) एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज। — टिप्पणीक पहिल संकेत “एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।” अछि।

२०७. (A) एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।” रूपमे देखाइत अछि।

२०८. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा गद्य, उप-विधा इतिहास लेखन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२०९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२१०. (D) ई पाठ इतिहास लेखनक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२११. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१२. (B) खण्ड 2876, सूचकांक पंक्ति 1567मे उमेश मण्डलक “इतिहास- सगर राति दीप जरय” प्रविष्टि गद्य, इतिहास लेखन आ “एकटा साहित्यिक आन्दोलनक सम्पूर्ण इतिहास। मैथिली साहित्यक लेल अमूल्य दस्तावेज।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१३. (A) विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण — सूचकांक पंक्ति 1568मे विदेह पत्रिकाक प्रविष्टि “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” रूपमे देल अछि।

२१४. (B) गद्य/चित्र — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य/चित्र” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१५. (C) समाचार/रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “समाचार/रिपोर्ताज” अछि।

२१६. (D) समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकें चुनौती। — टिप्पणीक पहिल संकेत “समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकें चुनौती।” अछि।

२१७. (A) समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकें चुनौती। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकें चुनौती।” रूपमे देखाइत अछि।

२१८. (B) लेखक विदेह पत्रिका, विधा गद्य/चित्र, उप-विधा समाचार/रिपोर्टाज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

२१९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२०. (D) ई पाठ समाचार/रिपोर्टाजक रूपमे गद्य/चित्र-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२२१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२२२. (B) खण्ड 2877, सूचकांक पंक्ति 1568मे विदेह पत्रिकाक “विदेह सम्मान समारोह (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)- सचित्र विवरण” प्रविष्टि गद्य/चित्र, समाचार/रिपोर्टाज आ “समानान्तर साहित्यिक मान्यता आ सम्मानक प्रतिरोधी स्वरूप। साहित्य अकादेमीक एकाधिकारकें चुनौती।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२३. (A) गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युवा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ?, महानुभाव ज्यू !, घूसकें जूस बंद करू”, भुत लागल कतेकें ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यियामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल — सूचकांक पंक्ति 1569मे राम सोगारथ यादवक प्रविष्टि “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युवा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ?, महानुभाव ज्यू !, घूसकें जूस बंद करू”, भुत लागल कतेकें ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यियामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

२२४. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकें “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२२५. (C) गीत/कविता/गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत/कविता/गजल” अछि।

२२६. (D) जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य। — टिप्पणीक पहिल संकेत “जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।” अछि।

२२७. (A) जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य। — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।” रूपमे देखाइत अछि।

२२८. (B) लेखक राम सोगारथ यादव, विधा पद्य, उप-विधा गीत/कविता/गजल — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकें एक साथ रखैत अछि।

२२९. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककें केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३०. (D) ई पाठ गीत/कविता/गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकें स्पष्ट करैत अछि।

२३१. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकें एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३२. (B) खण्ड 2878, सूचकांक पंक्ति 1569मे राम सोगारथ यादवक “गधरब, देइ प्रधत स्नेह, समुहदर पार, हमर धबनती, हे युवा उठू, रोकू दहेजकें, लोभ धकए ?, महानुभाव ज्यू !, घूसकें जूस बंद करू”, भुत लागल कतेकें ?, नोर धबरान भेल, प्रलय अहीं छी, नर्व धमधथलाक धनमार् करैत चलू, करुवाइल स्वाद, भधरया, प्रवास, दहेजक चपेटा, हेरा गेलै, बंधदमे, नकामी धजनगी, प्रवासीके होली सपनामे, कलंकी प्रथा, धबचधलत मन, बेदना, पूज्य आत्मा, फागुन मधहना, आत्माक अर्वाज, समय संग हम, भाग्य धबदिमे, यियामे धजनगी, बटोधहया, सरकार जी, कसैया मोथा, ई धकनकर, अछोप धकए कहै छी, धमधथला अटल अधछ, भार्वना, महाराज ! एना धकए? भार्व (रचना), बिाइ अधछ धप्रये- (भार्व रचना), धकछु गजल, धकछु आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, गीत/कविता/गजल आ “जनवादी चेतना आ सामाजिक सक्रियतासँ युक्त कवि। दहेज, भ्रष्टाचार, पलायन जकाँ विषय पर स्पष्ट वक्तव्य।” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 19क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकें व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकें प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।